BHARATIYA VIDYA BHAVAN LIBRARY
S 191

GULAB KUMARI LIBR
No. 3.47
CALCUTTA
19 2
P. C. NAHAR

याज्ञवल्क्यस्मृतितात्पर्य्यतरणि

जिसमें

पाञ्चालदेशीय यूनिवर्सिटी पाठशालाके विद्या-
र्थियों के प्राचीन स्मार्त धर्म और दायभागादि
तरणके लिये अपने मातुल काशीशालीय धर्म-
शास्त्राध्यापक स्वर्गवासी श्रीगुलज़ार शास्त्री
जी महाराज के भाषानुवाद मानव-
धर्म्मसार की रीति पर

उक्तदेशीय महाविद्यानिकर के मुख्य संस्कृताध्यापक
श्रीपंडित गुरुप्रसादजी ने सरल हिन्दी भाषा में
अति प्रयत्न से रचना किया

SA9Y53
YAJ/GUR

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर के यन्त्रालय में छापागया
अक्टूबर सन् १८८८ ई० ॥

तीसरीवार २०००

पराशरव्यासशंखलिखितादक्षगौतमौ ॥ शातातपोव
शिष्ठश्चधर्म्मशास्त्रप्रयोजकाः ५ देशकालउपायेनद्रव्यंश्रद्धा
समन्वितम् ॥ पात्रेप्रदीयतेयत्तन्सकलंधर्म्मलक्षणम् ६ श्रुति
स्मृतिःसदाचारःस्वस्यचप्रियमात्मनः ॥ सम्यक्संकल्पजः
कामोधर्म्ममूलमिदंस्मृतम् ७ इज्याचारदमाहिंसादानंस्वा
ध्यायकर्म्मच ॥ अयन्तुपरमोधर्म्मोयद्योगेनात्मदर्शनम् ८
चत्वारोवेदधर्म्मज्ञाःपर्षत्त्रैविद्यमेववा ॥ सद्ब्रूतेयंसधर्म्मःस्या
देकोवाध्यात्मवित्तमः ९ ब्रह्मक्षत्रियविट्शूद्रावर्णास्त्वाद्यास्त्र
योद्विजाः ॥ निषेकादिश्मशानान्तास्तेषांवैमन्त्रतःक्रिया १०
गर्भाधानमृतौपुंसःसवनंस्पन्दनात्पुरा ॥ षष्ठेऽष्टमेवासीमन्तः
प्रसवेजातकर्म्मच ११ ॥

पराशर१३ व्यास१४शंखलिखित१५ दक्ष१६ गौतम१७शातातप
१८ औरवशिष्ठ१९ इतनेधर्मशास्त्रके सुख्यबनानेवालेहैं५पवित्रदेश
और अच्छेकालमें जो वस्तु सत्पात्रको श्रद्धापूर्वक दीजातीहै सोऔर
ऐसेऔर सबकाम धर्म्मकेलक्षणहैं६ श्रुतिअर्थात् वेदस्मृतिधर्म्मशास्त्र
भलेलोग जो कामकरतेआयेहों अपनीआत्माको जोप्रियहै और श्रुति
संकल्पसेउत्पन्नजोकामनाहैये सबधर्म्मकेमूलहैं७ औरयज्ञ,सदाचार
इंद्रियोंकादमन,जीवबन्धनकरना,दान और वेदआदिकापढ़ना, इन
सबोंसे बड़ाधर्म्मयहहै कियोगद्वारा आत्माकादर्शनकरना८वेदऔर
धर्म्मकेजाननेवालेचारमनुष्य,यातीनवेदजाननेवालेतीनमनुष्यकी
पर्षत्होतीहै,वह अथवा अध्यात्मविद्याका वेदान्त योगआदि जानने
वालाएकही मनुष्य जो कहे सोधर्म्मकहलाताहै९(इत्युपोद्घातप०)
ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्यऔर शूद्र येचारवर्णहैं इनमेंपहिले तीनकोद्विज
कहतेहैंउनकागर्भाधानसेलेअंतक्रियातकसब संस्कारमंत्रसेहोताहै
१०रजोदर्शन कालमें गर्भाधान१गर्भकेडोलनेसेपहिलेही पुंसवन २
छठे वा आठवेंमहीनेमें सीमन्त३ प्रसवहोनेपर जातकर्म्म ४।११॥

अहन्येकादशेनामचतुर्थेमासिनिष्क्रमः॥ षष्ठेऽन्नप्राशनं मासिचूडाकार्य्यायथाकुलं १२ एवमेनःशमंयातिबीजगर्भस मुद्भवं॥तूष्णीमेताःक्रियाःस्त्रीणांविवाहस्तुसमन्त्रकः १३ गर्भा ष्टमेऽष्टमेवाब्देब्राह्मणस्योपनायनम्॥ राज्ञामेकादशेसैकेवि शामेकेयथाकुलं १४ उपनीयगुरुःशिष्यंमहाव्याहृतिपूर्वकम् वेदमध्यापयदेनशौचाचारांश्चशिक्षयेत् १५ दिवासन्ध्यासुक र्णस्थब्रह्मसूत्रउदंमुखः॥ कुर्य्यान्मूत्रपुरीषेतुरात्रौचेद्दक्षिणामु खः १६ गृहीतशिश्नश्चोत्थायमृद्भिरभ्युद्धृतैर्जलैः॥ गंधले पक्षयकरंकुर्य्याच्छौचमतंद्रितः १७ अन्तर्जानुशुचौदेशेउप विष्टउदंमुखः॥प्राग्ब्राह्मेणतीर्थेनद्विजोनित्यमुपस्पृशेत् १८

ग्यारहवेंदिन नामकरण५चौथेमहीने निष्क्रमण६ छठे महीने अन्नप्राशन७और अपने कुलकीरीतिके अनुसार तीसरे या पांचवें वर्ष चूड़ाकर्म्मकरे ८। १२ इसप्रकार बीज और गर्भकीअपवित्रता दूरहोतीहै,येसबकर्म्म स्त्रियोंके अमन्त्रकहोतेहैं केवल उनकेव्याहमें मन्त्रपढ़ेजातेहैं १३ गर्भसे या जन्मसे आठवेंवर्ष ब्राह्मणका,क्षत्रियोंका ग्यारहें और वैश्योंका बारहें या जब उनकेकुलमें होताहो तब यज्ञो-पवीतकरनाचाहिये १४ शिष्यका यज्ञोपवीतकरके गुरू उसकोमहा-व्याहृतिसहित वेदपढ़ावे,शौच(द्रव्यशुद्धि)और सदाचार भी सि-खावे १५ दिनमेंऔर सांझ सबेरेजनेऊ कानपरचढ़ाके उत्तर मुंह हो मूत्र और पुरीषकरे और रातको दक्षिणमुंहहोकेकरे १६ (यदि अपनेपासजलनहो तो)मूत्रद्वारा हाथसेपकड़कर जलाशयतकजावे वहांसे जल निकाल और मिट्टीलेके सावधानीसे इतनाधोवे कि जिसमें मलकीगन्ध और चिकनाई चलीजावे १७ प्रतिदिन द्विज जानुओंकेबीच हाथरखके पवित्रस्थलमें उत्तरमुंह या पूर्वमुंह बैठे और ब्रह्मतीर्थ से आचमनकरे १८ ॥

मधुमांसांजनोच्छिष्टशुक्तस्त्रीप्राणिहिंसनम् ॥ भास्करालोकनाश्लीलपरिवादांश्चवर्जयेत् ३३ सगुरुर्यःक्रियाःकृत्वा वेदमस्मैप्रयच्छति॥उपनीय ददद्वेदमाचार्य्यःसउदाहृतः३४ एकदेशमुपाध्यायऋत्विग्यज्ञकृदुच्यते॥ एतेमान्यायथापूर्व्वमेभ्योमातागरीयसी ३५ प्रतिवेदंब्रह्मचर्य्यंद्वादशाब्दानिपञ्चवा ॥ ग्रहणांतिकमित्येकेकेशांतश्चैवषोडशे ३६ आषोडशादाद्वाविंशाच्चतुर्विंशाच्चवत्सरात् ॥ ब्रह्मक्षत्रविशांकाल औपनायनिकःपरः ३७ अतऊर्ध्वंपतंत्येतेसर्वधर्म्मबहिष्कृताः ॥ सावित्रीपतिताव्रात्याव्रात्यस्तोमादृतेक्रतोः ३८ मातुर्यदग्रेजायंतेद्वितीयंमौंजिबंधनात् ॥ ब्राह्मणक्षत्रियविशस्तस्मादेतेद्विजाःस्मृताः ३९ ॥

ब्रह्मचारीमधुमांसनखावेअंजन औरतेलआदिनलगावे (गुरूको छोड़) किसीकाजूठा न खाय,कठोरवचन, स्त्रीसंग, जीवहिंसा,सांझ सवेरेसूर्य्यकादेखना,लज्जाकेवचनबोलना,दूसरेकीनिंदाकरनी,इत्यादिबातोंकोछोड़दे ३३ जोब्रह्मचारीको(गर्भाधानसेलेकेउपनयन पर्यंत)क्रियायथा विधिकरकेवेदपढ़तारहे उसकोगुरूऔरजोकेवल यज्ञोपवीतकरकेवेदउसेपढ़ाताहैउसको आचार्य्यकहतेहैं ३४जोथोड़ासावेदपढ़ावेवहउपाध्यायऔरजोयज्ञकरावेवहऋत्विक्कहलाता है इनमेंजोजोपहलेपढ़ेहैंवे पिछलेवालों से अधिकमान्यहैं औरइनसबोंसेमाताश्रेष्ठतमहै ३५ हरएकवेदोंकेपढ़नेमें बारहवर्ष वापांचवर्ष ब्रह्मचर्य्यकरनाचाहिये, कोईकहतेहैंपाठसमाप्तपर्यंतब्रह्मचर्य्यकरके शांतकर्मब्राह्मणकासोलहवर्षकरनाचाहिये ३६ सोलह, बाईस और चौबीसवर्षतकक्रमसेब्राह्मण,क्षत्रिय औरवैश्योंकेउपनयनकीपरम अवधिहै ३७इससेउपरांतयेपतितहोकरसबधर्म्मोंसेरहितहोतेहैंसावित्रीपतित ,संस्कारहीनभीयदिव्रात्यस्तोमयज्ञनकरेंतोपतितगिने जातेहैं ३८ ब्राह्मण,क्षत्रिय औरवैश्य इसहेतुसे द्विजकहेजातेहैं कि उनकाएकजन्ममातासेऔरदूसरामौंजीबंधनसेगिनाजाताहै ३९॥

यज्ञानांतपसांचैवशुभानांचैवकर्मणाम् ॥ वेदएवद्विजातीनांनिश्रेयसकरःपरः ४० मधुनापयसाचैवसदेवांस्तर्पयेद्द्विजः॥पितॄन्मधुघृताभ्यांचऋचोधीतचयोन्वहम् ४१ यजूंषिशक्तितोधीतेयोन्वहंसघृतामृतैः॥प्रीणातिदेवनाज्येनमधुनाचपितॄंस्तथा४२सतुसोमघृतैर्देवांस्तर्पयेद्योन्वहंपठेत्।सामानितृप्तिंकुर्य्याच्चपितॄणांमधुसर्पिषा ४३ मेदसातर्पयेद्देवानथर्वांगिरसःपठन् ॥ पितॄश्चमधुसर्पिर्भ्यामन्वहंशक्तितोद्विजः ४४ वाकोवाक्यंपुराणंचनाराशंसीश्चगाथिकाः॥ इतिहासांस्तथाविद्याःशक्त्याधीतेहियोन्वहम् ४५ मांसक्षीरौदनमधुतर्पणंसदिवौकसाम् ॥ करोतितृप्तिंकुर्य्याच्चपितॄणांमधुसर्पिषा४६तेतृप्तास्तर्पयंत्येनंसर्वकामफलैःशुभैः ॥ यंयंक्रतुमधीतेसोतस्यतस्याप्नुयात्फलम् ४७ ॥

यज्ञ,तपऔर सवशुभकर्मोंसेद्विजोंकावड़ाउपकारकर्त्तवेदहीहै ४० जोद्विजप्रतिदिनऋग्वेदपढ़ै वहमधुऔर दूधसेदेवताओंकाऔरमधुऔरघीसेपितरोंकातर्पणकरे ४१ प्रतिदिनयजुर्वेदपढ़नेवालेघी,औरजलसेदेवताओंका औरघीऔरमधुसे पितरोंकातर्पणकरे ४२सामवेदपाठी सोमलताके रस औरघीसे देवताओंकाऔरमधु औरघीसे पितरोंकातर्पणकरें ४३ अथर्वांगिरा वेदपढ़नेवाले मेदसेदेवताओंका और मधुऔरघृतसे पितरोंका अपनीशक्तिके अनुसार प्रतिदिन तर्पणकरें ४४ जोवाकोवाक्य (वेदोंके प्रश्नोत्तर) पुराणनाराशंसी (रुद्रदेवतमश्च)गाथिका(इन्द्रयज्ञप्रभृतिके)इतिहासऔर (वारुणी प्रभृति) विद्या अपनीशक्तिअनुसारनितनितपढ़तेहैं ४५ वेमांस दूध भात औरमधुसेदेवताओंकातर्पणकरें औरपितरोंकामधुऔरघीसे ४६येदेवऔरपितरतृप्तहोकेतर्पणकरनेवालेकीसबकामनापूरीकरते हैंऔरजिसजिसयज्ञकोजोपढ़ताहै वहउसउसकाफलपाताहै ४७ ॥

त्रिर्वित्तपूर्णपृथिवीदानस्यफलमश्नुते ॥ तपसायत्पर
स्येहनित्यंस्वाध्यायवान्द्विजः ४८ नैष्ठिकोब्रह्मचारीतुवसे
दाचार्य्यसन्निधौ ॥ तदभावेस्यतनयेपत्न्यांवैश्वानरेपिवा
४९ अनेनविधिनादेहंसाधयन्विजितेन्द्रियः ब्रह्मलोकमवा
प्नोतिनचेहाजायतेपुनः ५० गुरवेतुवरंदत्वास्नायीततदनुज्ञ
या ॥ वेदव्रतानिवापारंनीत्वाह्युभयमेववा ५१ अविप्लुत
ब्रह्मचर्योलक्षण्यांस्त्रियमुद्वहेत ॥ अनन्यपूर्विकांकांतामसं
पिण्डांयवीयसीं ५२ अरोगिणींभ्रातृमतीमसमानार्षगोत्र
जाम् ॥ पंचमात्सप्तमादूर्ध्वंमातृतःपितृतस्तथा ५३
दशपुरुषविख्याताच्छ्रोत्रियाणांमहाकुलात् ॥ स्फीतादपि
नसंचारिरोगदोषसमन्वितात् ५४ ॥

जोद्विज प्रतिदिन वेदपढ़ताहै वहधनसेभरीहुई सारीपृथ्वी के तीनवार दान और बड़ेउच्चतपका फलपाताहै ४८ नैष्ठिकब्रह्मचारी आचार्यकेपासरहे, आचार्य नहो तो उसके पुत्रकेपास वह न होतो आचार्यकी पत्नी अथवा अग्निहोत्रकी अग्निके निकटरहे ४९ इस विधिसेदेहकोसाधे तोजितेन्द्रियहोके ब्रह्मलोकको प्राप्तहोताहै और इससंसारमें जन्मकभी नहींपाताहै ५० गुरूको दक्षिणादेकर उसकी आज्ञासे अथवा वेद समाप्तकरके वा व्रतसे पारहोके या दोनोंको समाप्तकरके (समावर्तन) स्नानकरे ५१ ब्रह्मचर्यसे न डिगकर लक्षणयुक्त क्वारी असपिंड औरअपनेसेछोटीअवस्थावाली स्त्रीको व्याहे ५२ (असाध्य) रोगसेहीनहो, जिसके भाईहों, अपने गोत्र और प्रवरकी न हो और जो मातृकुलमें पांचपीढ़ी से ऊपरहो और पितृकुल में सातपीढ़ी से ऊपरहो उसे व्याहे ५३ दशपुरुष से प्रसिद्ध वेदपाठियों के कुलसे कन्याले परन्तु कुष्ठआदिसंचारी रोगयुक्त चाहेजैसे उत्तम कुल हो उस से कन्या न लेवे ५४ ॥

एतैरेवगुणैर्युक्तःसवर्णःश्रोत्रियोवरः ॥ यत्नात्परीक्षितः पुंस्त्वेयुवाधीमान्जनप्रियः ५५ यदुच्यतेद्विजातीनांशूद्रा द्दारोपसंग्रहः॥नतन्ममतंयस्मात्तत्रात्माजायतेस्वयम् ५६ तिस्रोवर्णानुपूर्व्येणद्वेतथैकायथाक्रमम् ॥ ब्राह्मणक्षत्रिय विशांभार्यास्याशूद्रजन्मनः ५७ ब्राह्मोविवाहआहूयदी यतेशक्त्यलंकृता ॥ तज्जःपुनात्युभयतःपुरुषानेकविंशति म् ५८ यज्ञस्थऋत्विजेदेवआदायार्षस्तुगोद्वयम् ॥ चतुर्दश प्रथमजःपुनात्युत्तरजश्चषट् ५९ ॥

इन्हीं पूर्वोक्त गुणों से युक्त, सवर्ण, वेदपाठी, यत्न से जिसका पुंस्त्व परीक्षितहो,युवा,बुद्धिमान्, और जो लोगोंको प्रियहो ऐसा वर होनाचाहिये ५५ शूद्रसे कन्या लेने की अनुमति द्विजोंको जो कहीहै यह मेरामत नहीं क्योंकि दारामें आत्मास्वयं उत्पन्न होता है ५६ वर्णकी अनुलोमतासे ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्यके क्रमसे* तीन दो और एक स्त्रियां होतीहैं, शूद्रकी केवल अपनीही वर्णकी स्त्री होतीहै ५७ वरकोबुलाकर अपनीशक्ति के अनुसार आभूषण सहित जो कन्यादान है उसे ब्राह्मविवाह कहते हैं ऐसे व्याह से जो पुत्र उत्पन्न होता है वह अपनी ऊपरकी दश और नीचेकी दश और एक अपनी ऐसी इक्कीस पीढ़ियोंको पवित्रकरताहै ५८ यज्ञ करानेवाले ऋत्विज्को कन्यादे तो दैवविवाह, और दोगौ शुल्क लेके कन्यादे तो आर्षविवाह होता है इन में पहिले से उत्पन्नपुत्र चौदह और दूसरेसे उत्पन्न छः छः पीढ़ियों को पवित्र करताहै ५९ ॥

* अर्थात् ब्राह्मण अपने वर्ण की क्षत्रिय की और वैश्यकी कन्या लेसक्ता है इसी प्रकार क्षत्रिय अपने वर्ण की और वैश्यकी लेसक्ता है वैश्य और शूद्र केवल अपने वर्णकीही लेसक्ते हैं ॥

इत्युक्ताचरतांधर्मंसहयादीयतेर्थिने ॥ सकायःपावयेत
ज्ज:पट्पट्वंश्यान्सहात्मना ६० आसुरोद्रविणादानाद्गां
धर्वःसमयान्मिथाः ॥ राक्षसोयुद्धहरणात्पैशाचःकन्यकाछ
लात् ६१ पाणिर्ग्राह्यःसवर्णासुगृह्णीयात्क्षत्रियाशरम् ॥
वैश्याप्रतोदमादद्याद्वेदनेत्वग्रजन्मनः ६२ पितापितामहो
भ्रातासकुल्योजननीतथा ॥ कन्याप्रदःपूर्वनाशेप्रकृतिस्थः
परःपरः ६३ अप्रयच्छन्समाप्नोतिभ्रूणहत्यामृतावृतौ ॥
गम्यन्त्वभावेदातॄणांकन्याकुर्य्यात्स्वयंवरम् ६४ सकृत्प्र
दीयतेकन्याहरंस्ताञ्चोरदण्डभाक् ॥ दत्तामपिहरेत्पूर्वा
ज्यायांश्चेद्वरआवजेत् ६५ ॥

तुमदोनोंइकट्ठेहोकर धर्म्मआचरणकरो ऐसाकहके जोमांगने वालेको कन्यादीजातीहै वहकायविवाह कहलाताहै इससे उत्पन्न सुत अपने सहित छः छः पीढ़ियोंको पवित्र करता है ६० बहुत धनलेकेकन्यादे तो आसुरविवाह होताहै और कन्यावर आपसमें सलाहकरके व्याहकरलें तो गान्धर्वविवाह होता है युद्धमें हरीहुई कन्यासे राक्षसविवाह और छलसे जो हो वह पैशाचविवाह कहलाताहै ६१ अपनीजातिकी कन्याकेसाथ व्याहहो तो पाणिग्रहण करे अर्थात् हाथपकड़े, ब्राह्मण यदिक्षत्रियाकोव्याहे तोक्षत्रियाबाण पकड़े, और वैश्याप्रतोदअर्थात् (पैना) औररस्सीपकड़े ६२ बापदादा भाईअपने कुलकाकोई पुरुष और माता इनमें पहलेकेन होनेपर दूसरा दूसरा यदि सावधानहो तो कन्यादानका अधिकारी है ६३ जो ये कन्याका विवाह न करदेंतोउसकेहरएकऋतुकालमें इन्हेंभ्रूण (गर्भ) हत्याकापापलगताहै यदिकन्यादानका अधिकारी कोईनहो तोयोग्यवरकोकन्याअपनेआपवरणकरे६४कन्याएकहीबारदीजाती हैजोउसकाहरणकरेतोचोरकेसमानदण्डकाभागीहोताहै औरयदि पहलेवरसेअच्छावरमिलेतो दीहुईकन्याकाभीहरणकरले ६५॥

अनाख्यायददद्दोषंदण्डउत्तमसाहसम् ॥ अनुष्ठान्तुत्यजन्दण्ड्योदूषयंस्तुमृषाशतम् ६६ अक्षताचक्षताचैवपुनर्भूःसंस्कृतापुनः ॥ स्वैरिणीयापतिंहित्वासवर्णंकामतःश्रयेत् ६७ अपुत्रांगुर्वनुज्ञातोदेवरःपुत्रकाम्यया ॥ सपिंडोवासगोत्रोवाघृताभ्यक्तऋतावियात् ६८ आगर्भसंभवांगच्छेत्पतितस्त्वन्यथाभवेत् ॥ अनेनविधिनाजातःक्षेत्रजोस्यभवेत्सुतः६९ हृताधिकारांमलिनांपिंडमात्रोपजीविनीम् ॥ परिभूतामधःशय्यांवासयेद्व्यभिचारिणीम् ७० सोमःशौचंददावासांगन्धर्वश्चशुभांगिरम् ॥ पावकःसर्वमेध्यत्वंमेध्यावैयोषितोस्मृताः ७१ ॥

कन्याकादोष विनकहेही जो कन्यादान करदेतेहैं उनको उत्तम साहसकादण्डदेनाचाहिये और निर्दोषकन्याको त्यागकरनेवाले पतिकोभीयही दण्डदेनाचाहिये यदिकोई कूटदोपलगावे तोउसे सौपणदण्ड देनाचाहिये ६६ कन्याचाहे अक्षताचाहे क्षताहो दूसरीवारविवाहहोनेसे पुनर्भू कहलातीहै और जो पतिकोछोड़ किसी अपनेदूसरेसवर्णपुरुषको स्वीकार अपनीइच्छासेकरले वहस्वैरिणी कहलातीहै ६७ जिसके पुत्रउत्पन्नहुआहो उसकेपास ऋतुकालमें सबअंगमें घीलगाके अपनेपिताआदि बड़ोंकीआज्ञासे देवर, सपिण्ड, अथवाकोई सगोत्रगमनकरे जो पुरुषकेपास न गईहो ६८ परन्तु गर्भरहनेतकही जावेनहींतो पतितहोताहै इसप्रकार उत्पन्न पुत्रक्षेत्रजकहलाताहै ६९ व्यभिचारिणी स्त्रीकोसबअधिकारसे हीन करके मैलेवस्त्रपहिनाकर भोजनमात्र अन्नदेकर प्रतिदिनअनादर से भूमिपर सुलावे ७० सोमदेवताने स्त्रियोंको शुचिदेदीहै,गंधर्व ने मीठीवोली और अग्निने सबप्रकार पवित्रहोनेकी शक्तिदी है इसलिये स्त्रियां पवित्रहोती हैं ७१ ॥

व्यभिचारादृतौशुद्धिर्गर्भेत्यागोविधीयते॥ गर्भभर्त्तवधा
दौचतथामहतिपातके ७२ सुरापीव्याधिताधूर्त्तावंध्यार्थघ्न
प्रियंवदा ॥ स्त्रीप्रसूश्चाधिवेतव्यापुरुषद्वेपिणीतथा ७३
अधिविन्नातुभर्त्तव्यामहदेनोन्यथाभवेत्॥ यत्रानुकूलंदम्प
त्योस्त्रिवर्गस्तत्रवर्धते ७४ मृतेजीवतिवापत्योर्यानान्यमुप
गच्छति॥ सेहकीर्तिमवाप्नोतिमोदतेचोमयासह ७५ आज्ञा
संपादिनींदक्षींवीरसूंप्रियवादिनीम्॥त्यजन्दाप्यस्तृतीयां
शमद्रव्योभरणंस्त्रियाः ७६ स्त्रीभिर्भर्तृवचःकार्यमेषधर्म्मः
परःस्त्रियाः॥आशुद्धेःसंप्रतीक्ष्योहिमहापातकदूषितः७७॥

ऋतुकाल प्राप्तहोनेपर व्यभिचारसे शुद्धहोतीहैं, जोदूसरे का गर्भरहजावे, गर्भका पतनकरादेवे, अपनेपतिके मारनेपर उद्यतहो और महापातककरे, तो उसस्त्री का त्यागकरनाचाहिये ७२ सुरा-पान करनेवाली, सदा रोगिणीरहनेवाली, धूर्त, वांझ, धननाशकरनेवाली, प्रियबोलनेवाली, जिसके लड़काहु आकरे औरजोस्त्री अपने पतिकादोपकरतीहोतो ऐसीस्त्रीके रहतेदूसराव्याह विहित है ७३ (परअधिविन्ना(प्रथमविवाहिता)कापालनकरनाचाहियेनहींतोबड़ा पापहोताहै जहांस्त्रीपुरुपकी परस्परअनुकूलता होतीहै वहांत्रिवर्ग (अर्थ, धर्म औरकाम) बढ़तारहता है ७४ पतिकेजीते वा मरनेपर जो दूसरेके पासनहींजाती वह इसलोकमें अच्छी कीर्तिपाती है और (परलोकमें) उमाकेसाथ रहनेसे सुखपातीहै ७५ यदिआज्ञा पालनकरनेवाली, घरकेकाममें चतुर, वीरपुत्रजननेवाली और प्रिय वचन बोलनेवाली, स्त्रीकोछोड़, उससे तीसराभाग धनदिलानाचाहिये और निर्धनहोतो उससेस्त्रीका पालनकरानाचाहिये७६ स्त्रियों का यह परमधर्म है कि पतिका कहना माने और पतिको महा-पातक लगाहोतो उसकी शुद्धितक आसराटेखें ७७ ॥

लोकानंत्यंदिवःप्राप्तिःपुत्रपौत्रप्रपौत्रकै ॥ यस्मात्तस्मा
स्त्रियःसेव्याःकर्तव्याश्चसुरक्षिताः ७८ षोडशर्तुनिशाःस्त्री
णांतस्मिन्युग्मासुसंविशेत् ॥ ब्रह्मचार्येवपर्वण्याद्याचतस्र
श्चवर्जयेत् ७९ एवंगच्छन्स्त्रियंक्षामांमघांमूलंचवर्जयेत्॥
सुस्थइन्दौसकृत्पुत्रंलक्षण्यंजनयेत्पुमान् ८० यथाकामी
नवद्वापीस्त्रीणांवरमनुस्मरन् ॥ स्वदारनिरतश्चैवस्त्रियोर
क्ष्यायतःस्मृताः ८१ भर्तृभ्रातृपितृज्ञातिश्वश्रूश्वशुरदेवरैः॥
बन्धुभिश्चस्त्रियःपूज्याभूषणाच्छादनाशनैः ८२ संयतोप
स्करादक्षाहृष्टाव्ययपराङ्मुखी ॥ कुर्य्यात्श्वशुरयोःपादवं
दनंभर्तृतत्परा ८३ ॥

पुत्र,पौत्र और प्रपौत्रके द्वारा अनन्तलोक और स्वर्गमिलता है इसलिये स्त्रियोंका संग्रह और बड़ी रखवालीसे उनका पालन करनाचाहिये ७८ ऋतुकालकी सोलहरातहोतीहैं, उनमेंयुग्म ६,८ १० वीं आदिरात्रियोंमें स्त्रीगमनकरे इससे ब्रह्मचारीही रहता है परन्तु कृष्णपक्षकी चौदश ८,३० और (पूर्णिमा) और पहिली ४ रातें छोड़देवे ७९ शुभचन्द्रविचार, मघा और मूलनक्षत्रको छोड़ जो सामा (डवली) स्त्रीकेपास एकवारजावे तो शुभलक्षणयुक्तपुत्र उत्पन्नहोताहै)८० अथवास्त्रियोंको पतिव्रतारखनेकेलिये जवउसकी इच्छादेखे गमनकरे और अपनीहीस्त्री में रतरहे क्योंकि स्त्रियोंकी रक्षा अवश्यहै८१ पति,भाई,पिता,जातिके लोग,सास,श्वशुर,देवर और सवप्रकारके बंधुलोग (मामीकापुत्र,फूफीकालड़का और मामृकावेटा) भी गहनेकपड़े और भोजन से स्त्रियोंका सत्कारकरें ८२ घरकी चीजोंकासंयम(यथोचित स्थानपररखना,कार्यमें चतुरहे।ना प्रसन्नरहना)वहुतखर्च न करना,सासश्वशुरके पावोंपर प्रणामकरना और पतिकी सेवामें तत्पररहना ये स्त्री के धर्म हैं ८३ ॥

क्रीडांशरीरसंस्कारंसमाजोत्सवदर्शनम् ॥ हास्यंपरगृ
हेयानन्त्यजेत्प्रोपितभर्तृका ८४ रक्षेत्कन्यांपिताविन्नांपतिः
पुत्रास्तुवार्द्धके ॥ अभावेज्ञातयस्तेषांनस्वातंत्र्यम्क्वचित्स्त्रि
याः ८५ पितृमातृसुतभ्रातृश्वश्रूश्वशुरमातुलैः ॥ हीनान
स्याद्विनाभर्त्रागर्हणीयान्यथाभवेत् ८६ पतिप्रियहितेयुक्ता
स्वाचाराविजितेन्द्रिया ॥ सेहकीर्तिमवाप्नोतिप्रेत्यचानुत्त
मांगतिम् ८७ सत्यामन्यांसवर्णायांधर्म्मकार्य्यंनकारयेत् ॥
सवर्णासुविधौधर्म्येज्येष्ठयानविनेतरा ८८ दाहयित्वाग्नि
होत्रेणस्त्रियंवृत्तवतींपतिः ॥ आहारेद्विधिवद्दारानग्नींश्चैवा
विलम्बयन् ८९ सवर्णेभ्यःसवर्णासुजायंतेहिसजातयः ॥
अनिंद्येषुविवाहेषुपुत्राःसन्तानवर्द्धनाः ९० ॥

खेलना,शृंगारकरना,भीड़में जाना,उत्सवदेखना,हँसना और दूसरे के घरजाना, जिसका पति विदेश गयाहो वह ये सब बातें छोड़देवे ८४ कुमारीकी रक्षा पिताकरे विवाहिता होने पर पति बुढ़ापेमें पुत्र और इनमें कोईनहो तो जाति लोग रक्षाकरें,स्त्रियोंको स्वतन्त्र कभी न होने देना चाहिये८५पतिनिकट नहो तो पिता,माता,पुत्र,भाई,सास,श्वशुर और मामा इनसे दूरनहो नहीं तो निन्दित होती है ८६ पति के प्रिय और हित काममें तत्पर, अच्छा आचरण करनेवाली और इन्द्रियोंको अपनेवशमें रखनेवाली स्त्री यहां बड़ाई पाती है और परलोक में बड़ा सुखपाती है ८७ सवर्णा स्त्री के रहते दूसरी से (धर्मकार्य) यज्ञ आदि न करावे सवर्णा कईएकहों तो ज्येष्ठा को छोड़ औरों से न करावे ८८ सुशीला स्त्री मरजावे तो अग्निहोत्रकी अग्निसे उसका दाहकरके पति फेर अग्नि और स्त्री का संग्रहकरे विलम्ब न करे ८९ अच्छे विवाह सेब्याही सवर्णा स्त्री से सवर्ण पुरुष से सजाति (उसी जाति)के पुत्र उत्पन्नहोतेहैं औरउनसेसन्तानकी बढ़ती होतीहै ९०

विप्रान्मूर्धावसिक्तोहिक्षत्रियायांविशःस्त्रियां॥अंवष्टःशूद्र्यां
निषादोजातःपारसवोपिवा ९१ वैश्याशूद्र्यस्तुराजन्यान्मा
हिष्योग्रौसुतौस्मृतौ॥वैश्यातुकरणःशूद्र्यांविन्नास्वेषविधिः
स्मृतः ९२ ब्राह्मण्यांक्षत्रियात्सूतोवैश्याद्वैदेहिकस्तथाशूद्रा
ज्जातस्तुचाण्डालःसर्वधर्मवहिष्कृतः ९३ क्षत्रियामागधवै
श्याच्छूद्रात्क्षत्तारमेवच॥शूद्रादायोगवंवैश्याजनयामासवै
सुतम् ९४ माहिष्येणकरण्यांतुरथकारःप्रजायते ॥ असत्सं
तस्तुविज्ञेयाःप्रतिलोमानुलोमजाः ९५ जात्युत्कर्षोयुगेज्ञेयः
पंचमेसप्तमेपिवा॥व्यत्ययेकर्मणांसाम्यंपूर्ववच्चाधरोत्तरं ९६

ब्राह्मणसेक्षत्रियास्त्रीमें उत्पन्नपुत्र मूर्द्धाभिषिक्तावैश्यामें अंवष्ट और शूद्रामेंउत्पन्नपुत्रनिषाद व पारसवकहलाताहै ९१ क्षत्रियसे वैश्यामेंउत्पन्नमाहिष्य औरशूद्रामें उत्पन्न उग्रकहाजाताहै,वैश्यसे शूद्रामेंउत्पन्नकरण (कायथ)होताहै,यहवातविवाहितास्त्रियोंमेंजानना ९२ क्षत्रियसेब्राह्मणीस्त्रीमेंउत्पन्नसूत, वैश्यसेवैदेहिक और शूद्रसेचाण्डालहोताहै चाण्डालसवधर्मोंसेरहितहोताहै ९३क्षत्रियास्त्रीमेंवैश्यसेमागध औरशूद्रासेक्षत्ताउत्पन्नहोताहै वैश्यामेंशूद्रसे आयोगवनामपुत्रउत्पन्नहोताहै ९४ माहिष्यपुरुषसेकरणीस्त्रीमेंरथ कारपैदाहोताहै इनमेंप्रतिलोमज (नीचजातिकेपुरुषसेउत्तमजाति कीस्त्रीमेंउत्पन्न)कोबुराऔरअनुलोमज(उत्तमजातिपुरुषसेहीनस्त्री मेंउत्पन्न) कोअच्छाजानना ९५ सातवें या पांचवेंजन्ममें(किसीजातिकीकन्याअपनेसेवड़ीजातिके पुरुषसेव्याहीजाय उससेजोकन्या होवहभीउसीवड़ीजातिकोदीजायइसीतौरसातवींपीढ़ीमें(जातिवड़ीहोजातीहै औरकर्मोंकेव्यत्ययमें) ब्राह्मणआदिकोआपत्कालमें अपनीवृत्तिसेजीवननहोसकेतो नीचवृत्तिसेभीनिर्वाहकरनायहकर्म व्यत्ययहैसातयापांचपुरुषतकजिसजातिकाकर्मकरेउसीकेतुल्यहोजाताहै,अधर(प्रतिलोमज)नीच (औरउत्तमअनुलोमज) (अच्छे) पूर्ववत्होते है. ९६ ॥

कर्मस्मार्तंविवाहाग्नौकुर्वीतप्रत्यहंगृही ॥ दायकालाहृ
देवापिश्रौतंवैतानिकाग्निषु ९७ शरीरचिन्तांनिर्वर्त्यकृत
शौचविधिर्द्विजः॥प्रातःसंध्यामुपासीतदंतधावनपूर्वकम्९८
हुत्वाग्नीन्सूर्य्यदैवत्यान्जपेन्मंत्रान्समाहितः ॥ वेदार्थान
धिगच्छेच्चशास्त्राणिविविधानिच ९९ उपेयादीश्वरंचैवयो
गक्षेमार्थसिद्धये ॥ स्नात्वादेवान्पितॄंश्चैवतर्पयेदर्चयेतथा
१०० वेदाथर्वपुराणानिसेतिहासानिशक्तितः ॥ जपयज्ञप्र
सिद्ध्यर्थंविद्यांचाध्यात्मिकींजपेत् १ वलिकर्मस्वधाहोमस्वा
ध्यायातिथिसत्क्रियाः ॥ भूतपितृपरब्रह्ममनुष्याणांमहाम
खाः २ देवेभ्यश्चहुतादन्नाच्छेषाद्भूतवलिंहरेत् ॥ अन्नंभूमौ
श्वचाण्डालवायसेभ्यश्चनिःक्षिपेत् ३ ॥

इतिवर्णजातिविवेकप्रकरणम् ॥ गृहस्थप्रतिदिनस्मार्त (वलिवैश्वदेवआदि)कर्मविवाहाग्नि,अथवा विभागकालमेंप्राप्तअग्निसेकरे और श्रौत (अग्निहोत्रादि)कर्मवैतानिक(आहनीया)आदिअग्निहोत्रकर ९७ द्विजशरीरचिंता (मलमूत्रोत्सर्ग)शौच (हाथपांवधोना, और दांतनकरके प्रातःसन्ध्याकी उपासनाकरे ९८ अग्निहोत्रकरके सूर्य्यदेवताकेमन्त्र सावधानहोकेजपे अनन्तर वेदकेअर्थऔर अनेकप्रकारके शास्त्रोंकोसुने वा पढ़े९९तवईश्वर (राजा) केपास योग (अलब्धवस्तुकेलाभ) और क्षेम (रक्षा) के लियेजावे स्नान करकेपितरोंकातर्पण और देवताओंकीपूजाकरे १०० अनन्तरवेद अथर्व उच्चाटनादिमन्त्रपुराण और इतिहास और अध्यात्मविद्या काजापकरे १ वलि वैश्वदेव,स्वधा (तर्पण और श्राद्ध) होम,स्वाध्याय(पाठपढ़ना)और अथितिकासत्कार येपांचों क्रमसे भूत,पितृ देव, ब्रह्म और मनुष्योंके महायज्ञ कहलातेहैं २ देवताओंकेहोमसे जो अन्नवचरहे उससे भूतवलिदेना कुत्ता, चाण्डाल और कौवों के लियेभी भूमिपर अन्न फेंकदेना ३ ॥

अन्नंपितृमनुष्येभ्योदेयमप्यन्वहंजलम् ॥ स्वाध्यायं
चान्वहंकुर्य्यान्नपचेदन्नमात्मने ४ बालस्ववासिनीवृद्धगर्भि
ण्यातुरकन्यकाः ॥ संभोज्यातिथिभृत्यांश्चदंपत्योःशेषभोज
नम् ५ आपोशानेनोपरिष्टादधस्तादश्नतातथा ॥ अनग्न
मम्ृतंचैवकार्य्यमन्नंद्विजन्मना ६ अतिथित्वेनवर्णेभ्योदेय
शक्त्यानुपूर्व्वशः ॥ अप्रणोद्योतिथिःसायमपिवाग्भूतृणोद
कैः ७ सत्कृत्यभिक्षवेभिक्षादातव्यासुव्रतायच ॥ भोजयेच्चा
गतान्कालेसखिसम्बन्धिबान्धवान् ८ महोक्षंवामहाजंवा
श्रोत्रियायोपकल्पयेत् ॥ सत्क्रियान्वासनंस्वादुभोजनंसू
नृतंवचः ९ ॥

पितर और मनुष्योंको भी प्रतिदिनअन्न और जलदेवे नित्य नित्यवेद पढ़, अपनेही लिये अन्ननपकावे ४ बालक (सुवासिनी सुहागिनि) वृद्ध, गर्भिणी, आतुर, कन्या, अतिथि और भृत्योंको खिलाके शेषअन्न स्त्रीपुरुष आपभोजनकरे ५ द्विजों को भोजन के समय आदि और अन्तमेंआपोशान (मन्त्रपढ़करआचमनकरनेसे) अन्नकोअनग्न और अमृतकरनाचाहिये ६ कईअतिथिआयेहों तो वर्णक्रम में (पहिले ब्राह्मण तब क्षत्रिय आदिको अपनीशक्ति के अनुसार अन्नदेना आरम्भकरना सायंकालमेंभी अतिथिआवे, तो निराशनकरना कुछअधिकनवनपड़े तो अच्छेवचन, भूमि, तृण और जलसे सत्कारकरना ७ सत्कारपूर्वक भिखारी और व्रतीको भिक्षादेनीचाहिये भोजन समयमें यदिकोई मित्र, सम्बन्धी और बान्धव आजायतो उसेभी खिलाना) ८ श्रोत्रिय (वेदपढ़ा) अतिथिआवे तो उसे बड़ाभारी बकरा या बैलआगे लाखड़ाकरे सत्कार करे अच्छा आसनदे मधुरभोजन करावे और मीठी बातबोले ९ ॥

प्रतिसंवत्सरंत्वर्घ्याःस्नातकाचार्य्यपार्थिवाः ॥ प्रियो
विवाह्यश्चतथायज्ञंप्रत्यृत्विजःपुनः १०. अध्वनीनोऽतिथि
र्ज्ञेयःश्रोत्रियोवेदपारगः ॥ मान्यावेतौगृहस्थस्यब्रह्मलोक
मभीप्सतः ११ परपाकरुचिर्नस्यादनिन्द्यामन्त्रणादृते ॥
वाक्पाणिपादचापल्यंवर्ज्जयेच्चातिभोजनम् १२ अतिथिं
श्रोत्रियंतृप्तमासीमांतमनुव्रजेत् ॥ अहःशेषंसमासीताशिष्टै
रिष्टैश्चबन्धुभिः १३ उपास्यपश्चिमांसंध्यांहुत्वाग्नींस्तानु
पास्यच ॥ भृत्यैःपरिवृतोभुक्त्वानातितृप्त्याथसंविशेत् १४
ब्राह्मेमुहूर्त्तेचोत्थायचिन्तयेदात्मनोहितम् ॥ धर्मार्थकामा
न्स्वेकालेयथाशक्तिनहापयेत् १५ ॥

स्नातक, आचार्य, मित्र जिसे कन्यादेनीहो और राजा इनको हरसाल अर्घ्यदेकर अर्थात् (मधुपर्कसे)पूजे और ऋत्विजको वर्ष के वीचभी हरयज्ञके आरम्भमें अर्घ्यदे पूजे १० पथिक पहुंचाहोताहै श्रोत्रिय (वेदपढ़नेवाला) और वेदपारग (जिसनेवेदकी एक शाखा समग्रपढ़ीहो) येदोनों ब्रह्मलोककी इच्छारखनेवाले गृहस्थ को अत्यन्त माननीय अतिथिहैं ११ अच्छेमनुष्य के निमन्त्रण कोछोड़ दूसरेकेघरभोजनकी अभिलाषा न रक्खे वाणी,हाथ और पांवइनकी चपलता औरभूखसे अधिक भोजन कभी न करे १२ श्रोत्रिय अतिथिहो तो उसको भोजनसे तृप्तकरके अपने ग्रामकी सीमातक पहुंचा आवे भोजनके अनन्तर शेषदिन बड़ेलोग,मित्र और बन्धुओंके साथ बैठके वितावें १३ पश्चिमा (सायं) सन्ध्या की उपासना और अग्नियों में होम और उनकी उपासना करके भृत्यों सहित भोजन करे परन्तु ऐसा भोजन न करे कि जिससे अफरजावे अनन्तर शयनकरे १४ ब्राह्ममुहूर्तमें (पिछले पहर में) उठकर अपनाहित विचारे धर्म,अर्थ और काम इन्हें अपने अपने समय में शक्तिके अनुसार न खोवे १५ ॥

विद्याकर्म्मवयोवन्धुवित्तैर्मान्यायथाक्रमम् ॥ एतैःप्रभूतैःशूद्रोपिवार्द्धकेमानमर्हति १६ वृद्धभारिनृपस्नातस्त्रीरोगिवरचक्रिणाम्॥पन्थादेयोनृपस्तेषांमान्यःस्नातश्चभूपतेः१७ इज्याध्ययनदानानिवैश्यस्यक्षत्रियस्यच ॥ प्रतिग्रहोधिकोविप्रेयाजनाध्यापनेतथा १८ प्रधानेक्षत्रियेकर्मप्रजानांपरिपालनम् ॥कुसीदकृषिवाणिज्यपाशुपाल्यंविशःस्मृतम् १९ शूद्रस्यद्विजशुश्रूषातयाजीवन्वणिग्भवेत् ॥ शिल्पैर्वाविविधैर्जीवेद्द्विजातिहितमाचरन् २० भार्यारतिःशुचिर्भृत्यभर्त्ताश्राद्धक्रियारतः॥नमस्कारेणमन्त्रेणपञ्चयज्ञान्नहापयेत्२१ अहिंसासत्यमस्तेयंशौचमिंद्रियनिग्रहः ॥ दानंदयादमःक्षान्तिःसर्वेषांधर्म्मसाधनम् २२ ॥

विद्या,कर्म,अवस्था, वन्धु और धन इनकेपराक्रमसे मनुष्यबड़ागिनाजाताहै जो ये सबबहुतपढ़ेहों तो बुढ़ापेमें शूद्रभीमानकेयोग्यहोताहै १६ वृद्ध,वोझढोनेवाला,राजा,स्नातक,(ब्रह्मचारी या यज्ञदीक्षित) स्त्री,रोगी,वर, (जिसका व्याह होनेजाताहो) और चक्री(सुराकार) इन्हें राहमें देसहटजानाचाहिये इनसबोंमें राजावड़ाहै और स्नानकराजाकोभीमाननीयहै १७ यज्ञकरना, पढ़ना औरदानदेना ये कार्य्य वैश्य और क्षत्रियकोभी हैं ब्राह्मणको प्रतिग्रह(दानलेना)यज्ञकराना औरपढ़ाना येअधिकहैं १८ प्रजाकापालनकरना यहक्षत्रियका श्रेष्ठकर्महै कुसीद (व्याजलेना) खेती, वणिजऔरपशुपालन ये वैश्यकेमुख्यकर्महैं १९ द्विजोंकीसेवाकरनी शूद्रकाप्रधानकर्महै उससे नजीसके तोवनिज कर वा अनेकप्रकारकीशिल्पविद्यासे निर्वाहकरे परन्तु द्विजोंकाहितकरतारहे २० और अपनीस्त्रीमें रतहोवे पवित्ररहे भृत्योंकापालनकरेपितरोंकीश्राद्धकरे , औरनमस्काररूपीमंत्रसेपंचयज्ञोंकोनछोड़े २१ जीववधनकरना,सत्यबोलना,चोरीनकरनी, पवित्ररहना, इंद्रियोंकोवशमें रखना, दान, दया,दम(मनकासंयम) औरसहनशीलतायेसबमनुष्योंके धर्मसाधनहैं २२॥

वयोबुद्ध्यर्थवाग्वेषःश्रुताभिजनकर्मणाम् ॥ आचरेत्स
दृशींवृत्तिमजिह्मामशठांतथा २३ त्रैवार्षिकाधिकान्नोयःसतु
सोमंपिबेद्द्विजः ॥ प्राक्सौमिकीःक्रियाःकुर्य्याद्यस्यान्नंवा
र्षिकंभवेत् २४ प्रतिसंवत्सरंसोमःपशुःप्रत्ययनन्तथा ॥
कर्त्तव्याग्रयणेष्टिश्चचातुर्मास्यानिचैवहि २५ एषामसम्भ
वेकुर्यादिष्टिंवैश्वानरींद्विजः ॥ हीनकल्पंनकुर्वीतसतिद्रव्ये
फलप्रदम् २६ चाण्डालोजायतेयज्ञकरणाच्छूद्रभिक्षितात् ॥
यज्ञार्थंलब्धमददद्भासःकाकोपिवाभवेत् २७ कुशूलकुंभी
धान्योवात्र्याहिकोश्वस्तनोपिवा ॥ जीवेद्वापिशिलोंछेनश्रे
यानेषांपरःपरः २८ ॥

वय,(अवस्था) बुद्धि,वाणी, धन,वेष,विद्या,कुल और अपनेकर्म के अनुसार अपनी जीविका वृत्तिकरनी सो भी तिरछी (टेढ़ी) और शठ (मत्सरयुक्त) न हो २३ जिसको तीनवर्षतक खाने से अधिक अन्नहो वह द्विज सोमपानकरे जिसको वर्षभर खानेको अन्नहो वह प्राक्सौमिकी (अग्निहोत्र, दर्श पौर्णमास, आदि जो सोम से पहिले कियेजाते) ऐसीक्रियाकरे २४ प्रतिवर्ष सोमयज्ञ,दोनों अयनोंमें या प्रतिवर्षमें पशुयज्ञ,आग्रयणेष्टि, (नवान्नयज्ञ) और चातुर्मास्यभी प्रतिवर्ष करना चाहिये २५ इनका सम्भव नहो तो द्विज वैश्वानर यज्ञकरे अपनेपास धनरहते निकृष्टपक्ष न करे और फलप्रद (काम्यकर्म) तो हीनकल्प करनाही न चाहिये २६ शूद्र से मांगकर उस धनसे यज्ञकरे तो चाण्डालहोताहै और जो धन यज्ञकेलिये मिलाहो उसे नदे तो भास (शकुन्त) अथवा कौओंका जन्मपाताहै२७कुशूलधान्य, (कोठिलेभरअन्नरखनेवाला) कुम्भी धान्य (घड़ेभरनाजरखनेवाला) तीनदिन वा प्रतिदिन खानेयोग्य, अन्नरखनेवाला और शिलोंछसे (दानाफूटाबीनकर) जीनेवाला इनमेंपिछले पिछले पहिलों से श्रेष्ठ हैं २८ ॥

नस्वाध्यायविरोध्यर्थमीहेतनयतस्ततः ॥ नविरुद्धप्रसंगेनसंतोपीचसदाभवेत् २९ राजान्तेवासियाज्येभ्यःसीदन्निच्छेद्धनंक्षुधा ॥ दम्भिहैतुकपाखण्डिवकवृत्तींश्चवर्जयेत् ३० शुक्लांबरधरोनीचकेशश्मश्रुनखःशुचिः ॥ नभार्यादर्शनेश्नीयान्नैकवासानसंस्थितः ३१ नसंशयंप्रपद्येतनाकस्माद्प्रियंवदेत् ॥ नाहितंनानृतंचैवनस्तेनःस्यान्नवार्धुषी ३२ दाक्षायणीब्रह्मसूत्रीवेणुमान्सकमण्डलुः ॥ कुर्य्यात्प्रदक्षिणं देवमृद्गोविप्रवनस्पतीन् ३३ नतुमेहेन्नदीछायावर्त्मगोष्ठांबुभस्मसु ॥ नप्रत्यग्न्यर्कगोसोमसंध्याम्बुस्त्रीद्विजन्मनः३४ ॥

नतो अपनेपाठ में बाधाडालनेवाले और न ऐसेवैसेके धनकी तथा विरुद्ध (अयाज्ययाजनादि वा नृत्यगीतादि) कामसेभी धन अर्जनकीइच्छानकरे और अपनेमनमें सदासन्तोपरक्खे २६ क्षुधासे पीड़ितहो तो राजा,अन्तेवासी,ब्रह्मचारी विशेष और यज्ञकरानेके योग्यजोहो इनसेधनमांगे परन्तु अहंकारी,युक्तिवलसे सर्वत्रसंशय करनेवाले, पाखण्डी, और बगलाभगतसे न मांगे ३० वस्त्रस्वच्छ रक्खे केश,दाढ़ी,मोछऔर नखको सदाछिन्नरक्खे और पवित्ररहे अपनीस्त्रीकेसामने एकहीवस्त्रपहनकर और खड़ाहोकर भोजन न करे ३१ जिसमें प्राणकासंशयहो ऐसाकाम न करे अकस्मात् कड़ी वातनकहे किसीकाअहित और कूटनबोले चोरऔर व्याजखोर न हो ३२ दाक्षायण (सोनेकेकुंडल) यज्ञोपवीत,दण्ड और कमण्डलु इनकोसदाधारणकरे देवताओर(देवमूर्त्तिवनानेकेलियेजो)मृत्तिका हो,गौ,ब्राह्मण औरवनस्पतिको प्रदक्षिणादहिनाढेकेगमनकरे ३३ नदी परछाहीं पथ, गोशाला,जलऔर राखमेंमूत्र और मल न करे सूर्य्य,अग्नि गौ,चन्द्रमा, जल, स्त्री और द्विजोंकेसामने मुंहकरके तथा संध्यासमय में भी मुत्र और पुरीप न करे ३४ ॥

नेक्षेतार्कंननग्नांस्त्रींनचसंसृष्टमैथुनां ॥ नचमूत्रंपुरीषंवा
नाशुचीराहुतारकाः ३५ अयंमेवज्रइत्येवंसर्वंमंत्रमुदीरयेत्॥
वर्षत्यप्रावृतोगच्छेत्स्वपेत्प्रत्यक्शिरानच ३६ ष्ठीवनासृक्श
कृन्मूत्ररेतांस्यप्सुननिःक्षिपेत् ॥ पादौप्रतापयेन्नाग्नौनचैन
मभिलंघयेत् ३७ जलंपिबेन्नांजलिनाशयानंनप्रबोधयेत् ॥
नाक्षैःक्रीडेन्नधर्मघ्नैर्व्याधितैर्वानसंविशेत् ३८ विरुद्धंवर्जये
त्कर्मप्रेतधूमंनदीतरम् ॥ केशभस्मतुषांगारकपालेषुवसंस्थि
तिम् ३९ नाचक्षीतधयंतींगांनाद्वारेणविशेत्क्वचित् ॥ नरा,
ज्ञःप्रतिगृह्णीयाल्लुब्धस्योच्छास्त्रवर्त्तिनः ४० प्रतिग्रहेसूनि
चक्रिध्वजिवेश्यानराधिपाः ॥ दुष्टादशगुणंपूर्वात्पूर्वादेतेय
थाक्रमम् ४१ ॥

सूर्य्य, नग्न और कृतमैथुन स्त्री, मूत्र और पुरीष इनको न देखे अशुद्ध देहहो तो राहु और तारों को न देखे ३५ पानी बरसतेमें कहींजानाहो तो (अयम्मेवज्र) इस सारे मन्त्रको कहता छतरी से विनाचलदे औरपश्चिमशिरहोके शयननकरे ३६ खखार, रुधिर, विष्ठा, मूत्र और वीर्य इन्हें जलमें न डाले पांव आग में न तपावै और नतो आगको लांघे ३७ अंजलीसे जलनपीवे कोई सोयाहो तो न जगावै पांसा न खेले धर्मनाशकरनेवाले (पशुमारणआदि) वस्तुओंसे भी न खेले और रोगियोंके साथ शयन न करे ३८ देश कुलादि के आचार से विरुद्धकर्मनकरे प्रेतधूम औरनदीकातैरना वरादेवे केश, भस्म, भूसी, कोला, और खपड़ोंइपरनबैठे ३९ पीती हुई वा पिलातीहुई गौको न सतावे कुराह से कहीं न बैठे लोभी और शास्त्र विरुद्ध चलनेवाले राजाका दान न लेवे ४० दानलेने में कसाई, तेली, कलार, वेश्या और राजा ये पांचो पहिले पहिले से दूसरे दूसरे दशदशगुना अधिक निषिद्ध (दुष्टहैं) ४१ ॥

अध्यायानामुपाकर्मश्रावण्यांश्रवणेनव ॥ हस्तेनौपधि
भावेवापञ्चम्यांश्रावणस्यतु ४२ पौषमासस्यरोहिण्यामष्ट
कायामथापिवा ॥ जलांतेछन्दसांकुर्य्यातदुत्सर्गंविधिंबहिः
४३ त्र्यहंप्रेतेष्वनध्यायःशिष्यर्त्विग्गुरुबन्धुषु ॥उपाकर्मणि
चोत्सर्गेस्वशाखाश्रोत्रियेतथा४४ सन्ध्यागर्जितनिर्घातभूकं
पोल्कानिपातने॥समाप्यवेदंद्युनिशमारण्यकमधीत्यच ४५
पंचदश्यांचतुर्दश्यामष्टम्यांराहुसूतके ॥ऋतुसन्धिपुभुक्त्वावा
श्राद्धिकंप्रातिगृह्यच ४६ पशुमण्डूकनकुलमार्जारश्वाहिमू
षकैः ॥ कृतेन्तरेत्वहोरात्रंशक्रपातेतथोच्छ्रये ४७ ॥

वेदोंकेपढ़नेका उपाकर्म (आरम्भ)औषधियोंके उगनेपरसावन महीनेकी पूर्णमासी को श्रवणनक्षत्रयुक्त किसी दूसरेदिन, अथवा हस्तनक्षत्रयुक्त सावनकी पंचमीको करे ४२ पौष महीनेकी रोहिणी वा अष्टमी के दिन ग्रामसे बाहर किसी जलाशयके समीप. विधिपूर्वक वेदोंका उत्सर्ग(त्याग)करना ४३ शिष्य,ऋत्विज,गुरू और बन्धुइनके मरनेपर वेदोंकेआरम्भ और उत्सर्गमें जोअपनी शाखाहो उसीको दूसरा भी पढ़ताहो और मरजाय तो भी तीन दिन अनध्याय होताहै ४४ संध्यासमयमें मेघकी गर्जनाहो, आकाश में कोई उत्पात शब्द हो,भूकंप,उल्कापात(ताराटूटकरगिरे)और वेद समाप्तहुआहो वा आरण्यक पढ़चुकेहों तो एक दिन रात अनध्याय होताहै ४५ अमावस,पूर्णमासी,चतुर्दशी,अष्टमी, चंद्र सूर्य्य ग्रहण जिस प्रतिपत्को ऋतुओंका आरम्भहो , और श्राद्ध में भोजनकरे वा दानालियाहो तो भी एक दिन रात अनध्याय करना ४६ कोई पशु, मेढ़क, नेवला कुत्ता, सर्प, बिडाल औरमूषक यदि ये पढ़ने पढ़ानेवालोंके बीचसे निकलजावें इन्द्र और ध्वजको खड़ाकरें वा उतारें तो एकदिनरात अनध्याय करना४७ ॥

श्वक्रोष्टुगर्द्दभोलूकसामवाणार्तनिःस्वने ॥ अमेध्यशवशूद्रांत्यश्मशानपतितान्तिके ४८ देशेशुच्यावात्मनिचविद्युत्स्तनितसंप्लवे ॥ भुक्तार्द्रपाणिरम्भोन्तरर्द्धरात्रेतिमारुते ४९ पांशुवर्षेदिशांदाहेसन्ध्यानीहारभीतिषु ॥ धावतःपूतिगन्धेचशिष्टेचगृहमागते ५० खरोष्ट्रयानहस्त्यश्वनौवृक्षेरिणरोहणे ॥ सप्तत्रिंशदनध्यायानेतांस्तात्कालिकान्विदुः ५१ देवर्त्विक्स्नातकाचार्यराज्ञांछायांपरस्त्रियाः॥ नाक्रामेद्रक्तविण्मूत्रष्ठीवनोद्वर्तनादिच ५२ विप्राहिक्षत्रियात्मानोनावज्ञेयाःकदाचन ॥ आमृत्योःश्रियमाकांक्षेन्नकंचिन्मर्मणिस्पृशेत् ५३ दूरादुच्छिष्टविण्मूत्रपादाम्भांसिसमुत्सृजेत् ॥ श्रुतिस्मृत्युदितंसम्यङ्नित्यमाचारमाचरेत् ५४ ॥

कुत्ता, शृगाल, गर्दभ, उलूकपक्षी, सामवेदवंशी और दुःखित मनुष्य इनका शब्द सुनपड़े कोई अपवित्रवस्तु मृतक,शूद्र अन्त्यज,श्मशान,और पतित येनगीचहों ४८ अपवित्र स्थल अशुद्धदेह हो, वारम्वार विजली चमके, वारवार मेघगर्जे, भोजनकरने से गीलेहाथहों, जलके वीच खड़ाहो, आधीरातमें वहुतपवन चलता हो, ४९ धूल वरसतीहो, दिशा जलती देखपड़े, सांझ सवेरेकेधुंधमें कोई भयहो, दौड़ताहो, दुर्गंधआतीहो, कोई शिष्ट अपने घर आयाहो ५० गधा, ऊंट, रथ, हाथी,घोड़ा,नौका,वृक्ष, और ऊपर भूमि इनपर चढ़ना ये सैंतीस अनध्याय जवतक इनसैंतीसपूर्वोक्तकामोंकी सत्तारहे तभीतक होतेहैं ५१ देवता,ऋत्विज,स्नातक, आचार्य, राजा और परस्त्री इनकीछाया और रुधिर, विष्ठा, मूत्र, खखार और उबटनकी खींभीको लांघना न चाहिये ५२ वहुश्रुत ब्राह्मण, सर्प, क्षत्रिय, और अपनी आत्माका कभी अपमान न करना मरणपर्य्यन्त धनकी इच्छारक्खे कि किसीको दुःखदायी वातनकहे ५३ जूठामूल,मूत्र और पांवधोनेका जलदूरफेकना श्रुति और स्मृतियोंमेंकथित आचारकोभलीभांति नित २ करे ५४ ॥

गोब्राह्मणपलान्नानिनोच्छिष्टोनपदास्पृशेत् ॥ नानिंदा ताडनंकुर्य्यात्सुतंशिष्यञ्चताडयेत् ५५ कर्मणामनसावाचा यत्नाद्धर्मंसमाचरेत् ॥ अस्वर्ग्यंलोकविद्विष्टंधर्ममप्याचरेन्न तु ५६ मातृपितृतिथिभ्रातृजामिसम्बन्धमातुलैः ॥ वृद्धबालातुराचार्य्यवैद्यसंश्रितबांधवैः ५७ ऋत्विक्पुरोहितापत्य भार्य्यादाससनाभिभिः ॥ विवादंवर्जयित्वातुसर्वान्लोकान् जयेद्गृही ५८ पञ्चपिण्डाननुद्धृत्यनस्नायात्परवारिषु ॥ स्नायान्नदीदेवखातह्रदप्रस्रवणेषुच ५९ परशय्यासनोद्यान गृहयानानिवर्जयेत् ॥ अदत्तान्यग्निहीनस्यनान्नमद्यादना पदि ६० ॥

गोब्राह्मण,अग्नि और भोजनके अन्नको अशुद्धहोकर अथवा पांवसे न छुवे किसी की निन्दा और ताड़नानकरे पुत्र और शिष्य को पढ़नेकेलिये ताड़नाकरे ५५ कर्म,मन और वाणीसे यत्नपूर्वक धर्मकरे जो कर्म शास्त्रविहितहो परन्तु लोकविरुद्धहो और उससे स्वर्गगति न होतीहो तो उसे न करे, ५६ माता, पिता, अतिथि (पहुना) भाई,जिन स्त्रियोंकेपतिजीतेहों संबंधी,मामा,वृद्ध,बालक,रागी,आचार्य्य,वैद्य, आश्रित बांधव ५७ ऋत्विज्,पुरोहित,अपत्य,भार्या,दास,सोदर भाई और बहिन इनसे विवादकरनाछोड़दे तो सब लोगोंको वह गृहस्थ जीतलेताहै ५८ दूसरेके जलाशयमें पांचपिंडी मिट्टीके निकाले विना स्नान न करे नदी,देवखात (पुष्करआदि)ह्रद,(डल) और झरना इनमेंयोंहीं स्नानकरले ५९ दूसरेकी शय्या,आसन,बगीचा, घर और रथका उपभोग उसकी आज्ञाविना यदि आपत्काल नहो तो कभी न करना अग्निहो त्रका अधिकार जिसेनहो उसका अन्नभी विना आपत्काल न खाना ६० ॥

कदर्य्यबद्धचोराणांक्लीवरंगावतारिणां ॥ वैणाभिशस्त वार्धुष्यगणिकागणदीक्षिणाम् ६१ चिकित्सकातुरक्रुद्धपुंश्च लीमत्तविद्विषाम् ॥ क्रूरोग्रपतितव्रात्यदांभिकोच्छिष्टभोजि नाम् ६२ अवीरास्त्रीस्वर्णकारस्त्रीजितग्रामयाजिनां ॥ शस्त्र विक्रयकर्मारतन्तुवायाश्ववजीविनां ६३ नृशंसराजरजकक्ट तघ्नवधजीविनाम् ॥ चैलधावसुराजीविसहोपपतिवेश्मनाम् ६४ पिशुनान्रतिनाश्चैवतथाचांक्रिकवंदिनाम् ॥ एषामन्नंन भोक्तव्यंसोमविक्रयिणस्तथा ६५ शूद्रेषुदासगोपालकुल मित्रार्द्धसीरिणः ॥ भोज्यान्नानापितश्चैवयश्चात्मानंनिवेद येत् ६६ ॥

लोभी, बँधुवा, चोर, नपुंसक, रंगावतारी, नट, मनारी मल्ल आदि (वैण, अभिशस्तु, वार्द्धुष्य व्याजखोर) वेश्या, वहुयाचक ६१ वैद्य, रोगी, क्रोधी, व्यभिचारिणी, मत्त (विद्या आदि गर्भयुक्त) शत्रु, क्रूर (जिसके मनमें अचल कोपहो उग्र) (जो वाणी व चेष्टासे दूसरेको उद्विग्न करे) पतित, व्रात्य (जिसेसमय पर गा- यत्रीका उपदेश न हुआ) ठग और जूठा खानेवाला ६२ स्वतंत्र स्त्री, सोनार, स्त्रीवश, ग्रामयाजी, शास्त्रबेचनेवाला, लोहार खाती तंतुवाय (जोलाहा या दर्जी) और जिसकी जीविका कुत्तोंके द्वारा हो ६३ निर्दय, राजा, रजक (रंगरेज) कृतघ्न (उपकार न मा- ननेवाला) व्याध, धोबी, सुरी बेचनेवाला, जार, लम्पट पुरुषका पड़ोसी ६४ पिशुन (परदोष सूचक) (मिथ्यावादी) तेली, गाड़ी चलाने वाला, वन्दी जन और सोमलता बेचनेवाला जो हो इन सबोंका अन्नभी कभी न खाना ६५ शूद्रोंमें दास, गोपाल अहीर, कुलमित्र (जिसकी मिताई बापदादेसे चलीआतीहो) अर्द्धसीरी (बंटवारवा साझेमें खेती करनेवाला) नापित और अपनी आ- त्माका निवेदन कियेहो इन सबों का अन्न खाना ६६ ॥

अनर्चितंवृथामांसंकेशकीटसमान्वितम् ॥ शुक्तंपर्युषितो च्छिष्टंश्वस्पृष्टंपतितेक्षितम् ६७ उदक्यास्पृष्टसंघुष्टंपर्य्या यान्नंचवर्जयेत् ॥ गोघ्रातंशकुनोच्छिष्टंपदास्पृष्टंचकामतः ६८ अन्नंपर्युषितंभोज्यंस्नेहाक्तंचिरसंस्थितम् ॥ अस्नेहा अपिगोधूमयवगोरसविक्रियाः ६९ संधिन्यनिर्दशावत्सा गोपयःपरिवर्जयेत् ॥ औष्ट्रमैकशफंस्त्रैणमारण्यकमथाविक म् ७० देवतार्थंहविःशिग्रुंलोहितान्व्रश्चनांस्तथा ॥ अनु पाकृतमांसानिविड्जानिकवकानिच ७१ ॥

इति स्नातप्रकरणम् ॥ अनादरसे दियाहुआ अन्न, वृथामांस (अपनेलियेपकायाहुआमांस) जिसअन्नमें केश व कीट पड़ेहों जो अम्लहोगयाहो, बासी, जूठा, कुत्तासेछूटगया, पतितसे देखाहुआ ६७ रजस्वलास्त्रीसेछूटगया, जो पुकारकेदियाजाताहो, दूसरका अन्न दूसरादेताहो, जिसका गौनेसूंघाहो, पक्षीकाजूठा और जिसको जानबूझके कोई पावसे छूदे इन सबप्रकारके अन्नको निषिद्ध जानना ६८ जिसअन्नमें घृतआदिकी चिकनाईहो तो उसे बासीभी खाना गेहूं यव और गोरसकाविकार जो चीजहो उसमें चिकना नहो तोभी खालेना ६९ संधिनी (बरदाईहुई, एकजून लगनेवाली वा जो दूसरेके बछरे से दुहीजावे) जिसको ब्यायेहुये दशदिन न बीतेहों और जिसका बछड़ा न हो ऐसी गो और ऊट एक खुरवाले पशुस्त्री जंगलीपशु औरभेड़ इनकादूध न पीवे ७० देवताके निमित्त पकायाहुआ होमकेलिये पक्व शिग्रुसोभांजनागोंद व्रश्चन वृक्षकाटनेसे जो निकले जोपशु यज्ञमें हुनानहींगया उसका मांस विष्ठाकेस्थानमें जो उत्पन्नहो और कवकछत्राक इनसबोंको न खावे ७१ ॥

क्रव्यादपक्षिदात्यूहशुकप्रतुदाटिट्टिभान् ॥ सारसैकश
फान्हंसान्सर्वांश्चग्रामवासिनः ७२ कोयष्टिप्लवचक्राह्वब
लाकाबकविष्किरान् ॥ वृथाकृशरसंयावपायसापूपशष्कु
लीः ७३ कलविंकंसकाकोलंकुररंरज्जुदालकम् ॥ जाल
पादान्खंजरीटानज्ञातांश्चमृगद्विजान् ७४ चाषांश्चरक्तपा
दांश्चसौनंवल्लूरमेवच ॥ मत्स्यांश्चकामतोजग्ध्वासोपवा
संस्त्र्यहंवसेत् ७५ पलांडुंविड्वराहंचछत्राकंग्रामकुक्कुटम् ॥
लशुनंगृंजनंचैवजग्ध्वाचांद्रायणंचरेत्७६ भक्ष्याःपंचनखाः
सेधागोधाकच्छपशल्लकाः ॥ शशश्चमत्स्येष्वपिहिसिंहतुं
डकरोहिताः ७७ ॥

क्रव्याद पक्षी कच्चामांस खानेवाला पत्ती चातक तोता चोंच से तोड़के खानेवाले टिटहरी, सारस, एकखुरवाले हंस और जो पक्षी ग्राममें रहतेहों ७२ कोयष्टि (क्रौंच) जल कुक्कुट, चकवा चकवी, बगला, विष्किर (जो नखसे छीलकरकेखातेहैं चकोरआदि इन्हें और जो कृशर, तिलवा मूंगाकी भांति) संयाव, दूध, गुड़ और घी से जो बने) पायस, (खीर, अपूप (सूखी गेहूंकी रोटी) और पूरी देवताकेनिमित्त बनीहो ७३ कलविंक (ग्रमचटकी) द्रोणकाक, कुरर, वृक्ष, कुट्टक, जालपाद, (जिनका पैर चमड़े से मढ़ाहो) खिड़रीच और जिनपक्षी और मृगोंको न जानतेहों७४ चाप (नीलकण्ठ) रक्तपाद (कादवआदि) कसाईके मारेहुये पशुकामांस, सूखामांस और मछली इनसबोंकोनखावेयदिसमझ बूझके खावेतो तीनदिनउपवासकरे७५पलांडु, (प्याज)ग्रामशूकर छत्राक(कुकरमुत्ता)ग्रामकुक्कुट, लशुन और गाजर इन्हें जानबूझ करखावे तो चान्द्रायणव्रतकरे ७६ पञ्चनख (पंजेदार) जीवोंमें सेधा सेंधुआर) गोह, कछुआ, साही और खरहाइनकामांस खाने के योग्यहैं और मछलियोंमें सिंही(सिंहतुण्डका)रोहू(रोहित)७७॥

तथापाठीनराजीवसशल्काश्चद्विजातिभिः ॥ अतःशृणु
ध्वंमांसस्यविधिंभक्षणवर्जने ७८ प्राणात्ययेतथाश्राद्धेप्रो
क्षितंद्विजकाम्यया ॥ देवान्पितृन्समभ्यर्च्यखादन्मांसंन
दोषभाक् ७९ वसेत्सनरकेघोरेदिनानिपशुरोमभिः ॥ सं
मितानिदुराचारोयोहन्त्याविधिनापशून् ८० सर्वान्कामान
वाप्नोतिहयमेधफलंतथा ॥ गृहेपिनिवसन्विप्रोमुनिर्मांसवि
वर्जनात् ८१ सौवर्णराजताब्जानामूर्ध्वपात्रगृहाश्मनाम् ॥
शाकरज्जुमूलफलवासोविदलचर्मणाम् ८२ पात्राणांचम
सानांचवारिणाशुद्धिरिष्यते ॥ चरुस्रुक्स्रुवसस्नेहपात्रा
ण्युष्णेनवारिणा ८३ ॥

पढ़िना (पाठीना) राजीव (कमलकेरंगकासा) इनसवको और सशल्क (सेहरेवाली) मछलीहों उन्हेंभी द्विजातिभोजन न करे अब सामान्यसे सब वर्णोंकेलिये मांसके खाने और वरानेकी विधिसुनो ७८ जब विनामांस जीने की आशा न हो तब श्राद्धके निमंत्रणसे यज्ञमें हुनेहुयेसे जो शेषरहा और जो ब्राह्मण भोजन देवे और पितरके पूजनकेलिये मांस वनायागया वह भी उन्हें चढ़ाकरखावे तो दोष नहीं है ७९ जो दुराचारी विधि (देवपितर पूजन) से विना पशुको मारता वह जितने रोम उसपशुकी देहमें हों उतनेदिन घोरनरकमें वास करताहै ८० मांसखानाछोड़दे तो सारेमनोरथ और अपने अश्वमेध यज्ञका फल पाताहै और मांस खाना छोड़ घरमें भी रहे तो वह ब्राह्मण मुनितुल्य कहाताहै ८१ इतिभक्ष्याभक्ष्य प्रकरणम् ॥ सोने, चांदी और अब्ज (शंख,शुक्ति और मुक्ता आदि)के पात्र, यज्ञकी ऊखली सह(यज्ञियपात्र विशेष) पत्थर,शाक,रस्सी,मूल,फल,वस्त्र,बांस और चामसे जो बने ८२ पात्र (प्रोक्षणीआदि)और चमस(होतृचमसआदि)येसवजलकेसाथधोनेहीसेशुद्धहोतेहैं। चरुस्थाली,स्रुक,औरस्रुव(तीनोंयज्ञकेपात्रहैं)और जिसपात्रमें घीकेसदृशचिकनाईहोवे वे उष्णजलसेशुद्धहोतेहैं ८३॥

स्प्यशूर्पाजिनधान्यानांमुसलोलूखलानसाम् ॥ प्रोक्ष
णंसंहतानांचबहूनांधान्यवाससाम् ८४ तक्षणंदारुशृंगा
स्थ्नांगोवालैःफलसंभुवाम् ॥ मार्जनंयज्ञपात्राणांपाणिना
यज्ञकर्म्मणि ८५ सोखैरुदकगोमूत्रैःशुद्ध्यत्याविककौशिक
म् ॥ सश्रीफलैरंशुपट्टंसारिष्टैःकुतपन्तथा ८६ सगौरसर्ष
पैःक्षौमम्पुनःपाकान्महीमयम् ॥ कारुहस्तःशुचिःपण्यंभैक्ष्यं
योषिन्मुखन्तथा ८७ भूशुद्धिर्मार्जनाद्दाहात्कालाद्गोक्रमणा
त्तथा ॥ सेकादुल्लेखनाल्लेपाद्गृहंमार्जनलेपनात् ८८ गो
घ्रातेन्नेतथाकेशमाक्षिकाकीटदूषिते ॥ सलिलंभस्ममृद्वापिप्र
क्षेप्तव्यंविशुद्धयेत् ८९ ॥

स्प्य(यज्ञ वस्त्र)सूप,चर्म,धान्य,मुसल,उखली,और शकट(गाड़े)
येभी उष्णजलसे शुद्धहोते और बहुतसाअन्न और वस्त्र इकट्ठेहों
तो जलके छीटेहीसे शुद्धहोते हैं ८४ काठ सींग और हड्डियों के
पात्र छीलनेसे (फलकेपात्र गीवालसे और यज्ञमें यज्ञपात्र हाथसे
पोछनेसेही शुद्धहोतेहैं ८५ कंबल,टसरी आदि वस्त्र,रेह,गोमूत्र
और पानीसे शुद्धहोतेहैं वृक्षके छिलकेसे जो वस्त्रबनता है सो
विल्वफल,रेह,गोमूत्र और जलसे और कुतप (दुशालाआदि)रीठी
और रेहआदि तीनोंचीजोंसे शुद्धहोतेहै ८६ अतसीके सूतसे बना
वस्त्र पीले सरसों और गोमूत्रआदिसे शुद्धहोता है मिट्टी कावर्तन
फिर पकानेसे शुद्धहोताहै कारु (शिल्पी,धोवी,रंगरेजआदि)काहा
थ,विक्रीकीचिज,भिक्षा और भोगकालमे स्त्रीकामुख ये सदापवि-
त्रहैं ८७ भूमिको शुद्ध मार्जन (झाडूदेना)जलाना,काल (कुछदिन
वीतनेसे)गौकेवैठनेसे,पानीछिड़कनसे,खननेसे औरलेपनेसेहोतीहै
और घरमार्जन और लेपनहीसेशुद्धहोताहै८८ जिसखानेकीचीज
को गोसूंघले और जिसमें मक्खी,वाल वा कोई कृमिपड़गयाहो
तो उसकी शुद्धि जल भस्म वा मिट्टी डालने से होतीहै ८९ ॥

त्रपुसीसंकताम्राणांक्षाराम्लोदकवारिभिः॥भस्माद्भिःकांस्य
लोहानांशुद्धिःप्लावोद्रवस्यतु ९० अमेध्याक्तस्यमृत्तोयैःशु
द्धिर्गंधादिकर्षणात्॥ वाक्शस्तमंबुनिर्णिक्तमज्ञातंचसदाशु
चि ९१ शुचिगोतृप्तिकृत्तोयंप्रकृतिस्थंमहीगतम्॥ तथामां
सङ्चचांडालक्रव्यादादिनिपातितम् ९२ रश्मिरग्नीरजश्छा
यागौरश्वोबसुधानिलः॥ विप्रुषोमक्षिकास्पर्शेवत्सःप्रस्रव
णेशुचिः ९३ अजाश्वयोर्मुखंमेध्यंनगौर्ननरजामलाः॥पंथा
नश्चविशुध्यंतिसोमसूर्यांशुमारुतैः ९४ मुखजाविप्रुषोमेध्या
स्तथाचमनबिंदवः॥ श्मश्रुचास्यगतंदंतसक्तंत्यक्त्वाततः
शुचिः ९५॥

पीतल शीशा,और तांबा खारीजल,अम्लजल और शुद्ध जल से पवित्र होते हैं कांसा और लोहा राख और जलसे और जो द्रव वस्तु (तेलवाघीकेसदृश) हो वह तब शुद्ध होता है कि जब पात्र में डालते डालते उसके मुंहसे निकलचले ९० जो वस्तुमलमूत्र आदि अमेध्य से लिप्तहो उसे मृत्तिका और जलसे इतनामले कि लेप और गन्ध दोनों चलेजावें तबवह शुद्ध होता है किसी वस्तु की शुद्धता में संदेह होतो ब्राह्मणके बचन और जलप्रक्षेपसे शुद्ध करना जिसकी अशुद्धतामालूम नहीं वह सदाशुद्धहै९१ पवित्रभूमि पर एक गौके पीने भरभी स्वच्छजल पड़ाहो तो वहशुद्ध है और कुत्ता चाण्डाल,आदि से मारेहुये जन्तुका मांस भी शुद्ध है ९२ किरण,आग,धूल,परछांहीं, गौ,घोड़ा, पृथ्वी, वायु, वाष्पविन्दु और मक्खीका छूजाना ये सदापवित्र है और दुध दोहनीमें बछरापवित्र है९३ बकरे और घोड़ेकामुँह शुद्धहै गौकामुंह और मनुष्यकामल अशुद्धहै राहकी शुद्धि चन्द्रसूर्य्य की किरण और वायुसे होती है ९४ मुखसे निकले थूकके विन्दु और आचमनके भी विन्दुशुद्ध होतेहैं दाढ़ी और मोछके वाल मुंहमें पड़जावें तो अशुद्धनहींहोते दांतमें लगेहुये जूठेको गिरनेपर फेंकदेनेसे मुंह शुद्ध होताहै९५॥

स्नात्वापीत्वाक्षुतेसुप्तेभुक्त्वारथ्येपसर्पणे ॥ आचांतःपुनरा
चामेद्वासोविपरिधायच १६ रथ्याकर्दमतोयानिस्पृष्टान्यंत्य
श्ववायसैः॥मारुतेनैवशुध्यंतिपक्केष्टकचितानिच १७ तपस्त
प्त्वासृजद्ब्रह्माब्राह्मणान्वेदगुप्तये ॥ तृप्त्यर्थंपितृदेवानांधर्म
संरक्षणायच १८सर्वस्यप्रभवाविप्राःश्रुताध्ययनशीलिनः॥
तेभ्यःक्रियापराःश्रेष्ठास्तेभ्योप्यध्यात्मवित्तमाः १९ नविद्य
याकेवलयातपसावापिपात्रता ॥ यत्रवृत्तमिमेचोभेतद्धिपात्रं
प्रकीर्तितम्२००गोभूतिलहिरण्यादिपात्रेदातव्यमर्चितम्।
नापात्रेविदुषाकिंचिदात्मनःश्रेयइच्छता १ विद्यातपोभ्यां
हीनेननतुग्राह्यःप्रतिग्रहः॥गृह्णन्प्रदातारमधोनयत्यात्मान
मेवच २ ॥

सहापानी पीसो छाक खागलीमें चल और वस्त्रपहिन कर दो
वार आचमनकरे ९६ राहके कीचड़ और जलअन्त्यज कुत्ता और
कौवे से छूगयेहों तो वायुसेही शुद्ध होते हैं पक्की ईंटसे वनाहुआ
घर भी वायुसे शुद्ध होताहै ९७ इतिद्रव्यशुद्धिप्रकरणम्॥विधाता
ने धर्म और वेदकी रक्षाके लिये और देवता पितरों की तृप्ति के
निमित्त अपने तपोवलसेब्राह्मणोंकोउत्पन्नकिया९८सवसे ब्राह्मण
श्रेष्ठ हैं उनमें भी वेद पढ़ने वाले उत्कृष्ट हैं उनसे वेद विहित कर्म
करनेवाले और उनसे भी आत्म तत्त्व ज्ञानी उत्तमहैं ९९ केवल
विद्या और तपसे सुपात्र नहीं होता जिसमें विहित कर्मोंका अनु-
ष्ठान और ये भी दोनों (विद्याऔरतप). पायेजायें वही उत्तम
पात्र कहाता है २०० गौ भूमि, तिल और सोना आदि जो वस्तु
देनीहो सो विधिपूर्वक सुपात्रको देवे और अपनी भलाई चाहे तो
जान बूझ कुपात्रको न देवे १जोब्राह्मण विद्या और तपसेहीनहो वह
दान न लेवे क्योंकि दानलेकर वह देनेवाले और अपनेको भी नरक
में लेजाता है २ ॥

दातव्यंप्रत्यहंपात्रेनिमित्तेतुविशेषतः ॥ याचितेनापिदा तव्यंश्रद्धापूतन्तुशक्तितः ३ हेमशृंगीखुरैरौप्यैःसुशीलावस्त्र संयुता ॥ सकांस्यपात्रादातव्याक्षीरिणीगौःसदक्षिणा ४ दातास्याःसर्गमाप्नोतिवत्सरान्रोमसम्मितान् ॥ कपिला चेत्तारयतिभूयश्चासप्तमंकुलम् ५ सवत्सारोमतुल्यानियुगा न्युभयतामुखीं ॥ दातास्याःस्वर्गमाप्नोतिपूर्वेणविधिनादद त् ६ यावद्वत्सस्यपादौद्वौमुखंयोन्यांचदृश्यते ॥ तावद्गौःपृ थिवीज्ञेयायावद्गर्भंनमुंचति ७ यथाकथंचिद्दत्वागांधेनुंवाधे नुमेववा ॥ अरोगामपरिक्लिष्टांदातास्वर्गेमहीयते ८ श्रांत संवाहनंरोगिपरिचर्यासुरार्चनम् ॥ पादशौचंद्विजोच्छिष्ट मार्ज्जनंगोप्रदानवत् ९ ॥

सामर्थ्यहोतो प्रतिदिन सुपात्रकोदानदे यदिकोई ग्रहणआदि निमित्तआपड़े तो विशेषकरके देना और मांगनेपरभी श्रद्धापूर्वक शक्तिके अनुसार देनाचाहिये ३ सोनेसे सींग और रूपेसे खुरमढ़ा के वस्त्र ओढ़ाकर कांसेकीदोहनी समेत सूधीऔर बहुत दूधदेने वाली गौकादानकरे ४ जितने रोम गौके शरीरमें हों उतने वर्ष उसका देनेवाला स्वर्गभोगताहै और गौकपिलाहो तो दाता सात पुरुषोंसमेत तरजाताहै ५ यदि उभयतोमुखी गौकोपूर्वोक्त विधिसे कोई दानकरे तो बछड़े और गौ दोनोंके जितने रोमहों उतनेयुग पर्य्यंत उसका दाता स्वर्गभोगकरताहै ६ ब्यातेसमय जबसेबछरे के दोनोंपांव और मुंह योनिमें देखपड़ें और गर्भसे मुक्तनहो तब तक वह गौ उभयतोमुखी कहलाती और पृथ्वी के समान होती है ७ जिस किसीप्रकारसे लगे न वा ठांठभी गौकोदे परन्तु रोगी और दुबलीनहो तो उसकादेनेवाला स्वर्गमें पूजितहोताहै ८ थके को सुस्थकरना, रोगी की सेवा, देवताका पूजन, द्विजों का पांव धोना और उन्होंके जूंठेकाधोना ये सब गोदान के तुल्य हैं ९ ॥

भूर्दीपांश्चान्नवस्त्रांभस्तिलसर्पिःप्रतिश्रयान् ॥ नैवेशिकंस्वर्णधुर्य्यंदत्वास्वर्गेमहीयते १० गृहधान्याभयोपानच्छत्रमाल्यानुलेपनम्॥यानंवृक्षंप्रियंशय्यांदत्वात्यन्तंसुखीभवेत् ११ सर्वधर्ममयंब्रह्मप्रदानेभ्योधिकंयतः ॥ तद्ददत्समवाप्नोतिब्रह्मलोकमविच्युतम् १२प्रतिग्रहसमर्थोपिनादत्तेयःप्रतिग्रहम् ॥ येलोकादानशीलानांसताताप्नोतिपुष्कलान् १३ कुशाःशाकंपयोमत्स्यागंधाःपुष्पंदधिक्षितिः ॥ मांसंशय्यासनंधानाःप्रत्याख्येयंनवारिच १४ अयाचिताहृतंग्राह्यमपिदुष्कृतकर्मणः ॥ अन्यत्रकुलटापण्ढपतितेभ्यस्तथाद्विपः १५ देवातिथ्यर्चनकृतेगुरुभृत्यार्थमेवच ॥ सर्वतःप्रतिगृह्णीयादात्मवृत्त्यर्थमेवच १६ ॥

भूमि,दीपक,अन्न,वस्त्र, जल,तिल,घी,विदेशीकीआश्रय,गृहस्थाश्रमकेलिये कन्यादान, सुवर्णऔर बलीवर्द इनसबोंकेदेनेसे स्वर्गमेंसुखपाताहै १० गृहदान,धान्यदान,अभयदान,जूता,छाता माला चन्दनआदिअनुलेपन यान,(रथआदि) वृक्ष, किसीके प्रियवस्तुका और शय्याकादानदेनेसे अत्यन्तसुखपाताहै ११ वेद (सबधर्मोंको बतानेसे)सर्वधर्मरूपहै इसलिये वेददानकरे (दूसरेकोपढ़ावेवापढ़ावे)तो ब्रह्मलोकमें अचल बास पाताहै १२जो दानलेनेके योग्य हो परतोभी दानले तो जितनेलोक दानदेनेवाले को मिलते हैं उतने उसेभी मिलते हैं १३ कुशा, शाक, दूध,मछली,सुगन्ध,फूल दही, भूमि मांस, शय्या,आसन, भुने चावल,और जल इनसब में से किसी चीजको कोई देनेलगे तो त्यागनकरना १४ बिनामांगे कोई दुराचारीभी कुछचीज लेआदे तो लेलेना परन्तु व्यभिचारिणी, पतित,नपुंसक और शत्रुकी लाईचीज न लेना१५देवता और अतिथिकी पूजाकेलिये और माता,पिता,गुरू,पुत्र और स्त्री आदि, के भरण पोषणके निमित्त और अपने प्राणरक्षाके लिये सबसे प्रतिग्रह लेना कुछ दोष नहीं १६ इति दानप्रकरणम् ॥

अमावास्याष्टकावृद्धिःकृष्णपक्षोयनद्वयम् ॥ द्रव्यंब्राह्मणसम्पत्तिर्विषुवत्सूर्य्यसंक्रमः १७ व्यतीपातोगजच्छाया ग्रहणंचन्द्रसूर्य्ययोः ॥ श्राद्धंप्रतिरुचिश्चैवश्राद्धकालाःप्रकीर्तिताः १८ अग्र्याःसर्वेषुवेदेषुश्रोत्रियोब्रह्मविद्युवा ॥ वेदार्थविज्ज्येष्ठसामात्रिमधुस्त्रिसुपर्णिकः १९ स्वस्रीयऋत्विक् जामातृयाज्यश्वशुरमातुलाः ॥ त्रिणाचिकेतदौहित्रशिष्य सम्बन्धिबान्धवाः २० कर्मनिष्ठास्तपोनिष्ठाःपंचाग्निर्ब्रह्मचारिणः ॥ पितृमातृपराश्चैवब्राह्मणाःश्राद्धसंपदः २१ रोगीहीनातिरिक्तांगःकाणःपौनर्भवस्तथा ॥ अवकीर्णीकुंड गोलौकुनखीश्यावदन्तकः २२ ॥

अमावास्या अष्टका, (हेमंत और शिशिरऋतु के चारों कृष्णपक्षकी अष्टमी)वृद्धि, (पुत्रजन्मआदि) पितृपक्ष, दोनों अयन,(उत्तरायणदक्षिणायन)द्रव्यऔरब्राह्मणकीसम्पत्ति,मेष और तुलाआदि सब सूर्य्यसंक्रांति १७व्यतीपात (योग) गजछाया (योग विशेष)सूर्य्य और चन्द्रग्रहण और जब श्राद्धकरनेकी अपनेकोरुचि हो ये सब श्राद्धकालहैं १८सब देशपाठियोंमें अग्रगण्य,श्रुताध्ययनसम्पन्न,ब्रह्मज्ञानी,जवान,वेदकाअर्थ जाननेवाला, ज्येष्ठसामानाम एक सामवेदको पढ़नेवाला, त्रिमधु नामक ऋग्वेद एकदेशपाठी ऋग्वेदऔरयजुर्वेदकात्रिसुपर्णनामप्रकरणपढ़नेवाला १९ भागिनेय, ऋत्विज्,कन्यापति,यज्ञकरानेयोग्य,श्वशुर,मातुल,यजुर्वेदकात्रिणाचिकेतनामप्रकरणपढ़नेवाला,कन्यापुत्र,शिष्य,सम्बन्धीऔरबांधव २० अपनेकर्ममेंनिष्ठारखनेवाले, तपस्वी, पंचाग्नि (जिसको सभ्य आवसथ्य औरत्रेताग्निहों) ब्रह्मचारीऔरमातापिताकेभक्तइतनेप्रकारकेब्राह्मणश्राद्धकोसफलकरनेवालेहैं २१ रोगी जिसकाकोई अंग अधिकहोवाकमहो, काणापुनर्भूस्त्रीकापुत्र अवकीर्णी(जिसब्रह्मचारी का व्रतछूटगयाहो) कुंड (पतिकेहोतेहीदूसरेसेउत्पन्नपुत्र) गोलक (पतिमरनेपरदूसरेसेउत्पन्नपुत्र)कुनखी, औरकालेदांतवाला २२ ॥

भृतकाध्यापकःक्लीवःकन्यादूष्यभिशस्तकः ॥ मित्रध्रुक्
पिशुनःसोमविक्रयीपरिविन्दकः २३ मातापितृगुरुत्यागी
कुंडाशीवृषलात्मजः ॥ परपूर्वापतिस्तेनःकर्मदुष्टाश्चनिंदि
ताः २४ निमन्त्रयेतपूर्वेद्युर्ब्राह्मणानात्मवान्शुचिः ॥ तैश्चा
पिसंयतैर्भाव्यंमनोवाक्कायकर्मभिः २५ अपराह्णेसमभ्य
र्च्यस्वागतेनागतांस्तुतान् ॥ पवित्रपाणिराचांतानासनेपूप
वेशयेत् २६ युग्मान्दैवेयथाशक्तिपित्र्येयुग्मांस्तथैवच ॥ परि
स्तृतेशुचौदेशेदक्षिणाप्रवणेतथा २७ द्वौदैवेप्राक्त्रयःपित्र्ये
उदकेकैकमेववा॥मातामहानामप्येवंतंत्रंवावैश्वदेविकं २८॥

वेतनदेकर वा लेके जोपढ़ेपढ़ावे,नपुंसक,कन्याको दूषणलगाने
वाला महापातकयुक्त, मित्रद्रोही, चुगुल, सोमलताकावेचनेवाला
और परिविन्दक (जेठेभाई केरहतेही छोटा व्याहागया २३ निर्दोष
माता,पिता और गुरुआदिको त्यागकरनेवाला,पूर्वोक्त कुण्डकाअन्न
खानेवाला,अधर्मीकापुत्र, पुनर्भूकापति,चोर औरशास्त्र विरुद्धकर्म्म
करनेवाला ये सवब्राह्मण श्राद्धमें निन्दितहैं २४ श्राद्धकेपहिलेदिन
ब्राह्मणोंको निमन्त्रणदेना,इन्द्रियोंका संयम और देहकीपवित्रता
रखनी,निमंत्रितब्राह्मणोंकोभीमनवाणीऔर कायव्यापारकासंयम
करना अवश्यहीचाहिये २५ उन निमंत्रितब्राह्मणोंकोअपराह्णकाल
मेंबुलाकरकोमलवाणीसे पूजाकरनी अपनाहाथशुद्धकरकेउन्हें (पावँ
धुलवाकर)आचमनकरावे और आसनोंपरवैठाले २६ देव (अभ्युद-
यिक)श्राद्धमें अपनीशक्तिकेअनुसार युग्म (इत्यादि समसंख्यायुक्त)
ब्राह्मणोंको और पितृ (पार्वणआदि) श्राद्धोंमें अयुग्म १,३,५,७आदि
ब्राह्मणोंको पवित्र जिसमें आसन विछाहोऔर दक्षिणकीओरझुक-
तीहो ऐसीभूमिपरविठलावे २७ विश्वेदेवोंकी ओर दोब्राह्मणपूर्वमुख
वैठाले और पितरोंकीओर उत्तरमुख तीनब्राह्मणवैठाले अथवादोनों
ओरएकीएकविठलावेइसीप्रकारमातामहीकेश्राद्धमेंभीकरेऔरवैश्व
देवकेब्राह्मणोंका चाहे तन्त्र(दोनोंको एकहीब्राह्मणसे)करले २८ ॥

पाणिप्रक्षालनंदत्वाविष्टरार्थंकुशानपि॥आवाहयेदनुज्ञातोविश्वेदेवासइत्यृचा२९यवैरन्ववकीर्याथभाजनेसपवित्रके शन्नोदेव्यापयःक्षिप्त्वायवोसीतियवांस्तथा ३० यादिव्या इतिमंत्रेणहस्तेष्वर्घ्यंविनिक्षिपेत् ॥ दत्वोदकंगंधमाल्यंधूपदानंसदीपकम् ३१ तथाच्छादनदानंचकरशौचार्थमंबुच ॥ अपसव्यंततःकृत्वापितॄणामप्रदक्षिणम् ३२ द्विगुणांस्तुकुशान्दत्वाह्युशंतस्त्वेत्यृचापितॄन्॥आवाह्यतदनुज्ञातोजपेदायांतुनस्ततः ३३ अपहताइतितिलान्विकीर्यचसमन्ततः ॥ यवार्थास्तुतिलैःकार्याःकुर्य्यादर्घ्यादिपूर्ववत् ३४ दत्वार्घ्यंसंस्रवांस्तेषांपात्रेकृत्वाविधानतः ॥ पितृभ्यःस्थानमसीतिन्युब्जंपात्रंकरोत्यधः ३५

ब्राह्मणों को हाथधुला कर बैठने के लिये कुश देवे तब उनकी आज्ञा लेकर (विश्वेदेवास) इस मन्त्र से आवाहन करना २६ यव प्रक्षेपकरने के अनन्तर पवित्र सहित पात्र में (शन्नोदेवी) इस से जलऔर (यवोसि)'इसमन्त्रसेयवडाले ३० (यादिव्या) इसमन्त्र से ब्राह्मणों के हाथ में अर्घडालना तवशुद्धजल, चन्दन माला, धूप और दीपदेना ३१ आच्छादन के अर्थ वस्त्र और हाथ धोने को जल भी देवे अनन्तर अपसव्य करके पितरों को वामावर्त्त से ३२ दोहरेकुशों का आसनआदि देके (उशन्तस्त्वा) इसमन्त्र से पितरोंका आवाहन ब्राह्मणों की आज्ञालेकरकरे इस के अनन्तर (आयन्तुनः) इसमंत्रको जपे ३३ (अपहता) इस मंत्र से चारोंओर तिलछिड़कना यवकेवदले, तिल काममें लाना और अर्घ्यआदि पहले के सदृश करना ३४ ब्राह्मणों के हाथमें अर्घ देना और उन के हाथ से जो जल चुवे उसे पात्र में रोप के विधिपूर्वक उस पात्र को पितृभ्यः स्थानमसि ऐसा कहके औंधा करदेना ३५ ॥

अग्नौकरिष्यन्नादायपृच्छत्यन्नंघृतप्लुतम्॥कुरुष्वेत्यभ्यनुज्ञातोहुत्वाग्नौपितृयज्ञवत् ३६ हुतशेषंप्रदद्यात्तुभाजनेषुसमाहितं॥यथालाभोपपन्नेषुरौप्येषुचविशेषतः ३७ दत्वान्नंपृथिवीपात्रमितिपात्राभिमंत्रणम्॥कृत्वेदंविष्णुरित्यन्नेद्विजांगुष्ठंनिवेशयेत् ३८ सव्याहृतिकांगायत्रींमधुवाताइतित्र्यृचम् ॥ जप्त्वायथासुखंवाच्यंभुंजीरंस्तेपिवाग्यताः ३९ अन्नमिष्टंहविष्यंचदद्यादक्रोधनोत्वरः ॥ आतृप्तेस्तुपवित्राणिजप्त्वापूर्वजपंतथा ४० अन्नमादायतृप्ताःस्थशेषंचैवानुमान्यच ॥ तदन्नंविकिरेद्भूमौदद्याच्चापःसकृत्सकृत् ४१ सर्वमन्नमुपादायसतिलंदक्षिणामुखः ॥ उच्छिष्टसन्निधौपिण्डान्दद्याद्वैपितृयज्ञवत् ४२

अग्नौकरणकेलिये घीसेआर्द्रभीगाअन्नलेके पूछना जबवे आज्ञादें तो अग्निमें पितृयज्ञकेविधानसेहवनकरना३६हवनसेजोबचे वहअन्नएकाग्रचित्तहोकरभोजनपात्रमेंदेना औरभोजनपात्रविशेषकरके रूपेकाबनाना नहींतोअपनीसामर्थ्य केअनुसारबनाना ३७ भोजन पात्रपर अन्नरखके (पृथिवीपात्र) इसमंत्रसे पात्रकाअभिमंत्रणकरना और (इदंविष्णुः)इसमंत्रसेउसअन्नपर ब्राह्मणकाअंगूठारखदेना ३८ व्याहृतीसहितगायत्रीऔर(मधुवाता)इनतीनोंमंत्रोंकाजप करकेब्राह्मणोंकोसुखपूर्वक भोजनकरनेकोकहना तबवेभीमौनहोके भोजनकरें३९ जोअन्नप्रियलगे औरहविष्य (श्राद्धयोग्य)हो उसे ब्राह्मणोंको तृप्तिपर्य्यन्तक्रोधदूरकरके धीरेधीरेदेतेरहना और पुण्य स्तोत्रोंकापाठकरतेरहनाजबभोजनहोचुकेंतोपूर्वोक्त(व्याहृतिसहितगायत्रीआदिका) जपकरना४०तबकुछकुछसबप्रकारकाअन्नलेके आपलोगतृप्तभये ऐसापूंछे और बचाहुआअन्न उनकी अनुमति से भूमिमें विकरपिण्डदेना अनन्तर ब्राह्मणोंको मुखशुद्धिके निमित्त थोड़ाथोड़ा जलदेना ४१ तब तिलसहित सब अन्नलेकर अपसव्य होके दक्षिणमुंहसे उच्छिष्टकेसमीपहीमें पितरोंको पिण्डदेना४२॥

मातामहानामप्येवंदद्यादाचमनंततः॥स्वस्तिवाच्यंततः कुर्यादक्षय्योदकमेवच ४३ दत्वातुदक्षिणांशक्त्यास्वधाकारमुदाहरेत् ॥वाच्यतामित्यनुज्ञातःप्रकृतेभ्यःस्वधोच्यताम् ४४ ब्रूयुरस्तुस्वधेत्युक्तेभूमौसिंचेत्ततोजलम्॥विश्वेदेवाश्चप्रीयंतांविप्रैश्चोक्तमिदंजपेत् ४५ दातारोनोभिवर्धंतांवेदाःसंततिरेवच॥श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयंचनोस्त्विति ४६ इत्युक्त्वोक्ताप्रियावाचःप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ वाजेवाजइतिप्रीतःपितृपूर्वंविसर्जनम् ४७ यस्मिंस्तेसंस्रवाःपूर्वमर्घ्यपात्रेनिवेशिताः ॥ पितृपात्रंतदुत्तानंकृत्वाविप्रान्विसर्जयेत् ४८ प्रदक्षिणमनुव्रज्यभुंजीतपितृसेवितम्॥ब्रह्मचारीभवेत्तांतुरजनींब्राह्मणैःसह ४९ ॥

इसीप्रकारसे मातामहआदिकोभीदेना तब आचमनदेना इसके उपरान्त स्वस्तिवाचन और अक्षय्य उदकभीदेना ४३ अपनीशक्ति के अनुसारदक्षिणादेके स्वधावाचनकीआज्ञाब्राह्मणोंसेलेकरपितरों और मातामहादिकोंसे स्वधा उच्चारणकराना ४४ जब वे स्वधाकहचुकें तो भूमिपर जलछिड़कना और विश्वेदेवा प्रसन्नहों ऐसाकथनकरना फिर ब्राह्मणोंकी आज्ञापाकरके ४५ हमारेकुलमें दाता लोगोंकी वेद और सन्ततिकी बढ़तीहो हमलोगोंके मनसे श्रद्धादूर नहो और हमलोगोंको दानयोग्य पदार्थ बहुतहोवें ऐसी आशिषा मांगे ४६ अनन्तर मधुरवाणीकहकर नमस्कारकरके प्रसन्नमनसे (वाजेवाजे)इस मंत्रकोपढ़कर पहिले पितरोंका तब विश्वेदेवोंका बिसर्जनकरे ४७ जिन पितृपात्रोंको ब्राह्मणोंके हाथसेगिरेहुये जल सहितलेके औंधाकियाथा उनको उतानकरके ब्राह्मणोंका विसर्जनकरे ४८ अनन्तर अपनीसीमातक उन्हे पहुंचाकर जब उनकी आज्ञाहो तो उनकी प्रदच्छिणाकर फिरआकेश्राद्धशेषअन्नकाभोजनकरेऔरउसरातश्राद्धकर्ताऔरश्राद्धब्राह्मणब्रह्मचारीहोकेरहै४६।

अग्नौकरिष्यन्नादायपृच्छत्यन्नंघृतप्लुतम्॥कुरुष्वेत्यभ्य
नुज्ञातोहुत्वाग्नौपितृयज्ञवत् ३६ हुतशेषंप्रदद्यात्तुभाजनेषु
समाहितं॥यथालाभोपपन्नेषुरौप्येषुचविशेषतः ३७ दत्वान्नं
पृथिवीपात्रमितिपात्राभिमंत्रणम्॥कृत्वेदंविष्णुरित्यन्नेद्विजां
गुष्ठंनिवेशयेत् ३८ सव्याहृतिकांगायत्रींमधुवाताइतित्र्यृच
म् ॥ जप्त्वायथासुखंवाच्यंभुंजीरंस्तेपिवाग्यताः ३९ अन्न
मिष्टंहविष्यंचदद्यादक्रोधनोत्वरः ॥ आतृप्तेस्तुपवित्राणि
जप्त्वापूर्वजपंतथा ४० अन्नमादायतृप्ताःस्थशेषंचैवानुमा
न्यच ॥ तदन्नंविकिरेद्भूमौदद्याच्चापःसकृत्सकृत् ४१ सर्व
मन्नमुपादायसतिलंदक्षिणमुखः ॥ उच्छिष्टसन्निधौपिण्डा
न्दद्याद्वैपितृयज्ञवत् ४२

अग्नौकरणकेलिये घीसेआर्द्रभीगाअन्नलेके पूछना जबवे आज्ञादें तो अग्निमें पितृयज्ञकेविधानसेहवनकरना ३६ हवनसेजोबचे वहअन्नएकाग्रचित्तहोकरभोजनपात्रमेंदेना औरभोजनपात्रविशेषकरके रूपेकाबनाना नहींतोअपनीसामर्थ्य केअनुसारबनाना ३७ भोजन पात्रपर अन्नरखके (पृथिवीपात्र) इसमंत्रसे पात्रकाअभिमंत्रणकरना और (इदंविष्णुः)इसमंत्रसेउसअन्नपर ब्राह्मणकाअंगूठारखदेना ३८ व्याहृतीसहितगायत्रीऔर(मधुवाता)इनतीनोंमंत्रोंकाजप करकेब्राह्मणोंकोसुखपूर्वक भोजनकरनेकोकहना तबवेभीमौनहोके भोजनकरें ३९ जोअन्नप्रियलगे औरहविष्य (श्राद्धयोग्य)हो उसे ब्राह्मणोंको तृप्तिपर्य्यन्तक्रोधदूरकरके धीरेधीरेदेतेरहना और पुण्य स्तोत्रोंकापाठकरतेरहनाजबभोजनहोचुकेंतोपूर्वोक्त(व्याहृतिसहितगायत्रीआदिका) जपकरना ४० तबकुछकुछसबप्रकारकाअन्नलेके आपलोगतृप्तभये ऐसापूंछे और बचाहुआअन्न उनकी अनुमति से भूमिमें विकरपिण्डदेना अनन्तर ब्राह्मणोंको मुखशुद्धिके निमित्त थोड़ाथोड़ा जलदेना ४१ तब तिलसहित सब अन्नलेकर अपसव्य होके दक्षिणमुंहसे उच्छिष्टकेसमीपहीमें पितरोंको पिण्डदेना ४२॥

मातामहानामप्येवंदद्यादाचमनंततः॥स्वस्तिवाच्यंततः
कुर्यादक्षय्योदकमेवच ४३ दत्वातुदक्षिणांशक्त्यास्वधा
कारमुदाहरेत्॥वाच्यतामित्यनुज्ञातःप्रकृतेभ्यःस्वधोच्यता
म् ४४ ब्रूयुरस्तुस्वधेत्युक्तेभूमौसिंचेत्ततोजलम्॥विश्वेदेवा
श्चप्रीयंतांविप्रैश्चोक्तमिदंजपेत् ४५ दातारोनोभिवर्धंतांवे
दाःसंततिरेवच॥श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयंचनोस्त्विति४६
इत्युक्त्वोक्त्वाप्रियावाचःप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ वाजेवाजइति
प्रीतःपितृपूर्वंविसर्जनम् ४७ यस्मिंस्तेसंस्रवाःपूर्वमर्घ्य
पात्रेनिवेशिताः ॥ पितृपात्रंतदुत्तानंकृत्वाविप्रान्विसर्जये
त् ४८ प्रदक्षिणमनुव्रज्यभुंजीतपितृसेवितम्॥ब्रह्मचारीभ
वेत्तांतुरजनींब्राह्मणैःसह ४९ ॥

इसीप्रकारसे मातामहआदिकोभीदेना तब आचमनदेना इसके उपरान्त स्वस्तिवाचन और अक्षय्य उदकभीदेना ४३ अपनीशक्तिके अनुसारदक्षिणादेके स्वधावाचनकीआज्ञाब्राह्मणोंसेलेकरपितरों और मातामहादिकोंसे स्वधा उच्चारणकराना ४४ जब वे स्वधाकहचुकें तो भूमिपर जलछिड़कना और विश्वेदेवा प्रसन्नहों ऐसाकथनकरना फिर ब्राह्मणोंकी आज्ञापाकरके ४५ हमारेकुलमें दाता लोगोंकी वेद और सन्ततिकी बढ़तीहो हमलोगोंके मनसे श्रद्धादूर नहो और हमलोगोंको दानयोग्य पदार्थ बहुतहोवें ऐसी आशिषा मांगे ४६ अनन्तर मधुरवाणीकहकर नमस्कारकरके प्रसन्नमनसे (वाजेवाजे)इस मंत्रकोपढ़कर पहिले पितरोंका तब विश्वेदेवोंका बिसर्जनकरे ४७ जिन पितृपात्रोंको ब्राह्मणोंके हाथसेगिरेहुये जल सहितलेके औंधाकियाथा उनको उतानकरके ब्राह्मणोंका बिसर्जनकरे ४८ अनन्तर अपनीसीमातक उन्हें पहुंचाकर जब उनकी आज्ञाहो तो उनकी प्रदक्षिणाकर फिरआकेश्राद्धशेषअन्नकाभोजनकरेऔरउसरातश्राद्धकर्ताऔरश्राद्धब्राह्मणब्रह्मचारीहोकेरहैं४९।

एवंप्रदक्षिणावृत्कोवृद्धौनांदीमुखान्पितॄन् ॥ यजेतदधि
कर्कंधुमिश्रान्पिण्डान्यवैःक्रियाः ५० एकोद्दिष्टंदैवहीनमे
कार्घ्यैकपवित्रकम्॥आवाहनाअग्नौकरणरहितंह्यपसव्यव
त् ५१ उपतिष्ठतामक्षय्यस्थानेविप्रविसर्जने ॥ अभिरम्य
तामितिवदेत्ब्रूयुस्तेभिरताःस्मह ५२ गन्धोदकतिलैर्युक्तं
कुर्य्यात्पात्रचतुष्टयम् ॥ अर्घ्यार्थंपितृपात्रेषुप्रेतपात्रंप्रसिंच
येत् ५३ येसमानाइतिद्वाभ्यांशेषंपूर्ववदाचरेत् ॥ एतत्सपि
ण्डीकरणमेकोद्दिष्टंस्त्रियाअपि ५४ अर्वाक्सपिण्डीकरणंय
स्यसंवत्सराद्भवेत् ॥ तस्याप्यन्नंसोदकुंभंदद्यात्संम्वत्सरंद्वि
जे ५५मृतेहनितुकर्त्तव्यंप्रतिमासन्तुवत्सरम् ॥ प्रतिसम्वत्स
रञ्चैवमाद्यमेकादशेहनि ५६ ॥

इसीप्रकार वृद्धि(पुत्रजन्मआदि)होनेपर नान्दीमुख पितरोंकी पूजा दक्षिणावर्तसेकरनी दही और कदलीफल सहित पिण्डदेना और तिलके काम यवसेकरना ५० एकोद्दिष्टश्राद्धमें विश्वेदेव नहीं होते एकही अर्घपात्र और एकही पवित्रहोताहै आवाहन और अग्नौकरण नहीं होता जितनी क्रिया कीजातीहैं सब अपसव्यसे ५१ अक्षय्यकेबदलेउपतिष्ठताम् और ब्राह्मणोंके विसर्जनकेबदले अभिरम्यतां (आपआनन्दकरें) ऐसा कहना और वेभीकहें कि अभिरत (आनन्दभये) ५२ चन्दन जल और तिलसहित चारपात्र अर्घके लिये बनाना और प्रेतपात्रसे पितरोंके पात्रमें ५३ येसमाना इन दोनोंऋचाओंसे जलसेकरना शेषक्रिया सबपूर्ववत् करनी यह सपिण्डीकरण कहलाताहै एकोद्दिष्टश्राद्ध स्त्रीका भी होताहै ५४ यदिकिसीद्विजकासपिण्डीकरणवर्षसेपहिलेहीहुआहोतोभीउसको वर्षपर्य्यन्त जल पूर्णघट और अन्नदेतेहीरहना ५५ मासिकश्राद्धहर महीने जिसतिथिमेंदेहत्यागहुआहोउसीमेंकरना और वार्षिकश्राद्ध भी मरणतिथिमेंहरवर्षकरनाऔरआद्यश्राद्ध ग्यारहेंदिनकरना ५६ ॥

पिण्डास्तुगोजविप्रेभ्योदद्यादग्नौजलेपिवा ॥ प्रक्षिपे
त्सत्सुविप्रेषुद्विजोच्छिष्टंनमार्जयेत् ५७ हविष्यान्नेनवैमासं
पायसेनतुवत्सरम् ॥ मात्स्यहारिणकौरभ्रशाकुनच्छागपा
र्षतैः ५८ एणरौरववाराहशाशैर्मांसैर्यथाक्रमम् ॥ मासवृद्धा
भितृप्यन्तिदत्तैरिहपितामहा ५९ खड्गामिषमहाशल्कंमधु
मुन्यन्नमेवच ॥ लोहामिषंमहाशाकमांसंवार्ध्रीणसस्यच ६०
यद्ददातिगयास्थश्चसर्वमानन्त्यमश्नुते ॥ तथावर्षात्रयोद
श्यांमघासुचविशेषतः ६१ कन्यांकन्यावेदिनश्चपशून्वैसत्सु
तानपि ॥ द्यूतंकृषिंचवाणिज्यंद्विशफैकशफंस्तथा ६२ ब्रह्म
वर्चस्विनःपुत्रान्स्वर्णरूप्येसकुप्यके ॥ जातिश्रैष्ठ्यसर्वकामा
नाप्नोतिश्राद्धदःसदा ६३ ॥

गौ बकरा वा ब्राह्मणको पिण्डदेना अथवा अग्नि वा जलमें फेंक देना और ब्राह्मणोंके रहतेही उनका जूंठा न उठाने लगना ५७ हविष्यअन्नसे महीनेभर और पायस से एक वर्ष और मछली, हिरण, उरभ्र (भेडा) पक्षी बकरा, पृषत् (चित्रमृग) ५८ एण (काला मृग) रुरु (सावर शूकर और खरहे) इनके मांस से श्राद्धकरने में पितर लोग क्रमसे एकएक महीना अधिक तृप्तरहते हैं ५९ गैंडा और महाशल्क (मत्स्यविशेष) का मांस, मधु, मुन्यन्न, (तीनीका चावल) लोह (लालबकरे) का मांस, महाशाक(कालाशाक)वार्ध्रीणस(बूढ़ासफेद) बकरे का मांस ६० और गया तीर्थ, वर्षाकालकी त्रयोदशी (भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी और विशेष करके मघामें जो पिण्डदेते इन सबों से निस्सन्देह अनन्त कालतक पितरोकी तृप्ति रहती है ६१ श्राद्ध करनेवाला मनुष्य कन्या, कन्याकावर, अच्छे पशु और पुत्र, द्यूत में विजय, कृषि कर्मका फल, बनिजमें लाभ दोखुरे औरएकखुरेपशु ६२ वेदपाठी पुत्र, सोना,चांदीआदि रत्न जाति में बड़ाई औ अपने सबमनोरथोंको सदा पाता है ६३ ॥

प्रतिपत्प्रभृतिष्वेकांवर्जयित्वाचतुर्दशीम्॥शस्त्रेणतुहताये वैतेभ्यस्तत्रप्रदीयते ६४ स्वर्गंह्यपत्यमोजश्चशौर्यंक्षेत्रंबलं तथा॥ पुत्रंश्रैष्ठ्यंचसौभाग्यंसमृद्धिंमुख्यतांशुभम् ६५ प्रवृत्त चक्रतांचैववाणिज्यप्रभृतीनपि ॥ अरोगित्वंयशोवीतशोकतां परमांगतिम् ६६ धनंवेदान्भिषक्सिद्धिंकुप्यंगाअप्यजावि कम् ॥ अश्वानायुश्चविधिवद्यःश्राद्धंसंप्रयच्छति ६७ कृत्ति कादिभरण्यंतंसकामानाप्नुयादिमान् ॥ आस्तिकःश्रद्दधान श्चव्यपेतमदमत्सरः ६८ वसुरुद्रादितिसुताःपितरःश्राद्ध देवताः ॥ प्रीणयंतिमनुष्याणांपितॄन्श्राद्धेनतर्पिताः ६९ आ युःप्रजांधनंविद्यांस्वर्गंमोक्षंसुखानिच ॥ प्रयच्छंतितथाराज्यं प्रीतानृणांपितामहाः ७० विनायकःकर्मविघ्नसिद्ध्यर्थंविनि योजितः ॥ गणानामाधिपत्येचरुद्रेणब्रह्मणातथा ७१ ॥

प्रतिपत् आदि सब तिथियों में इनको पिण्ड दे एक चतुर्दशी को छोड़दे क्योंकि उसमें जो शस्त्रसे मारेगये उनको दियाजाता है ६४ स्वर्ग, अपत्य, प्रताप, शूरता, भूमि, वल, पुत्र, वड़ाई, सौभाग्य, समृद्धि, मुख्यता, शुभ ६५ राज्य, वणिज, प्रभुताई, आरोग्य यश, शोक नाश, परमगति ६६ धन, विद्या, वैदई की सिद्धि, कुप्य (सोने चांदीसे अन्य धन) गो, वकरी, भेड़, घोड़े, आयुष्य इनसव पदार्थों को जो विधि पूर्वक ६७ कृत्तिकासे ले भरणी पर्य्यन्त श्रद्धा और आस्तिक्यबुद्धि से मद और मत्सर छोड़के श्राद्धकरते वे पाते हैं ६८ वसु, रुद्र, अदिति, सुत और पितर ये श्राद्ध के देवता हैं ये श्राद्धसे तृप्त होकर मनुष्यों के पितरों को तृप्त करते हैं ६९ और जव पितर तृप्तहोते हैं तो मनुष्यों को आयु, पुत्र, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्ष, सुखऔरराज्यदेतेहैं७० इतिश्राद्धप्रकरणम्॥ विष्णु, ब्रह्माऔर रुद्रनेविनायकको कर्म्मकेविघ्न औरशांति और (पुष्पदन्तआदि) गणोंके आधिपत्यमें नियुक्त किया है ७१ ॥

तेनोपसृष्टोयस्तस्यलक्षणानिनिबोधत ॥ स्वप्नेवगाहते
त्यर्थंजलंमुंडांश्चपश्यति ७२ काषायवाससश्चैवक्रव्यादां
श्चाधिरोहति ॥ अन्त्यजैर्गर्दभैरुष्ट्रैःसहैकत्रावतिष्ठते ७३ व्रज
न्नपितथात्मानंमन्यतेनुगतंपरैः ॥ विमनाविफलारम्भःसंसी
दत्यनिमित्ततः ७४ तेनोपसृष्टोलभतेनराज्यंराजनन्दनः ॥
कुमारीचनभर्त्तारमपत्यंगर्भमंगना ७५ आचार्य्यत्वंश्रोत्रिय
श्चनशिष्योध्ययनन्तथा ॥ वणिग्लाभंनचाप्नोतिकृषिंचापिकृ
षीबलः ७६ स्नपनन्तस्यकर्तव्यंपुण्येह्निविधिपूर्वकम् ॥ गौ
रसर्षपकल्केनसाज्येनोत्सादितस्यच ७७ सर्वौषधैःसर्वग-
न्धैर्विलिप्तशिरसस्तथा ॥ भद्रासनोपविष्टस्यस्वस्तिवाच्या
द्विजाःशुभाः ७८ ॥

उस विनायक से जो उपसृष्ट (गृहीत) हैं उनके लक्षण सुनो जलमें अत्यन्त स्नानकरनेका स्वप्न और मुण्डित मनुष्योंकास्वप्न देखतेहैं ७२ गेरुआ वस्त्र पहिननेवाले और कच्चामांसखानेवालों की सवारी स्वप्न में करता, अंत्यज, गर्दभ और ऊंट इनके साथ एकजगह बैठनेका स्वप्न देखताहै ७३ और यह भी स्वप्न में देखताहै कि मुझको मेरेशत्रु दौड़ारहेहैं उसका चित्त विक्षिप्तरहता जो कामकरनेलगताहै वह सिद्ध नहीं होता विना कारण दीनमन रहताहै ७४ राजपुत्रहो तो वह राज्य नहीं पाता, कन्याहो तो वह अच्छापति नहीं पाती स्त्रीहो तो उसे गर्भ और अपत्य नहीं प्राप्त होते ७५ श्रोत्रियहो तो वह आचार्य्य नहीं होता शिष्यको पढ़ना नहीं मिलता, वणिकहो तो उसे लाभ नहीं होता और किसान खेतिहरहो तो उसकी खेती अच्छी नहीं लगती ७६ इसवास्ते शुभ दिनमें विधिपूर्व्वक उस मनुष्यको पीलेसरसोंका उवटना घीमिलाकर लगावे ७७ और सर्वौषधी और सर्वगन्धसे उसका शिरमें लेपकरे अनन्तर भद्रासनपर बैठाकरके विद्वान् ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराना ७८ ॥

अश्वस्थानाद्गजस्थानाद्वल्मीकात्संगमाद्ध्रदात् ॥ मृत्तिकांरोचनांगंधान्गुग्गुलंचाप्सुनिक्षिपेत् ७९ याआहृताह्येकवर्णैश्चतुर्भिःकलशैर्ह्रदात् ॥ चर्मण्यानडुहेरक्तेस्थाप्यंभद्रासनंततः ८० सहस्राक्षंशतधारमृषिभिःपावनंकृतम् ॥ तेनत्वामभिषिंचामिपावमान्याःपुनंतुते ८१ भगन्तेवरुणोराजाभगंसूर्य्योबृहस्पतिः ॥ भगमिंद्रश्चवायुश्चभगंसप्तर्षयोदद्युः ८२ यत्तेकेशेषुदौर्भाग्यंसीमंतेयश्चमूर्द्धनि ॥ ललाटेकर्णयोरक्ष्णोरापस्तद्घ्नन्तुसर्वदा ८३ स्नातस्यसार्षपंतैलंस्रुवेणौदुम्बरेणतु ॥ जुहुयान्मूर्धनिकुशान्सव्येनपरिगृह्यतु ८४ मितश्चसंमितश्चैवतथाशालकटंकटौ ॥ कूष्मांडोराजपुत्रश्चेत्यंतेस्वाहासमन्वितैः ८५ ॥

तब घोडशाल, गजशाल, वेमउड़ि, नदीका मुहाना और डेले इनकी मिट्टी, गोरोचन, चन्दन आदि गन्ध और गुग्गुल उसजलमें डालना कि जो जल एकवर्णके चारघड़ोंसे अगाध ह्रदसेलेआये हैं और उनघड़ोंको चारों दिशामें रखके ७९ अनन्तर वृषभके रक्तवर्ण चमड़ेपर(बीचमेंश्रीपर्णीसिवनाहुआ) भद्रासनस्थापनकरना ८० (पूर्वादिक्रम से एक २ कलशलेकर गुरु अभिषेककरे तीनकलशोंके तीनमंत्रहैं (चौथेमें ये तीनोंपढ़ेजातेहैं) जिस अनेकशक्ति और अनेक प्रवाहजलको ऋषियोंने पवित्रबनायाहै उससेतुम्हारा अभिषेककरतेहैं पवित्रकरनेवाले येजल तुझेपवित्रकरें ८१ तुमकोराजा वरुण, सूर्य्य, बृहस्पति, इन्द्र, वायु और सप्तर्षियोंने कल्याणदिया ८२ तुम्हारेकेश, सीमन्त, मूर्द्धा, ललाट, कान औरआंखोंमें जो दौर्भाग्यहैं सो सर्व्वदा ये जल नाशकरें ८३ इसप्रकार स्नानकरचुके तो वामहस्तसे कुशाशिरपररखके उदुम्बरके श्रुवसे सरसोंकातेल दहिनेहाथसे हुने ८४ हवनका मंत्र यहहै मित, सम्मित, शाल, कटंकट कूष्माण्ड और राजपुत्र इननामोंके अन्तमें स्वाहालगरकेहुनना ८५ ॥

नामभिर्बलिमन्त्रैश्चनमस्कारसमन्वितैः ॥ दद्याश्चतुष्प
थेशूर्पेकुशानास्तीर्य्यसर्वतः ८६ कृताकृतांस्तंदुलांश्चपललौ
दनमेवच॥मत्स्यान्पक्कांस्तथैवामान्मांसमेतावदेवतु८७पुष्पं
चित्रंसुगंधंचसुरांचत्रिविधामपि ॥ मूलकंपूरिकापूपंतथैवो
ण्डेरकःस्त्रजः ८८ दध्यन्नपायसंचैवगुडपिष्टंसमोदकम्॥एता
न्सर्वान्समाहृत्यभूमौकृत्वाततःशिरः ८९ विनायकस्यजन
नीमुपतिष्ठेत्ततोम्बिकां॥ दूर्वासर्षपपुष्पाणांदत्वार्घ्यंपूर्णमंज
लिम् ९० रूपंदेहियशोदेहिभगभंवतिदेहिमे॥पुत्रान्देहिधनं
देहिसर्वकामांश्चदेहिमे ९१ ततःशुक्लाम्बरधरःशुक्लमाल्या
नुलेपनः ॥ ब्राह्मणान्भोजयेद्दद्याद्वस्त्रयुग्मंगुरोरपि ९२ ॥

अनन्तर बलिदानके मन्त्र और नमस्कारसहित (अग्निमेंचरु पकाकर उसीअग्निमें इन्हींपूर्वोक्त छःमंत्रोंसे हवनकरनेसे जो बचै उसे) बलिदेवे तब चौराहेमें सूपपर चारोंओर कुशाफैलाकर ८६ कृताकृत तन्दुल पललौदन (तिलपिष्टसहित ओदन) पक्की कच्ची मछली और ऐसाही और मांस ८७ चित्रविचित्र पुष्प (चन्दन आदि) सुगन्ध, तीनोंप्रकारकी मदिरा, मूली, पूरी, पुआ उण्डेरक (छोटे २ रोट) की माला ८८ दध्यन्न, पायस गुड़पिष्ट और लड्डू इनसवों को ले भूमि में शिर लगाके ८६ विनायक की माता अम्बिकाको नमस्कार करे और दूवसरसों और पुष्प से पहिले अर्घदेके फिर पूर्णांजलिदेना ६० उपस्थान का मंत्र यह है देविमुझको रूप, यश, कल्याण,पुत्र धन और सर्वमनोरथ मनोकामना सिद्धकरदे ६१ तब श्वेतवस्त्र और मालापहिन कर और चन्दन लगाके ब्राह्मणों को भोजन करावे तथा गुरुको दोवस्त्र दक्षिणा देनी ६२ ॥

एवंविनायकंपूज्यग्रहांश्चैवविधानतः ॥कर्मणांफलमाप्नो
तिश्रियंचाप्नोत्यनुत्तमाम् ९३ आदित्यस्यसदापूजांतिलकं
स्वामिनस्तथा ॥ महागणपतेश्चैवकुर्वन्सिद्धिमवाप्नुया-
त् ९४ श्रीकामःशांतिकामोवाग्रहयज्ञंसमाचरेत् ॥ वृष्ट्या
युःपुष्टिकामोवातथैवाभिचरन्नपि ९५ सूर्य्यःसोमोमहीपुत्रः
सोमपुत्रोवृहस्पतिः ॥ शुक्रःशनैश्चरोराहुःकेतुश्चेतिग्रहाः
स्मृताः ९६ ताम्रकात्स्फाटिकाद्रक्तचन्दनात्स्वर्णकादुभौ ॥
राजतादयसःसीसात्कांस्यात्कार्य्याग्रहाःक्रमात् ९७ स्वव
र्णैर्वापटेलेख्यागन्धैर्मंडलकेषुवा ॥ यथावर्णंप्रदेयानिवासां
सिकुसुमानिच ९८ गन्धाश्चबलयश्चैवधूपोदेयश्चगुग्गु
लुः ॥ कर्तव्यामन्त्रवन्तश्चचरवःप्रतिदैवतम् ९९ ॥

इसविधानसे विनायककी पूजाकरके अपने शुभकर्मका फल पाताहै और धनकीइच्छासे पूजाकरे तो अत्यन्तधनपाताहै यही फल ग्रहपूजासे भी होता है (और उनकेपूजाका प्रकार आगे लिखाजाताहै) ६३ सूर्य्य,स्वामिकार्तिक और महागणपति की नितनितपूजाकरने और इनको (सोनेवाचांदीका) तिलककाढ़ने से सिद्धि (आत्माज्ञानसेमोक्ष)पाताहै ६४ इतिगणपतिकल्पः ॥ धन,शांति,वृष्टि,आयु औरपुष्टि तथाशत्रुकेऊपर घातकरनेकीइच्छा होतोग्रहोंकीपूजाकरे ६५सूर्य्य,चन्द्र, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र शनि,राहुऔरकेतुयेनवग्रहहैं ६६ इनकीमूर्तिक्रमसे तांबे, स्फटिक रक्तचन्दन, सुवर्ण, चांदी,लोहा, सीसाऔर कांसासेवनानीपरन्तु सोनेकी दोमूर्ति वनानीचाहिये तोनवहोतेहैं६७अथवा अपनेअपने वर्णके अनुसार वस्त्रपर वामण्डलकमें चन्दनआदि सुगन्धितद्रव्य सेलिखनाऔरजिसकाजैसावर्ण उसकोउसीप्रकारकेवस्त्र,पुष्प ६८ चन्दनऔर वलिदेना धूप गुग्गुलकीसबोंकोदेना हरएकप्रतिग्रहोंके लिये मन्त्रपूर्वक चरुबनाना ६६ ॥

आकृष्णेनइमंदेवाअग्निमूर्द्धादिवःककुत् ॥ उद्बुध्यस्वेति चर्च्चोयथासंख्यंप्रकीर्त्तिताः ३०० बृहस्पतेअतिमदर्यस्त थैवान्नात्परिश्रुतः ॥ शन्नोदेवीस्तथाकांडात्केतुंकृण्वन्निमांस्त था १ अर्कःपलाशःखदिरोह्यपामार्गोथपिप्पलः ॥ औदुंब रःशमीदूर्वाकुशाश्चसमिधःक्रमात् २ एकैकस्यत्वष्टशतमष्टा विंशतिरेवच ॥ होतव्यामधुसर्प्पिभ्यांदध्नाक्षीरेणवायुताः ३ गुडौदनंपायसंचहविष्यंक्षीरषाष्टिकम् ॥ दध्योदनंहविश्चूर्णं मांसंचित्रान्नमेवच ४ दद्याद्ग्रहक्रमादेवद्विजेभ्योभोजनंद्वि जः ॥ शक्तितोवायथालाभंसत्कृत्यविधिपूर्वकम् ५ धेनुः शंखस्तथानड्वान्हेमवासोहयःक्रमात् ॥ कृष्णागौरायसं छागएतावैदक्षिणाःस्मृताः ६ ॥

समिध होम करनेके मंत्र क्रमसे आकृष्णेन, इमंदेवा अग्निमूर्द्धा, दिवःककुत, उद्बुध्यस्व, ३०० बृहस्पते अतिदर्यः अन्नात्परिस्नुतः,शन्नोदेवीः काण्डात् और केतुंकृण्वन् ये नव हैं १ अर्क पलाश,.खादिर, अपामार्ग, पिप्पल, उदुम्बर,शमी,दूर्वा, और कुश ये सूर्य्यादिग्रहोंकी क्रमसे समिधाहैं २ प्रत्येक ग्रहोंकी आठ आठ सौ वा अट्ठाईस अट्ठाईस समिधा मधु घी दही और दूधसे भिगोकर हवनकरना ३ मीठाभात, खीर हविष्य (तीनीकाभात) साठी का भात और दूध दही, भात घी,भात खंडभात, मांसभात और विचित्रवर्णके भात.४ ये भोजन सूर्य्य आदि ग्रहों के लिये क्रमसे ब्राह्मणको देना वा अपनी शक्तिके अनुसार जो मिलजाय वही ब्राह्मणों को विधिपूर्वक सत्कारकरके देना ५ धेनु, शंख, बलीवर्द, सुवर्ण (पीत) वस्त्र, पांडुर, घोड़ा, कालीगौ, छूरीआदि लोहेकी (चीज़) और बकरा ये सूर्य्य आदि ग्रहों के क्रम से दक्षिणाहैं ६ ॥

यश्चयस्ययदातुष्टःसतंयत्नेनपूजयेत् ॥ ब्रह्मणैषांवरोद त्तःपूजितापूजयिष्यथ ७ ग्रहाधीनांनरेन्द्राणामुच्छ्रायाःपत नानिच ॥ भावाभावौचजगतस्तस्मात्पूज्यतमाग्रहाः ८ म होत्साहःस्थूललक्ष्यःकृतज्ञोवृद्धसेवकः ॥ विनीतःसत्यसम्प न्नःकुलीनःसत्यवाक्शुचिः ९ अदीर्घसूत्रःस्मृतिमानक्षुद्रो परुषस्तथा ॥धार्म्मिकोऽव्यसनश्चैवप्राज्ञःशूरोरहस्यवित् १० स्वरन्ध्रगोप्तान्वीक्षिक्यांदण्डनीत्यांतथैवच ॥ विनीतस्त्वथ वार्त्तायांत्रय्यांचैवनराधिपः ११ समंत्रिणःप्रकुर्व्वीतप्राज्ञा न्मौलान्स्थिरान्शुचीन् ॥ तैःसार्द्धंचिन्तयेद्राज्यंविप्रेणाथ ततस्स्वयम् १२ ॥

जिसको जो ग्रह जब प्रतिकूलहो तो वह उस ग्रहकी पूजाकरे ब्रह्माने इन्हें वरदियाहै कि जो इनको पूजेगा उन्हें येभी तुष्टकरें- गे ७ राजाओंकी बढ़ती और घटती ग्रहों के आधीनहै औरजगत् की उत्पत्ति और विनाशभी इन्ही के आधीनहै इसलिये इनकी पूजा भलीभांति करनीचाहिये ८ इति शान्तिप्रकरणम् ॥ महाउ- त्साही, स्थूललक्ष्य (अत्यन्तदाता) कृतज्ञ (उपकारमाननेवाला) वृद्धसेवी, विनययुक्त, सदा एकरस कुलीन, सत्यवादी, पवित्र ९ अदीर्घसूत्री (झटपटकामकरनेवाला) स्मृतिमान् (जिसे बात नभूले)अक्षुद्रकड़ीबात न कहेधार्मिक,अव्यसनी,पण्डित,शूर,रहस्य जाननेवाला १० राज्यप्रबन्धकी शिथिलताका रक्षणकरनेवाला आत्मविद्या और राजनीतिमें निपुण, लाभकेउपाय और तीनों वेद में प्रवीण ऐसा राजाको होनाचाहिये ११ वह राजा अपने मंत्री ऐसेकरे जो पण्डित, कुलीन, धीर और पवित्रहों उनकेसाथ अथवा ब्राह्मणके साथ राजकाज देखे अनन्तर एकान्त में बैठे अपनेआप विचारे १२ ॥

पुरोहितंप्रकुर्व्वीतदैवज्ञमुदितोदितं ॥ दण्डनीत्यांचकुशलमथर्वांगिरसेतथा १३ श्रौतस्मार्त्तक्रियाहेतोर्वृणुयादेवचर्त्विजः ॥ यज्ञांश्चैवप्रकुर्व्वीतविधिवद्भूरिदक्षिणान् १४ भोगांश्चदत्वाविप्रेभ्योवसूनिविविधानिच ॥ अक्षयोयंनिधीराज्ञांयद्विप्रेषूपपादितम् १५ अस्कन्नमव्यथंचैवप्रायश्चित्तैरदूषितम् ॥ अग्नेःसकाशाद्विप्राग्नौहुतंश्रेष्ठमिहोच्यते १६ अलब्धमीहेद्धर्म्मेणलब्धंयत्नेनपालयेत् ॥ पालितंवर्द्धयेन्नीत्यावृद्धम्पात्रेपुनिःक्षिपेत् १७ दत्वाभूमिंनिबन्धंवाकृत्वालेख्यंतुकारयेत् ॥ आगामिभद्रनृपतिपरिज्ञानायपार्थिवः १८ ॥

ज्योतिषशास्त्र जाननेवाला, सबशास्त्रों से समृद्ध अर्थशास्त्रों में कुशल और शान्तिआदि कर्म्म अथर्वांगिरसमें जो निपुणहो उसको राजा अपनापुरोहितबनावे १३ श्रौत (अग्निहोत्रआदि) और स्मार्त (औरपासनआदि) क्रियाकरनेकेनिमित्त ऋत्विजोंका वर्ण करे और विधिपूर्वक राजसूयआदि यज्ञ बहुत बहुत दक्षिणादेकर करे १४ ब्राह्मणोंको सुखभोग और धनदेवे क्योंकि जो ब्राह्मणको राजादेता वह उसका अक्षयनिधि (धनकी खानि है १५ अग्नि में हवन कुछकरने (यज्ञकरने) की अपेक्षा ब्राह्मणरूपी अग्निमें हवन (दान) करना श्रेष्ठहै क्योंकि ब्राह्मणको दानदेनेमें किसीविधि की भूलजानेकी शंकानहींरहती पशुघात नहींहोता और प्रायश्चित्तका आयास नहीं करना पड़ताहै १६ जो धन नहींमिलाहै उसकोधर्म से पानेकाउपायकरे जो मिलचुकाहै उसेयत्नसे सुरक्षितकरे रक्षित धनको नीति से बढ़ाना और जबबढ़े तो सत्पात्रों को दानकरे १७ राजा भूमिदान वा निबन्ध (रोजीना)करेतो लिखदेवे जिससे पीछे होनेवाले धर्म्मी राजा मालूमकरे (कि इतनी भूमि वा वस्तु अमुक को दीगई १८ ॥

पटेवाताम्रपट्टेवास्वमुद्रोपरिचिह्नितम् ॥ अभिलेख्या त्मनोवंश्यानात्मानंचमहीपतिः १९ प्रतिग्रहपरीमाणंदान च्छेदोपवर्णनम् ॥ स्वहस्तकालसम्पन्नंशासनंकारयेत्स्थि रः २० रम्यंपशव्यमाजीव्यंजांगलंदेशमावसेत् ॥ तत्रदु र्गाणिकुर्व्वीतजनकोशात्मगुप्तये २१ तत्रतत्रचनिष्णाता नध्यक्षान्कुशलान्शुचीन् ॥ प्रकुर्य्यादायकर्म्मान्तव्ययक र्म्मसुचोद्यतान् २२ नातःपरतरोधर्म्मोनृपाणांयद्रणार्जि तम् ॥ विप्रेभ्योदीयतेद्रव्यंप्रजाभ्यश्चाभयंसदा २३ येआ हवेषुवध्यन्तेभूम्यर्थमपराङ्मुखाः ॥ अकुटैरायुधैर्यान्तिते स्वर्गंयोगिनोयथा २४॥

(लिखने की विधि यह है कि) दृढ़वस्त्र अथवा ताम्रपात्र पर राजा ऊपर अपनी मुद्रा (मोहर) करके नीचे अपने पुरुषोंकानाम अपनानाम १६ दानकी चीजका परिमाण और स्थावरहो तो उस की सीमाभी, लिखवाकर अपना दस्तखतकरे और मितीभी डाल दे कि जिस में वह पत्र दूसरोंको दृढ़ निश्चयकारक होजावे २० अपने जन, कोश, (खजाना) और शरीरकी रक्षा के लिये राजा ऐसे स्थल से दुर्ग (किला) वनावे कि जो रमणीय हो, पशुओं को वढ़ानेवाला (स्कन्द मूलआदिसे मनुष्यों के जीवनमें सहायतादेवे और जंगल (वन) प्रायहो २१ धर्म्म और अर्थआदि कामोंमें उन उन कामोंके योग्य, जो दूसरा काम न करे, अपने कामों में चतुर हों शुचि रहनेवाले, आय (सोने की खानि आदि) और व्यय (दानदेना) कर्मसेंउद्यत (मुस्तैद) ऐसेअधिकारी वनानेचाहियें२२ इससे वढ़कर कोई धर्मराजाकानहीं कि युद्धसे अर्जितधन ब्राह्म- णद औरअपनीप्रजाको सदाअभयरक्खे २३भूमिके अर्थ जो युद्ध में सन्मुखलड़ते और अकूट (विषआदिजिसमें न लगाहो ऐसे) शस्त्रोंसे मारेजाते वे योगियों के सदृशस्वर्गको प्राप्तहोतेहैं २४ ॥

पदानिक्रतुतुल्यानिभग्नेष्वविनिवर्त्तिनाम् ॥ राजासुकृत
मादत्तेहतानांविपलायिनाम् २५ तवाहंवादिनंक्लीवंनिर्हेतिं
परसंगतम् ॥ नहन्याद्विनिवृत्तंचयुद्धप्रेक्षणकादिकम् २६
कृतरक्षःसमुत्थायपश्येदायव्ययौस्वयम् ॥ व्यवहारांस्ततो
दृष्ट्वास्नात्वाभुंजीतकामतः २७ हिरण्यंव्याप्टतानीतंभाण्डा
गारेषुनिःक्षिपेत् ॥ पश्येचारांस्ततोदूतान्प्रेषयेन्मंत्रिसंगतः
२८ ततःस्वैरविहारीस्यान्मंत्रिभिर्वासमागतः ॥ वलानां
दर्शनंकृत्वासेनान्यासहचिन्तयेत् २९ संध्यामुपास्यशृणु
याच्चाराणांगूढभाषितम् ॥ गीतनृत्यैश्चभुंजीतपठेत्स्वाध्याय
मेवच ३० ॥

अपना दल सब नष्टहोगयाहो उससमय जो शत्रु के सामने युद्धकरनेको जितनेपांवचले उतनेहीअश्वमेधयज्ञकाफल वहपाता है और जो भागतेहैं उनका सब सुकृत राजाकोप्राप्तहोता है २५ जो ऐसाकहे कि हम तुम्हारे हैं नपुंसकहो, निरायुधहो दूसरे के साथ लड़ताहे युद्धसे निवृत्त आताहो और जो युद्ध देखनेआयाहो इन्हें मारना न चाहिये २६ देश और अपनीरक्षाकरके प्रतिदिन प्रातःकाल उठकर आय व्यय (आमदनी,ख़र्च) अपनेआप देखे अनन्तर व्यवहार देखे फिर स्नानकरके यथारुचि भोजनकरे २७ तव हिरण्य आदि वस्तु के लेआने में जो नियुक्तहैं वे जो लेआवें उसको राजा आप देखके भण्डार में रखवादे फिर गुप्त दूतों की वात आपही सुन उनको देख और प्रकटदूतों को मन्त्र के साथ देख उनकी वातें सुन उन्हें फिर भेजे २८ तव तीसरेपहर एकान्त में वा मन्त्रियों के साथ यथेष्ट विहारकरके अपनी सेना (घोड़े हाथी आदि) देखे और सेनापति के साथ सेनाके सुखकी चिंता करे २९ सन्ध्योपासनकरके चारोंका*गुप्तभाषण सुने और नृत्य गीत सुनकर भोजनकरे फिर अपना पाठ पढ़े ३० ॥

*गुप्तदूतोंका

संविशेत्तूर्यघोषेणप्रतिबुद्ध्येत्तथैवच ॥ शास्त्राणिचिंतये
द्बुध्वासर्वकर्त्तव्यतास्तथा ३१ प्रेषयेच्चततश्चारान्स्वेष्वन्येषु
चसादरान् ॥ऋत्विक्पुरोहिताचार्य्यैराशीभिरभिनंदितः३२
दृष्टाज्योतिर्विदोवैद्यान्दद्याद्गांकांचनंमहीम् ॥ नैवेशिकानि
चततःश्रोत्रियेभ्योगृहाणिच ३३ ब्राह्मणेषुक्षमीस्निग्धेष्व
जिह्मःक्रोधनोरिपुः ॥ स्याद्राजाभृत्यवर्गेषुप्रजासुचयथापि
ता ३४ पुण्यात्षड्भागमादत्तेन्यायेनपरिपालयन् ॥ सर्वदा
नाधिकंयस्मात्प्रजानांपरिपालनम् ३५ चाटतस्करदुर्वृत्त
महासाहसिकादिभिः पीड्यमानाप्रजारक्षेत्कायस्थैश्चविशे
षतः ३६ रक्षमाणानकुर्वंतियत्किंचित्किल्विषंप्रजाः॥तस्मा
त्तुनृपतेरर्द्धंयस्माद्गृह्णात्यसौकरान् ३७ ॥

तब बाजेगाजेसे सोवे और उसीप्रकार जागे और अपनीबुद्धि से शास्त्र जो कुछ कार्य्य कर्त्तव्यहों उनका चिंतवनकरे ३१ तब अपने और दूसरे राज्यमें गुप्तदूतोंको आदरपूर्व्वक भेजे ऋत्विज् पुरोहितऔर आचार्य्यकेआशीर्वादसे आनन्दपाकर ३२ ज्योतिषी और वैद्य इनमें अपने देहकाहालमालूमकरे फिर गौ,सोना,भूमि विवाहके उपयोगीधन, और गृह इनकादान वेदपाठी ब्राह्मणको दे३३ ब्राह्मणोंके विषयमें राजा क्षमाशीलहो मित्रोंसेसीधा,शत्रुओंमें क्रुद्ध और अपनेभृत्यों प्रजाओंके विषयमें पिताके समानहो ३४ प्रजाका परिपालन सबप्रकार के दानों से अधिकहै इसलिये धर्म्मशास्त्रकी विधिसे प्रजापालनकरे तो उसकीपुण्यका छठाभाग राजापाताहै ३५ छली,चोर,जालिया,डाकू इनसे और विशेषकरके कायस्थ आदि राजकाजकरनेवालोंसे पीड़ितप्रजाकी रक्षाकरे३६ रक्षा न करनेसे जोकुछपाप प्रजाकरतीहै उसमेंका आधाराजाको जाताहै क्योंकि वह रक्षाही के लिये प्रजासे करलेताहै ३७ ॥

येराष्ट्राधिकृतास्तेषांचारैर्ज्ञात्वाविचेष्टितम् ॥ साधून्स
मानयद्राजाविपरीतांश्चघातयेत् ३८ उत्कोचजीविनोद्रव्य
हीनान्कृत्वाविवाशयेत् ॥ सदानमानसत्कारान्श्रोत्रिया
न्वासयेत्सदा ३९ अन्यायेननृपोराष्ट्रात्स्वकोशंयोभिवर्द्ध
येत् ॥ सोचिराद्विगतःश्रीकोनाशमेतिसवान्धवः ४० प्रजा
पीडनसन्तापात्समुद्भूतोहुताशनः ॥ राज्ञःकुलंश्रियंप्राणां
श्चादग्धानिवर्त्तते४१यएवनृपतेर्द्धमःस्वराष्ट्रपरिपालने ॥
तमेवकृत्स्नमाप्नोतिपरराष्ट्रंवशन्नयन्४२यस्मिन्देशेयआचा
रोव्यवहारःकुलस्थितिः ॥ तथैवपरिपाल्योऽसौयदावशमु
पागतः ४३ मंत्रमूलंयतोराज्यंतस्मान्मन्त्रंसुरक्षितम् ॥
कुर्याद्यथास्यनविदुःकर्म्मणामाफलोदयात् ४४ ॥

राजकाजमें जो नियुक्तहैं उनका आचरण गुप्त दूतोंसे मालूम करके भलों का राजा सन्मानकरे और दुष्टोंको दण्ड दे ३८ जो उत्कोच (घूस) लेते उनका सबधन छीनकर राज्यसे निकालदें और दानमान सत्कार करके श्रोत्रियों (वेदपाठियों) को अपनी राज्यमें बसावे ३९ जो राजा अपने राज्यसे अन्याय करके धन बटोरताहै वह थोड़ेही कालमें अपने बन्धुओं समेत निर्धन होके नष्ट होजाताहै४०प्रजाकी पीड़ाके संतापसे उत्पन्नहुई आग राजा का धन, शोभा, कुल और प्राण जलाये विनाठंढी नहींहोती४१ जो धर्म अपनी राज्यके प्रतिपालनमेंहै वही धर्म दूसरेका राज-न्यायमें अपने वशकरनेमें राजा पाताहै ४२ और जो देश अपने वशमें आजावे तो उसदेशमें जैसा आचार व्यवहार और कुलकी मर्य्यादाहो उसको उसी रीतिसे पालनकरे४३ राजाका मूल मंत्र (सलाह) है इसलिये मंत्र को ऐसा गुप्तरक्खे कि जबतक उस-का फल न देखपड़े तबतक कोई उसके काम को न जाने ४४ ॥

अरिर्मित्रमुदासीनोनन्तरस्तत्परःपरः ॥ क्रमशोमण्डलं
चिन्त्यंसामादिभिरुपक्रमैः ४५ उपायाःसामदानंचभेदोद
ण्डस्तथैवच ॥ सम्यक्प्रयुक्ताःसिद्ध्येयुर्दण्डस्त्वगतिकाग
तिः ४६ सन्धिंचविग्रहंचैवयानमासनसंश्रयौ ॥ द्वैधीभावं
गुणानेतान्यथावत्परिकल्पयेत् ४७ यदासस्यगुणोपेतंप
रराष्ट्रंतदाव्रजेत् ॥ परश्चहीनआत्माचहृष्टवाहनपूरुषः ४८
दैवेपुरुषकारेचकर्म्मसिद्धिर्व्यवस्थिता ॥ तत्रदैवमभिव्यक्तं
पौरुषंपौर्वदेहिकम् ४९ केचिद्दैवात्स्वभावाद्वाकालात्पुरुष
कारतः ॥ संयोगेकेचिदिच्छन्तिफलंकुशलबुद्धयः ५० ॥

जिसका राज्य अपने राज्यकी सीमासे मिलाहो वह और उसके पर तथा उससेपरे जो हैं वे क्रमसे शत्रु मित्र और उदासीन होतेहैं यह स्वभावहै, इनका अभीष्ट समझके सामआदि उपाय करतारहे४५साम(प्रियभाषण)दान(धनदेना)भेद (विगाड़करना) और दण्ड ये चारउपायहैं और विचारपूर्व्वक इन्हें करे तो सिद्ध होतेहैं परन्तु दण्ड तब करना जबदूसरा कोई उपाय न लगसके ४६ संधि(मेल)विग्रह(विगाड़) यान (चढ़ाई करनी) आसन (उपेक्षा) संश्रयं (बलिष्ठका आश्रयलेना) और द्वैधीभाव (सेना विभाग) ये छः राजाके गुणहैं जबजैसा देखना तब तैसा करना४७ जब दूसरे का राज्य धान्य और जल ईंधन आदि वस्तुसे सम्पन्नहो औरशत्रु अपनेसे हीनहो और अपनी सेनाके लोग और वाहन हर्षयुत देखपड़ें तो उसपर चढ़ाई करनी ४८ भाग्य और पुरुषार्थ दोनों से कार्यकी सिद्धि होतीहै केवल भाग्यहीसे नहींहोती क्योंकि यह सबको विदितहै कि पूर्व्वजन्ममें जो पुरुषार्थ कियाहो वही भाग्य कहलाताहै ४९ कोई कहते कि दैवसे कोई स्वभावसे और कोई पुरुषार्थ से फलकी सिद्धि कहतेहैं परन्तु बुद्धिमान् लोगों का यह मत है कि जब ये सब अनुकूलहों तो कार्य सिद्ध होता है ५० ॥

यथाह्येकेनचक्रेणरथस्यनगतिर्भवेत् ॥ एवंपुरुषकारेण विनादैवंनसिध्यति ५१ हिरण्यभूमिलाभेभ्योमित्रलब्धिर्वरायतः ॥ अतोयतेततत्प्राप्त्यैरक्षेत्सत्यंसमाहितः ५२ स्वाम्यमात्याजनोदुर्गकोशोदण्डस्तथैवच ॥ मित्राण्येताःप्रकृतयोराज्यंसप्तांगमुच्यते ५३ तदवाप्यनृपोदण्डंदुर्वृत्तेषुनिपातयेत् ॥ धर्म्मोहिदण्डरूपेणब्रह्मणानिर्म्मितःपुरा ५४ सनेतुंन्यायतोशक्योलुब्धेनाकृतबुद्धिना ॥ सत्यसन्धेनशुचिना सुसहायेनधीमता ५५ यथाशास्त्रम्प्रयुक्तःसन्सदेवासुरमानवम् ॥ जगदानंदयेत्सर्व्वमन्यथातत्प्रकोपयेत्५६अधर्म्मदण्डनंस्वर्गकीर्त्तिलोकांश्चनाशयेत् ॥ सम्यक्दण्डनंराज्ञः स्वर्गकीर्त्तिजयावहम् ५७ ॥

जैसे एकचक्रसे रथ नहीं चलसक्ता इसीप्रकार पुरुषार्थ विना दैव सिद्ध नहीं होता.५१ हिरण्य और भूमि के लाभसे मित्रका लाभ उत्तमहै इसलिये मित्र मिलनेकायत्नकरना और सावधानी से अपनी सचावट बचाये रहना ५२ स्वामी (उत्साह आदि गुण युक्त राजा) अमात्य (मंत्री) जन (प्रजा)दुर्ग (किला) कोश(खजाना)दण्ड (चतुरंगसेना) और मित्र ये सात राज्यके मूल कारणहैं इसलिये राज्य सप्तांग कहलाताहै ५३ ऐसी राज्य पाकर राजादुष्टोंको दण्डदे क्योंकि पूर्वकालमें ब्रह्माने दण्डरूपसे धर्म्मकोबनाया ५४ जो लोभी और चंचल बुद्धिहोताहै वह न्यायसे दण्ड नहीं चलासक्ता किन्तु जो सच्चा, पवित्र (जितेन्द्रिय) अच्छे सहायकोंसे युक्त और बुद्धिमान् होताहै वह न्यायसे चलताहै ५५ शास्त्रकीविधिसे जो दण्डका प्रयोगकरे तो देवता असुर और मनुष्य सहित सब जगत्को आनन्द होताहै इससे अन्यथाकरे तो सब कोपकरतेहैं ५६ अधर्म दण्डदेनेसे राजाका स्वर्ग कीर्ति और लोक नष्ट होताहै परन्तु विधिसे दण्डदे तोउसको स्वर्ग कीर्ति और जयकी प्रीति होतीहै ५७ ॥

अपिभ्रातासुतोर्घ्योवाश्वशुरोमातुलोपिवा ॥ नादण्ड्यो
नामराज्ञोस्तिधर्माद्विचलतःस्वकात् ५८ योदण्डान्दण्डये
द्राजासम्यग्वध्यांश्चघातयेत् ॥इष्टंस्यात्क्रतुभिस्तेनसमाप्त
वरदक्षिणैः ५९ इतिसंचिन्त्यनृपतिःक्रतुतुल्यफलंपृथक् ।
व्यवहारान्स्वयंपश्येत्सभ्यैःपरिवृतोन्वहम् ६० कुलानि
जातीःश्रेणीश्चगणान्जानपदानपि ॥ स्वधर्माच्चलितान्रा
जाविनीयस्थापयेत्पथि ६१ जालसूर्य्यमरीचिस्थंत्रसरेणूर
जःस्मृतम् ॥ तेऽष्टौलिक्षातुतास्तिस्रोराजसर्षपउच्यते ६२
गौरस्तुतेत्रयःषट्तेयवोमध्यस्तुतेत्रयः ॥ कृष्णालःपंचतेमाष
स्तेसुवर्णस्तुषोडश ६३ ॥

भाई,बेटा,अर्घ्य,आचार्य्य आदि श्वशुरऔर मामा येभी अपने
धर्म्मसे च्युतहों तो राजाको दण्डदेना उचितहैऔर दूसरोंकीक्या
चर्चा क्योंकि धर्म्महीन ऐसाकोई नहीं जिसेराजा दण्ड न देसके५८
जोराजा दण्डयोग्य मनुष्योंको दण्ड देता और वधके योग्योंको
मारतावह बड़ी दक्षिणावाले यज्ञोंकाफल पाताहै ५९ इसप्रकार
से क्रतुके तुल्य फल समझके राजा पृथक् पृथक् (वर्णआदिकेक्रम
से प्रतिदिन सभासदोंके साथव्यवहार देखे ६० कुल (ब्रह्मणआ-
दिके) जाति (मूर्द्धावसिक्तआदि) श्रेणी (तंबोलीआदि)गण(हैतुक
आदि) और जानपद (कारुक*आदि जो अपने धर्मसे चलितहों
तो राजा इन्हेंयथोचित दण्डदेके फिर निज धर्म्मसेस्थापनकरे ६१
जालियोंसे सूर्य के प्रकाश पड़नेमें जो उड़ते धूलिकण देखपड़तेहैं
उनका नाम त्रसरेणुहै आठत्रसरेणु की एकलिक्षा तीनलिक्षाका
एकराज सर्षप ६२ वे तीनमिलके एकगौरसर्षप,येछः मिलके एक
मध्यमयव, तीनयवका एककृष्णाल, पांच कृष्णालका एक माष
सोलह मापका एकसुवर्ण ६३ ॥

*शिल्पीःस्वातीप्रभृत्य

पलंसुवर्णाश्चत्वारःपंचवापिप्रकीर्तितम् ॥ द्वेकृष्णलेरूप्यमाषोधरणंषोडशैवते ६४ शतमानंतुदशभिर्धरणैःपलमेवतु॥ निष्कंसुवर्णाश्चत्वारःकार्षिकस्ताम्रिकःपणः ६५ साशीतिःपणसाहस्रोदण्डउत्तमसाहसः ॥ तदर्द्धमध्यमःप्रोक्तस्तदर्द्धमधमःस्मृतः ६६ धिग्दण्डस्त्वथवाग्दण्डोधनदण्डोवधस्तथा॥योज्याव्यस्ताःसमस्तावाह्यपराधवशादिमे ६७ ज्ञात्वापराधंदेशंचकालंबलमथापिवा ॥ वयःकर्म्मचवित्तंच दण्डंदण्ड्येषुपातयेत् ३६८॥

इतियाज्ञवल्कीयेधर्मशास्त्रेआचारोनामप्रथमोऽध्यायः १ ॥

और चार या पांच सुवर्णका एकपल होताहै (रुपयेकीतोल) पूर्वोक्त दो कृष्णलका एक रूप्यमाष, तीनसैइकसठ रूप्यमाष का एक धरण६४दश धरणका एक शतमाष अथवा पलहोताहै और पूर्वोक्त चार सुवर्णका एक एक राजत निष्क होता है (तांबे की तोल) एककर्ष (पलका चौथाभाग) भर तांबेको पणकहतेहैं ६५ एकहजार अस्सीपण उत्तम साहसमें दण्ड दियाजाता है उसका आधा मध्यम और उसका भी आधा अधम कहलाताहै ६६ धिग्दण्ड, वाग्दण्ड, धनदण्ड और वधदण्ड ये चार प्रकारके दण्डहैं अपराध जिसका जैसाहो उसे विचारके इन दण्डों में से जितने दण्डके योग्यहों उतना दण्डदेना ६७ अपराध, देश, काल, बल, अवस्था, कर्म्म और वित्त (धन) देखके अपराधियोंको दण्डदेना चाहिये ३६८॥

इतिश्रीयाज्ञवल्क्यस्मृतिटीकायांपञ्चनदमहाविद्यालयीय
प्राच्यविद्यापाठशालायाम्मुख्यसंस्कृताध्यापकेनप-
ण्डितगुरुप्रसादशर्मणाहिन्दीभाषायांविरचिता
याम्मिताक्षरानुयायिन्यामाचाराध्यायःप्रथ
मस्सम्पूर्णतामगात् १ शुभम्भूयात् ॥

व्यवहारान्नृपःपश्येद्विद्वद्भिर्ब्राह्मणैस्सह ॥ धर्म्मशास्त्रा नुसारेणक्रोधलोभविवर्जितः १ श्रुताध्ययनसम्पन्नाधर्म्म ज्ञाःसत्यवादिनः ॥ राज्ञासभासदःकार्य्यारिपौमित्रेचयेस माः २ अपश्यताकार्य्यवशाद्व्यवहारान्नृपेणतु ॥ सभ्यैःस हनियोक्तव्योब्राह्मणःसर्वधर्म्मवित् ३ रागाल्लोभाद्भयाद्वा पिस्मृत्युपेतादिकारिणः ॥ सभ्याःपृथक्पृथक्दण्ड्याविवा दाद्द्विगुणंदमम् ४ स्मृत्याचारव्यपेतेनमार्ग्गेणाधर्षितःप रैः ॥ आवेदयतिचेद्राज्ञेव्यवहारपदंहितत् ५ प्रत्यर्थिनोग्र तोलेख्यंयथावेदितमर्थिना ॥ समामासतदर्द्धाहर्नामजा त्यादिचिह्नितम् ६ श्रुतार्थस्योत्तरंलेख्यंपूर्वावेदकसन्नि धौ ॥ ततोर्थीलेखयेत्सद्यःप्रतिज्ञातार्थसाधनम् ७ ॥

विद्वान् ब्राह्मणोंके साथ क्रोध और लोभ छोड़कर धर्म्मशास्त्रके अनुसार व्यवहारोंको राजादेवे १ वेद और मीमांसा आदिशास्त्र पढ़ेहों धर्म्म जानें सचबोलें और जो शत्रु और मित्र को बराबर मानें ऐसे सभासद राजाको करनेचाहिये २ किसी कार्य्य वशहोकर राजाआप व्यवहार न देखसके तो सभासदों के सहित सब धर्म्म जाननेवाले ब्राह्मणको नियतकरदे ३ किसीकी प्रीतिसे वा लोभ और भयसे यदि सभ्यलोग धर्म्मशास्त्रसे विरुद्ध काम करें तो जितनेका वह व्यवहारहो उससे दूनादण्ड हरएक सभासदों से राजालेवे ४ धर्म्मशास्त्र और सदाचारके विरुद्ध रीतिसे दूसरे में पीड़ित होकर यदि राजाको निवेदनकरे तो वही व्यवहारपद कहलाताहै ५ जो अर्थी (मुद्दई) ने निवेदन कियाहो सो प्रत्यर्थी (मुदालेह) के समक्ष वर्ष, महीना, पाख, दिन, नाम और जाति आदिसे चिह्नित करके लिखना ६ प्रत्यर्थी ने जो बात सुनी हो उसका उत्तर वह अर्थीके सामने लिखावे तब अपने निवेदनके सिद्धिकरनेवाली जो बातेंहों उन्हें अर्थी झटपट लिखावे ७ ॥

तत्सिद्धौसिद्धमाप्नोतिविपरीतमतोन्यथा ॥ चतुष्पाद्व्य
वहारोयंविवादेषुप्रदर्शितः ८ अभियोगमनिस्तीर्य्यनैनम्प्र
त्यभियोजयेत् ॥ अभियुक्तंचनान्येननोक्तंविप्रकृतिंनयेत् ९
कुर्य्यात्प्रत्यभियोगंचकलहेसाहसेषुच ॥ उभयोःप्रतिभूर्ग्रा
ह्यःसमर्थःकार्य्यनिर्णये १० निन्हवेभावितोदद्याद्धनंराज्ञेच
तत्समम् ॥ मिथ्याभियोगीद्विगुणमभियोगाद्धनंवहेत् ११
साहसस्तेयपारुष्यगोभिशापात्ययेस्त्रियाम् ॥ विवादयेत्स
द्यएवकालोन्यत्रेच्छयास्मृतः १२ ॥

निवेदन का प्रमाण सिद्धिहो तो जीतताहै अन्यथा हारजाता है विवाद मे ऐसा (भाषा, उत्तर, क्रिया और साध्यसिद्धियह) चतुष्पाद व्यवहार होता है सो तुम्हें दिखला दिया ८ अपनेऊपर जो किसीने अभियोग किया (सवालदिया) हो तो उसकाउत्तर (जवाव) दियेविना उससवाल देनेवाले पर अभियोग न करे जिसपर किसी औरने अभियोगकियाहो उसपर भी न करे और जो बातें एकवार कहचुकाहो तो उन्हेंबदलेभीनहीं ९ कलह और साहस मे अभियोग करनेवालेपरभी प्रत्यभियोगकरे निर्णयकार्य्य में जो समर्थहो ऐसाप्रातिभू (जामिन) दोनों (अर्थी और प्रत्यर्थी का) लेनाचाहिये १० किसीबातका निह्नव (नाकबूल) कियेहो और वह उसपर भावित (सावित) होजाय तो राजा उससे वह चीज़ वादी को दिलादे और उसी के तुल्य दण्ड (जरीमाना) आपले और किसी ने झूठा अभियोग कियाहो तो जितनेका अभियोग हो उससे दूनादण्ड राजा उससेलेवे ११ साहस,(मनुष्य मारणआदि) चोरी पारुष्य (गालीदेनावामारना) गौका अभिशाप (महाप तकदोष) अत्यय (प्राणऔरधननाशआदि) और स्त्रीहरणमें तुरन्त विवादका निर्णयकरे इनसे अन्यत्र जितनेकाल में अर्थी प्रत्यर्थीआदि चाहें तभी निर्णयकरना १२ ॥

आधिसीमोपनिक्षेपजडबालधनैर्विना ॥ तथोपनिधिराजस्त्रीश्रोत्रियाणांधनैरपि २५ आध्यादीनांविहर्त्तारंधनिनेदापयेद्धनम् ॥ दण्डंचतत्समंराज्ञेशक्त्यपेक्षंयथापिवा २६ आगमोभ्यधिकोभोगाद्विनापूर्वक्रमागतात् ॥ आगमेपिवलंनैवभुक्तिस्तोकापियत्रनो २७ आगमस्तुकृतोयेनसोभियुक्तस्तमुद्धरेत् ॥ नतत्सुतस्तत्सुतोवाभुक्तिस्तत्रगरीयसी २८ योभियुक्तःपरेतस्स्यात्तस्यरिक्थीतमुद्धरेत् ॥ नतत्रकारणंभुक्तिरागमेन विनाकृता २९ आगमेनविशुद्धेनभोगोयातिप्रमाणताम् ॥ अविशुद्धागमोभोगःप्रामाण्यंनैवगच्छति ३० ॥

आधि(बंधक)सीमा,उपनिक्षेप(रखनेको जो वस्तु गिनकेदीगई) जड़काधन, वालधन,उपनिधि(रखोहर)राजधन,स्त्रीधन,और श्रोत्रियधन येदश व वीसवर्ष दूसरेके भोगमें भी अपने स्वामीके स्वत्व से दूर नहीं होते २५ जो कोई आधिसीमा आदिका हरणकरे तो उससे राजाधनीको धनदिलावे और आप उतनाही दण्डलेवे व जैसी शक्तिदेखे तैसादण्डले २६ तीन पुरुषतक वरावर भोग न करतेआयेहों तो उस भोगसे आगम (लेख)वलीहोताहै परन्तु आगमहो और भोगथोड़ा भी नहो तो उसआगममें कुछवलनहीं २७ जिसने आगम करवाया (कोईचीज़लिखवाली)है उसपर अभियोग (सवालदीगई)हो तो वह आगम दिखलावे परन्तु उसके पुत्र पौत्र आदि न दिखलावें उनका भोगही वलवान् गिनाजाता है २८ आगमकरनेवालेपर अभियोगहुआहो और वह मरजावे तो उसके दायाद आगम सिद्धकरें स्थलमें ऐसे आगम के विना उनका भोग नहीं देखाजाता २९ (आगम विशुद्धहो तो भोगप्रामाणिकहोता है आगम शुद्धनहो तो भोगप्रमाण नहीं समझाजाता ३० ॥

नृपेणाधिकृताःपूगाःश्रेणयोथकुलानिच ॥ पूर्वंपूर्वंगुरु
ज्ञेयंव्यवहारविधौनृणाम् ३१ बलोपाधिविनिर्वृत्तान्व्यव
हारान्निवर्त्तयेत्॥स्त्रीनक्तमन्तरागारबहिःशत्रुकृतांस्तथा ३२
मत्तोन्मत्तार्त्तव्यसनिबालभीतादियोजितः ॥ असम्बद्धकृत
श्चैवव्यवहारोनसिध्यति ३३ प्रणष्टाधिगतंदेयंनृपेणधनि
नेधनम् ॥ विभावयेन्नचेल्लिंगैस्तत्समंदण्डमर्हति ३४ रा
जालब्ध्वानिधिंदद्याद्द्विजेभ्योर्द्धंद्विजःपुनः ॥ विद्वानशेष
मादद्यात्ससर्वस्यप्रभुर्यतः ३५ ॥

राजाने जिसको नियुक्त कियाहो,पूग (जनसमूह) श्रेणी एकही व्यापारसे जीतनेवालोंका समूह) और कुल (जाति,सम्बन्धि आदि का समूह) इनमें जोपहिलेपहिले लिखेहैं वे व्यवहार निर्णयकरने में पिछलोंसे श्रेष्ठ हैं (अर्थात् पिछलोंने व्यवहार निर्णयकिया भी हो और वादी प्रतिवादीका सन्तोष न भयाहो तो पहिलेवालोंके निकट फिर निर्णय करालेवें)३१बलात्कार और भयसे जो व्यवहार सिद्धभयेहैं और जो स्त्रीसे,रातको,घरके भीतर,ग्राम आदि से बाहर, और शत्रुसे किये गये हों उन व्यवहारों को भी निवृत्त करें (फिरसे देखें) ३२ मत्त (मदिरा आदिसे) उन्मत्त (बौड़हा) आर्त (व्याधि आदिसे पीड़ित)व्यसनी (अनिष्टहोनेसे दुःखी) बालक और भयाक्रान्त आदिसे तो व्यवहार किया हो तथा जो सम्बन्धीनहो उसने जो व्यवहारकियाहो सो सिद्धनहीं होता३३ किसी की चीज़ प्रणष्ट (खोगई) हो और राजाके पास (ग्राम-पाल आदि) लेआवें तो राजा उसे उसके स्वामीको दे जो ठीक ठीक चिन्हाटी न बतावे तो राजा उतनाहीं उससे दण्डलेवे ३४ राजानिधि (भूमिगतधन) पावे तो आधा ब्राह्मणोंकोदे यदि ब्राह्मणपावे और वह विद्वान्हो तो सबकासब लेलेवे क्योंकि वह सब का प्रभु है, ३५ ॥

देशाद्देशान्तरंयातिसृक्किणीपरिलेढिच ॥ ललाटंस्विद्यते चास्यमुखंवैवर्ण्यमेवच १३ परिशुष्यत्स्खलद्वाक्योविरुद्ध म्बहुभाषते ॥ वाक्चक्षुःपूजयतिनोतथौष्ठौनिर्भुजत्यपि १४ स्वभावाद्विकृतिंगच्छेन्मनोवाक्कायकर्म्मभिः ॥ अभियोगेच साक्ष्येवादुष्टःसपरिकीर्तितः १५ सन्दिग्धार्थंस्वतंत्रोयःसा धयेद्यश्चनिष्पतेत् ॥ नचाहूतोवदेत्किंचिद्धीनोदण्ड्यश्चसं स्मृत :१६ साक्षिषूभयतःसत्सुसाक्षिणःपूर्व्ववादिनः ॥ पूर्व पक्षेऽधरीभूतेभवन्त्युत्तरवादिनः १७ सपणश्चेद्विवादःस्या त्तत्रहीनंतुदापयेत् ॥ दण्डंचस्वपणंचैवधनिनेधनमेवच१८॥

जो इधरसे उधरघूमे (एकजगह न बैठसके) गलफड़ों को चाटा करे, जिसके ललाट (माथे) में पसीना होताहो, मुंह का रंग बदलगयाहो १३ बातकहनेमें मुंहसूखताजावे और हिचकता हो, बहुतबातें अपनीहीबातोंसे विरुद्धकहे, सामने न देखे,बराबर बात न कहे,ओठकाटाकरे १४ मनवाणी और कर्मसे अपनेआप जो औरका और होगयाहो ये सबअभिप्रयोग औरसाक्ष्य(गवाही) में दुष्टगिनेजाते हैं १५ जो अर्थी, प्रत्यर्थी के अंगीकार करने के विनाही अपनी इच्छाही से धन मांगनेलगे, जो अपनी अंगीकृत (कबूल कियेहुये) वासाधित (साबूत) भय वस्तुके मांगने पर भागजाय और जो सभा के सामने बुलाये जानेपर कुछ न कहे ये सब हारजाते और दण्डकेभी योग्यहोतेहैं १६ दोनोंओरके साक्षी (गवाह) आयेहों तो जो अपना स्वत्व पहिलेका कहे उसकेसाक्षी लेने जब उसका पक्ष नीचाहो तो दूसरे वादी के साक्षी लेने चाहिये १७ यदि पण (शर्त) लगा के विवाद करतेहों तो जो हार जावे उस से दण्ड अपना कियाहुआ पण और धनीका धन राजा दिलादेवे १८ ॥

छलंनिरस्यभूतेनव्यवहारान्नयेन्नृपः ॥ भूतमप्यनुपन्य स्तंहीयतेव्यवहारतः १९ निह्नुतेलिखितंनैकमेकदेशेविभा वितः ॥ दाप्यःसर्व्वंनृपेणार्थंनग्राह्यस्त्वनिवेदितः २० स्मृत्योर्विरोधेन्यायस्तुबलवान्व्यवहारतः ॥ अर्थशास्त्रात्तुबलव द्धर्मशास्त्रमितिस्थितिः२१ प्रमाणंलिखितंभुक्तिःसाक्षिणश्चे तिकीर्तितम् ॥ एषामन्यतमाभावेदिव्यान्यतममुच्यते २२ सर्वेष्वर्थविवादेषुबलवत्युत्तराक्रिया ॥ आधौप्रतिग्रहेक्रीतेपू र्वात्तुबलवत्तरा २३ पश्यतोब्रुवतोभूमेर्हानिर्विंशतिवार्षिकी॥ परेणभुज्यमानायाधनस्यदशवार्षिकी २४ ॥

छल (प्रमाद से कही बात) को छोड़ तत्त्व (मुख्यवसच) वार्त्ता के द्वारा व्यवहार का निर्णयराजाकरें क्योंकि सच भी बातहो पर कही न जावे तो हारजातीहै १९ यदि प्रत्यर्थीने लिखाईहुई सच चीजोंको भिह्नव (नाकबूल) कियाहो और कुछ भी उसपर अर्थी भावित (सबूत)करे तो राजा उससे सब दिलावे और जो पहिले निवेदनके समयमें अर्थीने नहीं लिखाया वह बात न माननी २० जब दोस्मृतियों (धर्म्मशास्त्र के वचन)का आपस में विरोधदेखप- ड़ेतो बड़ोंके व्यवहारकेअनुसार उनदोनोंका विषय अलगकरदेने का न्याय बलीहोताहै और नीतिशास्त्रसे धर्म्मशास्त्र बलीहै ऐसी शास्त्रमर्य्यादाहै २१ लिखितभुक्तिऔर साक्षीये तीनमनुष्य प्रमाण हैंजब इनमेंसे कोई न होसकेतो किसी दिव्य (शपथ)काआश्रयण करना २२ धनके सब विवादोंमें उत्तराक्रिया (पिछली बात)बल- वानूहोती परन्तु आधि(बन्धक)प्रतिग्रह (दानलेना)औरक्रीत(मो- ललेने)में पूर्वाक्रिया बलवतीहोतीहै २३ यदि कोईदूसरा मनुष्य स्वामीके सामने उसकेधन और भूमिका उपभोगकरे पर स्वामी कुछ न बोले तो धनसे उसकास्वत्व १० वर्ष और भूमिसे २० वर्ष में नष्ट होजाताहै २४ ॥

इतरेणनिधौलब्धेराजापष्ठांशमाहरेत् ॥ अनिवेदितवि
ज्ञातोदाप्यस्तंदण्डमेवच ३६ देयंचौरहृतंद्रव्यंराजाजानप
दायतु ॥ अददद्धिसमाप्नोतिकिल्बिषंयस्यतस्यतत् ३७ अ
शीतिभागोवृद्धिःस्यान्मासिमासिसबन्धके ॥ वर्णक्रमाच्छ
तंद्वित्रिचतुःपंचकमन्यथा ३८ कान्तारगास्तुदशकंसामु
द्राविंशकंशतम् ॥ दद्युर्वास्वकृतांवृद्धिंसर्वेसर्वासुजातिषु ३९
सन्ततिस्तुपशुस्त्रीणांरसस्याष्टगुणापरा ॥ वस्त्रधान्यहिर
ण्यानांचतुस्त्रिद्विगुणापरा ४० प्रपन्नंसाधयन्नर्थंनवाच्यो
नृपतेर्भवेत् ॥ साध्यमानोनृपंगच्छन्दण्ड्योदाप्यश्चत
द्धनम् ४१ ॥

दूसराकोई निधिपावे तो राजाउसे छठांअंशदेकर शेषआपलेलेवे निधिपाकर राजाको न जनावे औरराजा किसीप्रकार जानलेवेतो राजा उससे निधि और दण्डभीलेवे ३६ जिसकीचीज चोरीगईहो उसको राजा(चाहेजिसप्रकारसे) वहचीज़देदेवे जोनदेवे तो उसका सबपाप राजाको लगताहै ३७ बंधक रखके अस्सी रुपयेपर एकरुपयाव्याजलिये विनाबंधकरुपया दे तो वर्ण (ब्राह्मणआदिसे) क्रमसे २,३,४,औरप्रुपयेसैकड़े व्याजलेवे ३८ जोऋणलेके बनमेंसे होकर व्यापारकरनेजावे उससे दशरुपये सैकड़े और समुद्रमें जानेवाले से बीसरुपयेसैकड़े व्याजले अथवा सबलोग जितना व्याज देना स्वीकारकियेहों उतनादेवे यहसामान्य हरएकजातिकाधर्म्महै ३९ पशुऔरस्त्रीकाव्याज उनकी सन्ततिहै रस (तेलआदि) किसीकोदे औरबहुतकाल विनाव्याजनहउसके निकटपड़ारहे तो आठगुनेसे अधिक न ले वस्त्रधान्य और हिरण्य इनकाक्रमसे चौगुना, तिगुना और दूनालेवे ४० जिसऋणको प्रपन्न (कबूल) कियाहै जो धनीउसे किसीधर्म्मोपायसे लेनाचाहे तोराजामना न करे औरऋणीराजाके निकटनिवेदनकरेतोउससेधनीकाधनदिलादेऔरदंडभीलेवे ४१ ॥

गृहीतानुक्रमादाप्योधनिनामधमर्णिकः ॥ दत्वातुब्राह्म णायैवनृपतेस्तदनन्तरम् ४२ राज्ञाधमर्णिकोदाप्यःसाधिताद्दशकंशतम् ॥ पंचकंचशतंदाप्यंप्राप्तार्थोह्युत्तमर्णिकः ४३ हीनजातिंपरिक्षीणमृणार्थंकर्मकारयेत् ॥ ब्राह्मणस्तुपरिक्षीणःशनैर्दाप्योयथोदयम् ४४ दीयमानंनगृह्णातिप्रयुक्तंयः स्वकंधनम् ॥ मध्यस्थस्थापितंचेत्स्याद्वर्द्धतेनततःपरम् ४५ अविभक्तैःकुटुम्बार्थेयदृणंतत्कृतम्भवेत् ॥ दद्युस्तद्रिक्थिनः प्रेतेप्रोपितेवाकुटुम्बिनि ४६ नयोषित्पतिपुत्राभ्यांनपुत्रेणकृतम्पिता ॥ दद्यादृतेकुटुम्बार्थान्नपतिःस्त्रीकृतंतथा ४७ ॥

एकजातिके धनीहों तो जिसक्रमसे जिसकाधन लियाहो उसी क्रमसे उसको ऋणीसे दिलावे और भिन्नभिन्न जातिकेधनीहों तो ब्राह्मणकाधन पहिले तबक्षत्रीआदिका इसक्रमसेदिलावे४२ धनी का धन उधारनीसे जोराजाकोदिलानापड़े तो अधमर्ण(उधारनी) से राजादशरुपयेसैकड़ेदण्डले और धनीसे पांचरुपयेसैकड़े मंजूरी ले ४३ यदि उधारनीको ऋणदेनेकी सामर्थ्य नहो और धनी की जातिसे उसकी जातिछोटीहो व तुल्यहो तो उससे अपना काम करवाके ऋणभरवाले और यदि ब्राह्मण उधारनीऋणदेनेमें असमर्थहुआहो तो उससे काम न करना किन्तु जैसाजैसा उसकेपास धनआताजाय उतनालेलियाकरे ४४ उधारनीदेताहो और धनी न ले तो वहधन किसीमध्यस्थ के पासरखदेना फिर उधारनीको व्याज न देनीपड़ेगी ४५ जो लोग अविभक्त (इकट्ठारहते) हों उनमेंसे किसीने कुटुम्बके पोषणकेलिये ऋणकियाहोतो वहऋण कुटुम्बी (मालिक) देवे और यदिकुटुंबीमरजाय व परदेशचला जाय तो उसके दायाद (धनलेनेवाले) देवें ४६ कुटुम्बपोषण के सिवाय पति और पुत्रका कियाहुआऋण स्त्री न देवे इसीप्रकार पुत्रकृत पिता न देवे और स्त्रीकृत पतिभी न देवे ४७ ॥

सुराकामद्यूतकृतन्दण्डशुल्कावशिष्टकम् ॥वृथादानंतथै वेहपुत्रोदद्यान्नपैतृकम् ४८ गोपशौंडिकशैलूषरजकव्याध योषिताम् ॥ ऋणंदद्यात्पतिस्तासांयस्माद्वृत्तिस्तदाश्रया ४९ प्रतिपन्नंस्त्रियादेयंपत्यावासहयत्कृतम् ॥ स्वयंकृतंवा यदृणंनान्यत्स्त्रीदातुमर्हति ५० पितरिप्रोषितेप्रेतेव्यसना भिप्लुतेपिवा ॥ पुत्रपौत्रैःऋणंदेयन्निह्नवेसाक्षिभावितम्५१ रिक्थग्राहऋणन्दाप्योयोपिद्ग्राहस्तथैवच ॥ पुत्रोनन्या श्रितद्रव्यःपुत्रहीनस्यरिक्थिनः ५२ भ्रातृणामथदम्पत्योः पितुःपुत्रस्यचैवहि ॥ प्रातिभाव्यमृणंसाक्ष्यमविभक्तेनतुस्मृ तम् ५३ ॥

उसी प्रकार मदिरापान, व्यभिचार, जुआखेलने को, दण्डका शेष, और शुल्क (मालूम) का शेष (बाकी) और वृथादान के लिये जो ऋण पिता ने कियाहो उसे पुत्र न देवे ४८ अहीर,कल- वार, नट, धोवी और व्याधा इनकी स्त्रियोंने जो ऋणकियाहो सो उनके पतिदेवें क्योंकि उनकी वृत्ति स्त्रीके आधीनहै ४९ जो ऋण प्रतिपन्न (कबूल) कियाहो व जो पतिकेसाथलियाहो और अपने आप जो ऋणलियाहो तो स्त्री देवे इसके सिवाय दूसरे प्रकारका ऋण स्त्री कभी न देवे ५० जब पितामरजाय व परदेशगयाहो अथवा किसी व्यसन (लत) में पड़गयाहोतो पुत्र औरपौत्र ऋण दें निह्नव (नाकबूल) करें तो साखियोंसेजो भावित (सावितहो सो देवें ५१) जो जिसका धनले वह उसका ऋणदे वह नहो तो जो उसकी स्त्री ले वह ऋणदे और जिसकाधन पुत्रों के सिवाय दूसरे ने नहीं लिया उसका ऋण उसके पुत्रदें पुत्रनहो तो रिक्थि (दायाद) देवें ५२ भाई, स्त्री, पुरुष,पिता और पुत्र यदि विभक्त नहीं तो इनकीप्रातिभाव्य (जामिनी) ऋण औपसाक्ष्य (गवाही) करने की योग्यता नहीं ५३ ॥

दर्शनेप्रत्ययेदानेप्रातिभाव्यंविधीयते॥ आद्यौतुवितथेदा प्यावितरस्यसुताअपि ५४ दर्शनेप्रतिभूर्यत्रमृतःप्रात्ययिको पिवा ॥ नतत्पुत्राऋणंदद्युर्दद्युर्दानाययःस्थितः ५५ बहवः स्युर्यदिस्वांशैर्दद्युःप्रतिभुवोधनम् ॥ एकच्छायाश्रितेष्वेषु धनिकस्ययथारुचि ५६ प्रतिभूर्दापितोयत्तुप्रकाशंधनिनांध नम् ॥ द्विगुणम्प्रतिदातव्यमृणिकैस्तस्यतद्भवेत् ५७ संत तिःस्त्रीपशुष्वेवधान्यंत्रिगुणमेवच ॥ वस्त्रंचतुर्गुणम्प्रोक्तंरस श्चाष्टगुणःस्मृतः ५८ आधिःप्रणश्येद्द्विगुणेधनेयदिनमो क्ष्यते ॥ कालेकालकृतोनश्येत्फलभोग्योननश्यति ५९ ॥

दर्शन (दिखलादेनेकी) प्रत्यय (साविकावनादेना) औरदान मालदेने)का प्रातिभाव्य (जामिनी) कहाहै इनमेंपहिलेदोप्रकार केप्रातिभाव्य जिसने कियाहो वह झूठापड़ेतो केवल वही उतना धनदे परन्तु तीसरेके लड़के भी देवें ५४ जब दर्शन प्रतिभू और प्रत्यय प्रतिभू मरगयेहों तो उनके पुत्रोंसे ऋण न दिलाना किन्तु जो दान प्रतिभूहो उसीके पुत्रसे दिलाना ५५ प्रतिभू कई एकहों तो ऋण बांटलेवें फिर अपने अपने अंशके अनुसार धनी को धन देवें और जो हरएक सम्पूर्ण धनदेनेको उद्यतहो तो धनिक की रुचिहै चाहे जिससे ले ५६ जिस प्रतिभूसे सबके सामने जितना धनिकाधन दिलाया गयाहो उसको ऋणी दूनाकरके उस प्रतिभू को भरदेवे ५७ स्त्री और पशु प्रतिभूसे दिलायागयाहो तो ऋणी दूनेके बदले में सन्ततिसहित स्त्री पशुदे और अन्न तिगुनादे वस्त्र चौगुना और रस (पीतलआदि) अठगुनादेवे ५८ जो चीज़बन्धक रक्खीहो उसपर मूलधन के तुल्य व्याजभी चढ़जाय और ऋणी न छुड़ावेतो वह बन्धक डूबाहोजाताहै जिस बन्धक में समय की अवधि करदीहो तो वह अपने समय होजानेपर डूबाहोताहै परंतु फल भोग्य बन्धक (जिस से धनी को व्याज मिलती जाय) वह कभी नष्टनहींहोता ५९ ॥

गोप्याधिभोगेनोवृद्धिःसोपकारेथहापिते॥नष्टोदेयोविनष्टश्च
देवराजकृताहते६०आधेःस्वीकरणात्सिद्धीरक्ष्यमाणोप्यसा
रतां यातश्चेदन्यआधेयोधनभाग्वाधनीभवेत् ६१ चरित्रबंध
ककृतंसवृध्यादापयेद्धनंसत्यंकारकृतंद्रव्यंद्विगुणंप्रतिदापयेत्
६२उपस्थितस्यमोक्तव्यआाध स्तेनोऽन्यथाभवेत्॥प्रयोजके
सतिधनंकुलेन्यस्याधिमाप्नुयात् ६३तत्कालकृतमूल्योवातत्र
तिष्ठदवृद्धिकैः विनाधारणिकाद्वापिविक्रीणीतससाक्षिकं६४

दृष्टिबंधकको जोअपनेकाममेंलावे तो उसकोब्याजऋणीनदेऔर
भोगबंधकमेंभीजोकुछहानि (नुक्सान) होजायतोब्याजनपावे,देव
औरराजोपद्रवकेबिना कोईबंधककीचीज़बिगड़जाय व नष्टहोजाय
तोधनीअपनेपाससेदेवे६० आधि (बंधक) स्वीकारकरनेसे(उपभोग
करनेसे)सिद्ध (अपनेस्वत्वशिष्ट) होताहै औरजो यत्नसेरखनेपर भी
बन्धककीचीज़ बिगड़जावे तो दूसरीचीज़ उसकेबदलेमें रखदेना
अथवाधनीकाधनदेदेना ६१ यदिचरित्रबन्धक(आपसकेविश्वाससे
थोड़ीचीज़परबहुतधनदेदेवे बावड़ीपरथोड़ाहीलेलेवे अथवाअपना
पुण्य,तीर्थस्नान फलआदिबन्धक) कियाहोतो ब्याजसमेतधन धनी
दिलापावे औरजिसआधिमें सत्यप्रतिज्ञाहुईहो (किधनदूनाहोनेपर
भीधनहीदेंगेआधिनष्टनहोगीतोदूनाधनहीदिलादेना ६२ऋणीबन्ध
कछुड़ानेआवे तो उसकीचीज़देदेनी नहींतो (यदिब्याजके लोभ से
कुछदिन औररक्खे,तोचोरकासा दण्डपाताहै उधारनीबन्धकछुड़ा-
ने आवे और धनीकहींगयाहोतो उसकेकुलमेंसे किसीप्रामाणिक के
पासधनब्याज समेतरखकर अपनीचीज़लेलेवे ६३ धनीनहो और
बन्धकबेंचकेऋणदियाचाहेतो) उससमयमेंजो मोलबन्धककाउठे
सोकहकेबन्धकवहींरहनेदे और उससमयसे ब्याजनदेवे (जोदूना
धनहोनेपरभी बन्धक बूड़ाहोनेका करारनहो और धनमूल ब्याज
मिलके दूनाहोजाय अथवा उधारनी पासनहो कहीं गयाहो तो)
साखीरखकर उसबन्धकको उधारनीके विनाभीबेचडाले ६४ ॥

यदातुद्विगुणीभूतमृणमाधौतदाखलु। मोच्यआधिस्तदु त्पन्नेप्रविष्टेद्विगुणेधने ६५ वासनस्थमनाख्यायहस्तेन्यस्य यदर्प्यते ॥ द्रव्यन्तदौपनिधिकंप्रतिदेयंतथैवतु ६६ नदाप्यो पहृतंतन्तुराजदैविकतस्करैः ॥ भ्रेषश्चेन्मार्गितेदत्तेदाप्योद ण्डंचतत्समम् ६७ आजीवन्स्वेच्छयादंड्योदाप्यस्तंचापि सोदयम् ॥ याचितान्वाहितन्यासनिक्षेपादिष्वयंविधिः ६८ तपस्विनोदानशीलाःकुलीनाःसत्यवादिनः ॥ धर्मप्रधानाऋ जवःपुत्रवन्तोधनान्विताः ६९ त्र्यवराःसाक्षिणोज्ञेयाःश्रौत स्मार्तक्रियापराःयथाजातियथावर्णंसर्वेसर्वेषुवास्मृताः ७०

जो भोग बन्धकसे अपनेमूलधनका दूनाधन धनीपालेवे तो वह बन्धककी चीज़ छोड़देवे ६५ इतिऋणादानप्रकरणम् ॥ किसी वासनमें ढापके बिनाभिनेगूफे कोई चीज़ रखनेकेलिये किसीकोदे तो वह उपनिधि कहलातीहै और उसीतौर उसे फेर देना भी चाहिये ६६ यदि उपनिधि राजोपद्रव,दैवोपद्रव अथवा चोरीहो- नेसे नष्टहोगईहो तो उसे न दिलावे जो उपनिधि के स्वामी ने मांगाहो और न दियाहो फिर वह द्रव्य दैवराजादि उपद्रवसे नष्ट होजाय तो उतनी चीज़ और उसीके तुल्य दण्डभी राजा उससे ले ६७ जो उपनिधिका भोग अपनीइच्छासे करे तो व्याजसमेत दिलाना और यहीरीति याचित(मंगनी)अन्वाहित (किसीदूसरेके हाथ जो चीज़ धनीको देनेकेलिये भेजीहो)न्यास (किसीके घरमें उसके परोक्ष जो चीज़ रखनेको धरदीहो)और निःक्षेप(चीज़गि- नके रखनेकोदीहो उसमें) भी जानना ६८ इतिनिःक्षेपादिप्रकर णम् ॥ तपस्वी, दानशील, कुलीन,सत्यवादी, धर्मिष्ठ, ऋजु(सीधे) पुत्रवाले और धनी ७९ वेद और धर्मशास्त्र के अनुसार चलनेवाले ऐसे तीनसे अधिक साखीबनाना चाहिये चाहे वे अपनी जाति और वर्णके हों चाहे दूसरेहों ७० ॥

श्रोत्रियास्तापसावृद्धायेचप्रव्रजितादयः ॥ असाक्षिण
स्तेवचनान्नात्रहेतुरुदाहृतः ७१ स्त्रीवृद्धबालकितवमत्तोन्म
त्ताभिशस्तकाः ॥ रंगावतारिपाखण्डिकूटकृद्विकलेन्द्रियाः
७२ पतिताप्तार्थसम्बन्धिसहायरिपुतस्कराः ॥ साहसीदृष्ट
दोषश्चनिर्धूताद्यास्त्वसाक्षिणः ७३ उभयानुमतःसाक्षीभव
त्येकोपिधर्मवित् ॥ सर्वःसाक्षीसंग्रहणेचौर्य्यपारुष्यसाहसे
७४ साक्षिणःश्रावयेद्वादिप्रतिवादिसमीपगान् ॥ येपातकक्ट
तांलोकामहापातकिनांतथा ७५ अग्निदानांचयेलोकायेच
स्त्रीबालघातिनाम् ॥ सतान्सर्वानवाप्नोतियःसाक्ष्यमनृतं
वदेत् ७६ ॥

श्रोत्रिय(वेदपठनपाठनतत्पर) तपस्वी,वृद्ध और प्रव्राजित(संन्यासी)आदिको शास्त्रकी आज्ञासेही साखी न बनाना इसमें कुछ कारण नहीं ७१ स्त्री,बालक, वृद्ध,अस्सीवर्षसे ऊपर, कितव, (जुआरी)मत्त,(मदिरासे)उन्मत्त,(ग्रहदोषसे) अभिशस्त(जिसकोदोषलगाहो)रंगावतारी(चारणनटकी जाति)पाखंडी(नंगेहोकरफिरनेवाला)कूटकारी (कपटलेखकारी)विकलेन्द्रिय(बहरागूंगाआदि) ७२ पतित,आप्त,(सुहृत)अर्थसम्बन्धी (माभिलेमें सामिल)सहाय,शत्रु,चोर,साहसी,(बलात्कारकरनेवाला)जिसका कोई दोषदेखागयाहो और निर्धूत(बन्धुओंसेत्यक्त)आदि साखी नहीं बनाये जाते ७३ वादी प्रतिवादी दोनों मानदें तो एक मनुष्यभी साखी होताहै चोरी,पारुष्य(मारना व गाली देना) और साहस (मनुष्य मारण आदि)में सबी साखी होसक्ते हैं ७४ वादी और प्रतिवादी के पास लेजाकर सभासदलोग साखियोंको सुनावें कि जो लोग महापातकी पातकी ७५ आग लगानेवालों और स्त्री और बालकके वध करनेवालोंको प्राप्तहोतेहैं वे सब झूठसाखी भरनेवाले को मिलते हैं ७६ ॥

सुकृतंयत्त्वयाकिंचिज्जन्मांतरशतैःकृतम् ॥ तत्सर्वंतस्य जानीहियंपराजयसेमृषा ७७ अब्रुवन्हिनरःसाक्ष्यमृणंस दशबंधकम् ॥ राज्ञासर्वंप्रदाप्यःस्यात्षट्चत्वारिंशकेहनि ७८ नददातिहियःसाक्ष्यंजानन्नपिनराधमः ॥ सकूटसाक्षि णांपापैस्तुल्योदण्डेनचैवहि ७९ द्वैधेबहूनांवचनंसमेषुगुणि नांतथा ॥ गुणिद्वैधेतुवचनंग्राह्यंयेगुणवत्तमाः ८० यस्योचुः साक्षिणःसत्याम्प्रतिज्ञांसजयीभवेत् ॥ अन्यथावादिनोय स्यध्रुवस्तस्यपराजयः ८१ उक्तेपिसाक्षिभिःसाक्ष्येयदन्येगु णवत्तमाः ॥ द्विगुणावान्यथाब्रूयुःकूटाःस्युःपूर्वसाक्षिणः ८२ पृथक्पृथग्दण्डनीयाःकूटकृत्साक्षिणस्तथा ॥ विवादाद्द्वि गुणंदण्डंविवास्योब्राह्मणःस्मृतः ८३ ॥

जो पुण्य तुमनेपिछलेजन्मममेंकियाहै सो सब उसकाजानो कि जिसको झूंठाबोलकर पराजितकरतेहो ७७ जो साखीहोकर सभा में कुछनबोले तो राजा उसीसे दशबंधक (दशमांश जो दण्डरूपसे राजालेताहै उसको) सहित छिया लिसदिनमें सम्पूर्णऋणदिलादेवे ७८ जोनीचजानकरकेभी साखीनहींदेता वहकूटसाक्षी (आगेलि- खेंगेउनकेपाप) और दंडकाभागीहोताहै ७९ जबसाखीदोनोंप्रकार की बातेंकहें तो बहुतोकीबातमाननी दोनोंओरबराबरसाखीहों तो उनमें जोगुणीहोउनकीबातमाननी गुणियोंमेंभी दुविधाहोतो जो बड़ेगुणीहोंउनकेवचनमानने ८० जिसकीबातसाखीबतावें किसच है वहजीतताहै औरजिसकी अन्यथाकहें उसकीअवश्यपराजयहोती है ८१ साखीलोगकहचुकेहों औरउनसेअधिकगुणवाले व दुगुनेमनु- ष्य उनकेकहेसे विपरीतकहे तो पहिले साखीकूटकहेजातेहैं ८२ जो साखियोंकोकूटबनावे (फोड़ले) और साखीभी जोकूटहोजाय (फूट जाय) उनप्रत्येकको जितनेकाविवादहो उससेदूनादण्डदेना और ब्राह्मणहो तो उसको अपनेनगरसे निकालदेनायहीदण्डहै ८३ ॥

यःसाक्ष्यंश्रावितोऽन्येभ्योनिन्हुतेतत्तमोवृतः ॥ सदा
प्योऽष्टगुणंदण्डम्ब्राह्मणंतुविवासयेत् .८४ वर्णिनांहिवधो
यत्रतत्रसाक्ष्यनृतंवदेत् ॥ तत्पावनायनिर्वाप्यश्चरुःसारस्व
तोद्विजैः ८५ यःकश्चिदर्थोनिष्णातःस्वरुच्यातुपरस्परम्॥
लेख्यंतुसाक्षिमत्कार्य्यंतस्मिन्धनिकपूर्वकम् ८६ समामास
तदर्द्धाहर्नामजातिस्वगोत्रकैः ॥ सब्रह्मचारिकात्मीयपितृ
नामादिचिह्नितम् ८७ समाप्तेतुऋणीनामस्वहस्तेननिवे
शयेत् ॥ मतम्मेमुकपुत्रस्ययदत्रोपरिलेखितम् ८८.साक्षि
णश्चस्वहस्तेनपितृनामकपूर्वकम् ॥ अत्राहममुकःसाक्षी
लिखेयुरितितेसमाः ८९ ॥

जो पहिले साखीवनना स्वीकारकरके जवसाखीदेना सुनाया जाय उससमय किसी कारण व मोहसे नटजाय तो उसको जो दण्डहारजानेवालेकोहोगा उससे अठगुनादण्डदेना और ब्राह्मण हो तो उसको देशसे निकालदेना ८४ जव देखे कि सचवोलनेमें किसीका वधहोगा तो साखीभूंठ वोले और उसदोप के छुड़ाने के लिये सरस्वती देवताका हविष्य ब्राह्मणवनावें ८५ इतिसाक्षिप्रकरणम् ॥ जो वात ऋणदेने लेने की आपसमें ठहरगईहो उसे साखीदेकर धनीका नाम पहिले फिर उधारनीका इसरीति से लेखकरवाना ८६ वर्ष, महीना, पाख, दिन, (तिथि) दोनों का नाम और जाति, गोत्र, उपनाम और अपने अपने पिताका नाम आदि भी उस लेखमें डालदेना ८७ जव (काग़ज़) लिखचुकें तो उधारनी अपने हाथसे नीचे अपनानाम लिखकर यह लिखदे कि जो ऊपर लिखाहै सो अमुक के पुत्र हमको स्वीकार है ८८ साखीलोग भी अपने अपने हाथसे अपने अपने पिता का नाम लिखकर अपनानामालिखें कि इस व्यवहारमें हमसाखीहैं परन्तु दो व चार व छः आदि समसंख्याके साखीवनाना ८९ ॥

उभयाभ्यर्थितेनैतन्मयाह्यमुकसूनुना ॥ लिखितंह्यमुकेनेतिलेखकोन्तेततोलिखेत् ९० विनापिसाक्षिभिर्लेख्यंस्वहस्तलिखितंतुयत् ॥ तत्प्रमाणंस्मृतंलेख्यंबलोपाधिकृतादृते ९१ ऋणंलेख्यकृतन्देयंपुरुषैस्त्रिभिरेवतु ॥ आधिस्तुभुज्यतेतावद्यावत्तन्नप्रदीयते ९२ देशांतरस्थेदुर्लेख्येनष्टोन्मृष्टेहृतेतथा ॥ भिन्नेदग्धेथवाछिन्नेलेख्यमन्यत्तुकारयेत् ९३ संदिग्धेलेख्यशुद्धिःस्यात्स्वहस्तलिखितादिभिः॥ युक्तिप्राप्तिक्रियाचिह्नसम्बन्धागमहेतुभिः ९४ लेख्यस्यपृष्ठेभिलिखेद्दत्वादत्वर्णिकोधनम् ॥ धनीवोपगतन्दद्यात्स्वहस्तपरिचिह्नितम् ९५ ॥

सबकेअन्तमेंलेखकलिखे कि अमुककेपुत्र मुझकोदोनोंने प्रार्थना पूर्वककहा तो अमुकनाम हमने यहलिखदिया ९० जोलेख अपने हाथ लिखाजाय वह बिनासाखी भी लिखाहो तो प्रमाण होता है परन्तु बलात्कार और छललोभआदिसे जोकियाहो वहप्रमाणनहीं होता ९१ लेखकाऋण तीनहींपुरुष (पुत्र,पौत्र,प्रपौत्र)को देनाचाहिये (परन्तु आधि (बन्धक) तबतक भोगीजातीहै कि जबतक चुका न देवे ९२ जब लिखितकही दूरदेशमें रहजाय, उसकेअक्षर इतने मलिनहोजायें कि पढ़ न सकें,नष्टहोजायें, घसजायें, चोरीहोजायें) कटजायें जलजायें अथवा फटजायें तो दूसरा लिखनाचाहिये ९३ लेख में संदेहहो तो अपने लिखेहुये दूसरे पत्रसे मिलाकर, युक्ति प्राप्ति (इसदेशमें इसकालमें इसको इतने द्रव्यकी योग्यताथी) क्रिया (साखी) चिह्न (श्रीकारादि) सम्बन्ध (पहिला व्यवहार) और आगम (आमदनी इनहेतुओंयुक्तियों) से निश्चयकरना ९४ जितना जितना उधारनी देताजाय सो अपने हाथसे लिखित पत्र के पीठपर लिख दे और धनी जितनापावे उसका उपगत(रसीद) अपने हाथसे लिखके ऋणीकोदे ९५ ॥

दत्त्वर्णपाटयेल्लेख्यंशुद्ध्यैवान्यत्तुकारयेत् ॥ साक्षिमच्चभ
वेद्यद्दातद्दातव्यंससाक्षिकम् ९६ तुलाग्न्यापोविषंकोशोदि
व्यानीहविशुद्धये ॥ महाभियोगेष्वेतानिशीर्षकस्थेभियोक्त
रि ९७ रुच्यावान्यतरःकुर्यादितरोवर्त्तयेच्छिरः ॥ विनापि
शीर्षकान्कुर्य्यान्नृपद्रोहेथपातके ९८ सचैलंस्नानमाहूयसू
र्य्योदयउपोषितम् ॥ कारयेत्सर्वदिव्यानिनृपब्राह्मणसन्नि
धौ ९९ तुलास्त्रीबालवृद्धांधपंगुब्राह्मणरोगिणाम् ॥ अग्निर्ज
लंवाशूद्रस्ययवाःसप्तविषस्यवा १०० नासहस्राद्धरेत्फालंन
विषंनतुलांतथा ॥ नृपार्थेष्वभिशापेचवहेयुःशुचयेसदा १ ॥

सम्पूर्णऋणदेदेवे तो लेखकाढ़डाले अथवाशुद्धिपत्र (भरपाई) लिखाने और जिसमें साखीहों वहऋण साखियों के सामने देना चाहिये ९६ इतिलेख्यप्रकरणम् ॥ तुला, अग्नि, जल, विष और कोश ये पांच दिव्य (शपथ) जब दूसरा उपायनहो तो जयपराजय करने के लिये महाभियोग में अभियोक्ता (वादी) को देने चाहिये ९७ आपसमें सम्मतिकरके चाहेदूसरा (अभियुक्त) ही दिव्य करे और वादी धनदण्ड अथवा शरीर दण्ड स्वीकार करे राजद्रोह औरमहापातकमें जय पराजय के विना भी शपथकरे ९८ पहिले दिन उपवासकराके प्रातःकाल शपथदेनेवालेको सचैल (सवस्त्र) स्नानकरवाके बुलाना औरसभासद राजा और ब्राह्मणोंके सामने सब दिव्य कराना चाहिये ९९ स्त्री, बालक, (सोलहवर्षतकका) वृद्ध (अस्सीवर्षका) अन्धा लूला ब्राह्मण और रोगीइन्हें शुद्धि के लिये तुला देनी, अग्निक्षत्रीको जलवैश्यको और शूद्रको सातयव भर विषदेना १०० सहस्र (हज़ार) पणसे कमती का विवादहो तो अग्नि, विष, तुला और जलका शपथ न दिलाना परन्तु नृप द्रोह और महापातकका अभियोगहो तो चाहे जितनेकाहो सदा इनशपथों को शुद्धहोके करे १ ॥ इतिदिव्यमातृकाः ॥

तुलाधारणविद्वद्भिरभियुक्तस्तुलाश्रितः ॥ प्रतिमानस मीभूतोरेखांकृत्वावतारितः २ त्वंतुलेसत्यधामासिपुरादेवै र्विनिर्मिता ॥ तत्सत्यंवदकल्याणिसंशयान्मांविमोचय ३ यद्यस्मिन्पापकृन्मातस्ततोमांत्वमधोनय ॥ शुद्धश्चेद्गमयो र्ध्वंमांतुलामित्यभिमंत्रयेत् ४ करौविमृदितव्रीहेर्लक्षयित्वा ततोन्यसेत् ॥ सप्ताश्वत्थस्यपत्राणितावत्सूत्राणिवेष्टयेत् ५ त्वमग्नेसर्वभूतानामंतश्चरसिपावक ॥ साक्षिवत्पुण्यपापे भ्योब्रूहिसत्यंकवेमम ६ तस्येत्युक्तवतोलोहंपंचाशत्पलिकं समम् ॥ अग्निवर्णंन्यसेत्पिण्डंहस्तयोरुभयोरपि ७ ॥

तोलने में जो निपुण हो (सोनार आदि) वे शपथ देनेवाले को तुला पर चढ़ाकर यव बराबर तोल ले तो जिस राह से चढ़ाये हों उसमें चिन्हाटी कर रक्खे उसी राह से उतरे २ तब हेतुले तू सत्यका स्थानहै देवताओं ने सृष्टिकी आदि में तुझे बनाया है इसलिये हे कल्याणी तू सच बतलादे इस संशय से मुझे छुड़ा ३ हे माता जो मैं (पापकृत् असत्यवादी होऊं तो मुझे नीचे लेजा और सच्चाहोऊं तो ऊपर उठा ऐसी प्रार्थना तुला से करे ४ इतिघटविधिः ॥ अग्नि के शपथ करनेवाले के हाथ में यव मलवा के फिर देखना जो जो चिन्हाटी उसके हाथ में हों उसको अलक्तक (महावरसे रंगदेना) तब पीपलकेसातपत्ते उस के हाथपर रखके कच्चे सूत से सात फेरा बांधदेना ५ अनन्तर हे अग्नि तुम सब जीवोंके अन्तःकरण में वासकरते हो, शुद्ध करने- वालेहो इसलिये हमारा पुण्य पाप देखके साक्षीकेसमान सच सच दिखलादो ६ शपथ देनेवाला जब ऐसा कहचुके तो उसके दोनों हाथपर पचास पलभर लोहेका गोला लालकरके रखदेना ७ ॥

सतमादायसप्तैवमण्डलानिशनैर्व्रजेत् ॥ षोडशांगुलकं
ज्ञेयंमण्डलंतावदन्तरम् ८ मुक्ताग्निम्मृदितव्रीहिरदग्धःशु
द्धिमाप्नुयात् ॥ अन्तरापतितेपिण्डेसन्देहेवापुनर्हरेत् ९ स
त्येनमाभिरक्षत्वंवरुणेत्यभिशाप्यकम् ॥ नाभिदघ्नोदकस्थ
स्यगृहीत्वोरूजलंविशेत् १० समकालमिषुम्मुक्तमानीया
न्योजवीनरः ॥ गतेतस्मिन्निमग्नांगंपश्येच्चेच्छुद्धिमाप्नुयात्
११ त्वंविषब्रह्मणःपुत्रःसत्यधर्मेव्यवस्थितः ॥ त्रायस्वास्मा
दभीशापात्सत्येनभवमेऽमृतम् १२ एवमुक्त्वाविषंशार्ङ्गंभक्ष
येद्धिमशैलजम् ॥ यस्यवेगैर्विनाजीर्येच्छुद्धितंस्यविनिर्दिशे
त् १३ देवानुग्रान्समभ्यर्च्यतत्स्नानोदकमाहरेत् ॥ संश्रा
व्यपाययेत्तस्माज्जलात्सप्रसृतित्रयम् १४ ॥

वहउसकोलेकरधीरेधीरेसातमंडलचलेमंडलसोलहअंगुलकाहो-
ताहै औरएकसेदूसरेका अंतरभीइतनाहीहोताहै ८ अग्निको वहां
त्यागकरके फिरहाथोंसेयवमलना कहींजलानहो तो शुद्धहोता है
यदि गोलाबीचहीमेंगिरपड़े अथवादग्धहोनेकासंदेहपड़ाहोतो फिर
उठावे ९ इत्यग्निविधिः ॥ हेवरुण सत्यसेमेरीरक्षाकरो इसमंत्रसे
जलकीप्रार्थनाकरके नाभिपर्यंतजलमेंखड़ेहुये मनुष्यकीजांघपकड़
केजलमेंगोतामारे १० उसीसमयवाणफेकना औरकिसीवड़ेदौड़ने
वालेसे उसवाणकोमँगावे जबतक वहवाणलानेके तबतक शपथ
करनेवाला डूबाहीदेखपड़े तोशुद्धकहलाताहै ११ इत्युदकविधिः॥
हे विष तुम ब्रह्माकेपुत्रहो औरसत्यधर्ममेंस्थापितभयेहो मुझको
इसअभिशाप (कलंक)से वचावो औरसचजानके अमृतकेतुल्यहो
जावो १२ ऐसाकहकर शपथदेनेवालासिंगिआमाहुरखावे जोविना
चढ़ेहुयेपचजाय तो शुद्धहोताहै १३ इतिविषविधिः ॥ उग्रदेवता
(दुर्गाआदि)कोपूजकरकेउनकास्नानजललेआवे औरप्राड्विवाक्
शपथदेनेवालेको सुनाकर तीनपसर उसमेंसे जलपिलावे १४ ॥

अर्वाक्चतुर्दशादह्नोयस्यनोराजदैविकम् ॥ व्यसनं जायतेघोरंसशुद्धःस्यान्नसंशयः १५ विभागंचेत्पिताकुर्य्या दिच्छयाविभजेत्सुतान् ॥ ज्येष्ठंवाश्रेष्ठभागेनसर्वेवास्युःस मांशिनः १६ यदिकुर्य्यात्समानंशान्पत्न्यःकार्य्याःसमां शिकाः ॥ नदत्तंस्त्रीधनंयासांभर्त्रावाश्वशुरेणवा १७ शक्त स्यानीहमानस्यकिंचिद्दत्वापृथक्क्रियाम् ॥ न्यूनाधिकविभ क्तानांधर्म्यःपितृकृतःस्मृतः १८ विभजेरन्सुताःपित्रोरूर्ध्वं रिक्थमृणंसमम्॥ मातुर्दुहितरःशेषमृणात्ताभ्यऋतेन्ववयः १९ पितृद्रव्याविरोधेनयदन्यत्स्वयमर्जितम् ॥ मैत्रमौद्वा हिकंचैवदायादानांनतद्भवेत् २० ॥

जिसको चौदह दिनके भीतर राजासे व दैवसे घोरउपद्रव न होतो उसे शुद्ध निश्चयसे जानना १५ इतिदिव्यप्रकरणम्॥ यदि पिता अपने जीतेही लड़कोंका विभागकरे तो अपने उपार्ज्जित धनमें उसकी इच्छा है चाहे सबको बराबरदे अथवा ज्येष्ठपुत्रको श्रेष्ठभाग (ज्येष्ठांश)देवे १६ जो सब पुत्रोंको समान अंशदे तो अपनी उन स्त्रियोंको भी जिन्हें श्वशुर व पतिने स्त्रीधन न दिया हो पुत्रकेसमान अंशदेवे १७ जो पुत्र द्रव्यअर्जन(कमाने)में समर्थहो और पिताका धन न चाहताहो तो कुछ थोड़ा बहुतदेके विभाग करदेना और न्यूनाधिक (कमज्यादह) जिनका विभाग पिताने धर्म्मकीरीतिसे कियाहो तो वह बदलता नहीं १८ माता और पिताके देहत्यागहोनेपर सब पुत्र इकट्ठेहोकर धन और ऋण बराबर बांटलेवें परन्तु माताका धन उसका ऋणदेकर जो बचे सो लड़कियां बांटलेवें जो लड़कियां नहों तो पुत्रलेवें १९ जोधन मातापिताके धनकी सहायताके विनाहीं अपने पुरुषार्थ से कमायाहो,मित्रसे पायाहो और विवाहमेंमिलाहो तो वहदूसरे दायादों (भाइयों) का नहीं होता २० ॥

क्रमादभ्यागतन्द्रव्यंहृतमप्युद्धरेत्तुयः ॥ दायादेभ्योन तद्द्याद्विद्ययालब्धमेवच २१ सामान्यार्थसमुत्थानेविभाग स्तुसमःस्मृतः॥अनेकपितृकाणान्तुपितृतोभागकल्पना२२ भूर्यापितामहोपात्तानिबन्धोद्रव्यमेवच॥तत्रस्यात्सदृशंस्वा म्यम्पितुःपुत्रस्यचोभयोः २३ विभक्तेपुसुतोजातोसवर्णायां विभागभाक् ॥दृश्याद्वातद्विभागःस्यादायव्ययविशोधिता त् २४ पितृभ्यांयस्ययद्दत्तंतत्तस्यैवधनम्भवेत् ॥ पितुरूर्ध्वं विभजतांमाताप्यंशंसमंहरेत् २५ ॥

अपने बाप दादेका द्रव्य जो किसीने हरलियाहो और वे न छुड़ासकेहों उसे अपनेभाइयोंकी सम्मति लेकर जो कोई लड़का छुड़ावे तो वह धन और विद्या पढ़नेपढ़ानेसे जो धनमिले सो भी दूसरेभाइयोंको न दे आपही सबलेवे २१ जिस धनका विभाग न भयाहो उसे जो कोई खेती व व्यापारकरके बढ़ावे तो सबकाबराबरही भागहोताहै और दादेकेधनमें अपने अपनेबापकाभागबांटके फिर उसमें अपनाभाग लगालेवें २२ जोभूमि,निबंध(रोजीना)चुंगी व गणेशपूजा)और धनदादेनेकमायाहो उसमें पिता और पुत्रदोनोंका तुल्यअधिकारहै २३ पिताके जीतेही,पुत्रका विभाग होचुकाहो और तब सवर्ण(अपनीजातिकी) स्त्रीमें कोई और पुत्र उत्पन्नहो तो वह अपनी माता पिताकाभागपावे (और पिताकेअनन्तर भाई आपसमें विभागकरें उसके अनन्तर जिसकागर्भउन के पिताहीसे हुआहो परवे न जानतेहों ऐसा कोई और पुत्र उनकी माताके उपजे तो)आय व्यय (आमदनी और खर्च) शोधनकर (मुजरेदेके)जो धन बाक़ीहो उसमें से उस पुत्रको भी भागदे २४ माता पिताने जो चीज़ जिसको दीहो वह उसीकाधनहोगा पिता के देहत्यागहोनेपर भाईआपसमें विभागकरें तो माता भी अपने पुत्रोंके बराबर एक भाग ले लेवे २५ ॥

असंस्कृतास्तुसंस्कार्याभ्रातृभिःपूर्वसंस्कृतैः ॥ भगिन्य
श्चनिजादंशाद्दत्वांशंतुतुरीयकम् २६ चतुस्त्रिद्व्येकभागाःस्यु
र्वर्णशोब्राह्मणात्मजाः॥ क्षत्रजास्त्रिद्व्येकभागाविड्जास्तुद्व्ये
कभागिनः २७ अन्योन्यापहृतद्रव्यंविभक्तंयत्तुदृश्यते ॥
तत्पुनस्तेसमैरंशैर्विभजेरन्नितिस्थितिः २८ अपुत्रेणपरक्षेत्रे
नियोगोत्पादितःसुतः ॥ उभयोरप्यसौरिक्थीपिण्डदाताच
धर्मतः २९ ॥

पिता के अनंन्तर विभाग करने लगें तो) जिस भाई का विवाह आदि संस्कार न भयाहो तो उसका संस्कार करके तब धन बांटे और जो विनाव्याही बहिन हो तो जिस जाति की स्त्री से उत्पन्न हुई हो उस जाति के पुत्र को जैसा अंश मिलसके वैसा एक अंश अलगकरके उसमें से चौथाई देके व्याहदेना २६ ब्राह्मण से ब्राह्मणी आदि स्त्री में उत्पन्न पुत्र वर्ण क्रम के अनुसार चार चार तीन २ दो २ एक २ भाग लें ॥ क्षत्रिय से क्षत्रिया आदि स्त्री में उत्पन्नपुत्र क्रम से तीन २ दो २ एक २ भाग पावे और वैश्य से वैश्या आदि स्त्रियोंके पुत्र क्रम से दो २ और एक एक भाग लेवें तात्पर्य यह है कि ब्राह्मण को चारोंवर्णकी स्त्रीका अधिकार कहा है और जो उनसवों में एक एक पुत्र जनमेहों तो उस ब्राह्मण के धनके १० तुल्य भागकरे ४ ब्राह्मणी का पुत्रले ३ क्षत्रियाका २ वैश्या का और एकशूद्रा का पुत्र लेवे ऐसेही क्षत्री और वैश्यमें भी लगालो २७ जो द्रव्य विभाग के समय आपस में दवारक्खीहो और विभागहोने पीछे देखपड़े तो उस को फिर सब बराबरभागकरके बांटलें यह शास्त्रकीमर्यादाहै २८ जिस के पुत्र न हो उसने जो अपने बड़ों की आज्ञा से दूसरे के क्षेत्र (स्त्री) में पुत्र उत्पन्नकियाहोतो वहपुत्रदोनों वर्जी औरक्षेत्री का पिण्डदेनेवाला और धनलेनेवालाभी धर्म्मपूर्वकहोताहै २९॥

यस्याम्रियेतकन्यायावाचासत्येकृतेपतिः॥तामनेनविध
नेननिजोविंदेतदेवरः ३० यथाविध्यधिगम्यैनांशुक्लवस्त्रांशु
चिव्रताम् ॥ मिथोभजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृतावृतौ ३१
औरसोधर्मपत्नीजस्तत्समःपुत्रिकासुतः॥ क्षेत्रजःक्षेत्रजात
स्तुसगोत्रेणेतरेणवा ३२ गृहेप्रच्छन्नउत्पन्नोगूढजस्तुसुत
स्मृतः ॥ कानीनःकन्यकाजातोमातामहसुतोमतः ३३ अक्ष
तायांक्षतायांवाजातःपौनर्भवःसुतः ॥ दद्यान्मातापितावायं
सपुत्रोदत्तकोभवेत् ३४ क्रीतश्चताभ्यांविक्रीतःकृत्रिमःस्या
त्स्वयंकृतः॥ दत्तात्मातुस्वयंदत्तोगर्भोविन्नःसहोढजः ३५ ॥

जिसकन्याका वाग्दान होनेपर वरमरजावे तो उसकन्या को देवर (पतिका भाई ज्येठा या छोटा) व्याहे ३० और यथाविधि (अपने अंगमें घीलगाकर मौनहोके) जवतक कोई सन्तति न उत्पन्नहो तवतक हरएक ऋतुकालमें उस स्त्रीको श्वेतवस्त्र पहिना कर और मन, वाणी और शरीरकासंयमकराकर एकहीवार गमन करे ३१ जो अपनी धर्मपत्नी में (विवाहितास्त्रीमें) पुत्रउत्पन्नहो वह औरसकहाताहै पुत्रिकासुत (वेटीकावेटा वा वेटीही) भी उसी के (औरसके) वरावरहै, अपनी स्त्रीमें जो सगोत्रसे वा दूसरेसेभी उत्पन्नहो वहपुत्र क्षेत्रजकहलाताहै ३२ गृहमें जो गुपचुपपुत्रजन्मे वह गूढ़ज है, जो कन्या (वेव्याहीस्त्री) से उत्पन्नहो वह कानीन कहलाताहै और नानाका पुत्रहोताहै ३३ जोक्षतयोनि वा अक्षत योनि पुनर्भूमें उत्पन्नहोताहै वह पौनर्भव कहलाताहै जिसपुत्रको माता व पितादेदेवे वह दत्तकहोता है ३४ माता पिता जिसको वेंचदें वहक्रीतपुत्र कहलाताहै जो माता पितासे हीनहो उसको कोई लोभ दिखाकर पुत्रवनाले तो वह कृत्रिमसुत कहलाता है अपनेसे जो किसीका पुत्रहोजावे उसे दत्तात्माकहते जो विवाह करते समय गर्भ में रहाहो उसे सहोढज कहतेहैं ३५ ॥

उत्सृष्टोगृह्यतेयस्तुसोपविद्धोभवेत्सुतः ॥ पिण्डदोंश
हरश्चैषांपूर्वाभावेपरःपरः ३६ सजातीयेष्वयंप्रोक्तस्तन
येपुमयाविधिः ॥ जातोऽपिदास्यांशूद्रेणकामतोंशहरोभवे
त् ३७ मृतेपितरिकुर्युस्तम्भ्रातरस्त्वर्द्धभागिकम् ॥
अभ्रातृकोहरेत्सर्वंदुहितॄणांसुतादृते ३८ पत्नीदुहितरश्चै
वपितरौभ्रातरस्तथा ॥ तत्सुतागोत्रजाबन्धुशिष्यसब्रह्म
चारिणः ३९ एषामभावेपूर्वस्यधनभागुत्तरोत्तरः ॥ स्वर्यात
स्यह्यपुत्रस्यसर्ववर्णेष्वयंविधिः ४१ वानप्रस्थयतिब्रह्म
चारिणांरिक्थभागिनः ॥ क्रमेणाचार्य्यसच्छिष्यधर्मभ्रा
त्रेकतीर्थिनः ४१ ॥

जिसको माता पिता ने त्याग दिया हो उसे कोई और पुत्र बनालेवे तो वह अपविद्धसुत कहलाता है इन बारह प्रकार के पुत्रों में जो पहिले २ नहीं तो उनके अनन्तर जो जो पढ़े हैं वे पिण्ड देने और धन लेने के अधिकारी होते हैं ३६ यह विधि सजातीय पुत्रों में मैंने कही यदि शूद्रदासी में भी पुत्र उत्पन्न करे तो वह पिता की अनुमति से पूरा भाग पाता है ३७ पिता मरगया हो तो उस दासी पुत्र को भाई लोग आधा भागदें और भाई नहों तथा लड़की का पुत्र (नाती)भी नहो तो वह दासी पुत्र पिता का सब धन ले लेवे ३८ जिसके किसी प्रकार का पुत्र नहो वह मरजाय तो उसका धन पत्नी (विवाहितास्त्री) (दुहिता) (लड़कियां) पिता, माता, भाई उनके लड़के गोत्रज (गोती) बन्धु बिरादरी शिष्य (चेला) और ब्रह्मचारी (गुरुभाई) ३९ इनमें से पहिले २ के अभाव में दूसरे२अधिकारी होतेहैं यहीविधि सब वर्णों में जो अपुत्र मरजाय उसकी जाननी ४० वानप्रस्थ, यती और ब्रह्मचारी इनका धन क्रमसे (धर्मभ्रात्रेकतीर्थी) उसी एक आश्रम में रहनेवाला धर्म का भाई, सच्छिष्य (अध्यात्मशास्त्र पठितचेला) और आचार्य्य ये लेवें ४१ ॥

संसृष्टिनस्तुसंसृष्टीसोदरस्यतुसोदरः ॥ दद्यादपहृ
च्चांशंजातस्यचमृतस्यच ४२ अन्योदर्य्यस्तुसंसृष्टीनान्यं
दर्योधनंहरेत् ॥ असंसृष्ट्यविवादद्यात्संसृष्टोनान्यमात
जः ४३ क्लीवोथपतितस्तज्जःपंगुरुन्मत्तकोजडः ॥ अ
न्धोचिकित्स्यरोगाद्याभर्त्तव्याःस्युर्निरंशकाः ४४ औरस
क्षेत्रजास्त्वेषांनिर्दोषाभागहारिणः ॥ सुताश्चैषांप्रभर्त्त
व्यायावद्वैभर्त्तसात्कृतः ४५ अपुत्रायोषितश्चैषांभर्त्त
व्याःसाधुवृत्तयः ॥ निर्वास्याव्यभिचारिण्यःप्रतिकूला
स्तथैवच ४६ ॥

(जो विभक्त होकर फिर भाई वा पिता आदि के साथ धन मिलाके इकट्ठा रहता हो वह संसृष्टी का है) संसृष्टी का धन संसृष्टी लेवे सगा भाई संसृष्टी मरे तो उसका धन सगा भाई जो जीता संसृष्टी है सो ले और यदि संसृष्टी उसके मरने पर पुत्र जन्मे तो ये दोनों उसे उसके पिता का भाग दे देवें ४२ सापत्न भ्राता (सवतीला भाई) जो संसृष्टी हो तो धनले और असंसृष्टी हो तो न ले परन्तु सगा भाई असंसृष्टी भी हो तो धन पावे और सापत्न भ्राता संसृष्टीभी हो तो सब धन न ले लेवे आधा सगे को भी देवे ४३ क्लीव (नपुंसक) पतित (पतितका पुत्र, लँगड़ा) उन्मत्त (बौड़हा) जड़ (अज्ञानी) अन्ध और अचिकित्स्य रोग जिसको ऐसी व्याधिहो कि दवा न हो सके) इनको भाग न देना केवल भोजन वस्त्र देना (४४ इन सबों के औरस पुत्र व क्षेत्रज पुत्र जो निर्दोष हों तो भाग पावें और इनकी लड़कियों का जब तक व्याही जाकर भर्ता को सौंपी न जावें तब तक पालन करना ४५ इनकी पुत्र हीन स्त्रियों का भी यदि साधुवृत्ति हों तो पालन करना और व्यभिचारिणी अथवा प्रतिकूल (कहना न मानती) हों तो निकाल देना ४६ ॥

पितृमातृपतिभ्रातृदत्तमध्यग्न्युपागमत् ॥ आधिवेद
निकाद्यंचस्त्रीधनन्तत्प्रकीर्त्तितम् ४७ बन्धुदत्तन्तथाशुल्कम
न्वाधेयकमेवच ॥ अतीतायामप्रजसिबान्धवास्तदवाप्नुयुः
४८ अप्रजस्त्रीधनम्भर्त्तुर्ब्राह्मणादिचतुर्ष्वपि ॥ दुहितृणाप्र
सूताचेच्छेषेपुपितृगामितत् ४९ दत्वाकन्यांहरन्दण्ड्योव्य
यन्दद्याच्चसोदयम् ॥ मृतायान्दत्तमादद्यात्परिशोध्योभय
व्ययम् ५० दुर्भिक्षेधर्म्मकार्य्येचव्याधौसम्प्रतिरोधके ॥ गृ
हीतंस्त्रीधनम्भर्त्तानस्त्रियैदातुमर्हति ५१ ॥

जो धनपिता,माता,भाई और पतिनेदियाहो,जो मातुलआदि संबन्धियोंनेव्याहकेसमय अग्निके सन्निधिमेंदियाहो और आधिवेदनिक (जो धन दूसरा व्याहकरनेकेसमय पहिलीस्त्रीको उसके संतोषकेलिये पतिदेताहै)इत्यादिक स्त्रीधनकहलातेहैं ४७ इसीप्रकार बन्धुओंने जो दियाहो,शुल्क(जोधनलेकर कन्यादीजातीहै) और अन्वाधेय(जो व्याहके अनन्तर भर्तृकुल या पितृकुलसे मिले) येभी स्त्रीधनकहलातेहैं और जो विनाअपत्य स्त्री मरजायतो इन पूर्वोक्त सबप्रकारके धनोंको बांधवभाई आदि बांटलें ४८ जो स्त्री निरपत्य मरीहो तो ब्राह्म आदि चारविवाह(जो आचाराध्यायमें कहगयेहैं उन)में प्राप्त स्त्रीधन पतिलेवे और इनसे दूसरेविवाहोंमें प्राप्तधन मातापितालेवें परन्तु जो स्त्रीको अपत्य जन्मेंहों तो उसकी लड़की व लड़कियोंकी लड़की हरएक व्याहका मिलाहुआ धनपावें ४९ कन्याको वाग्दानकरके(देनेकहकर)विना किसीकारण न देवे तो राजाउसकी शक्तिकेअनुसार दण्डले औरजोधनघरका उठाहो वह व्याजसमेत दिलादे और जो वाग्दानकेअनन्तर कन्यामरजावे तो अपना और कन्यादाताका व्यय (खर्च)शोधन (मुजरा)देकरके जो अपनेदियेहुयेधनका शेषबचे सो वरलेवे ५० दुर्भिक्ष(कालपड़नेमें)धर्मकार्य,रोग और सम्प्रति रोधक (कैदी) में जो स्त्री धनपतिने लियाहो सो स्त्रीको न देवे ५१ ॥

अधिविन्नस्त्रियैदद्यादाधिवेदनिकंसमम् ॥ नदत्तंस्त्रीधन
यस्यैदत्तेत्वर्द्धंप्रकीर्त्तितम्५२विभागनिह्नवेज्ञातिबंधुसाक्ष्यं
भिर्लेखितैः॥ विभागभावनाज्ञेयागृहक्षेत्रैश्चयौतुकैः ५३ सी
म्नोविवादेक्षेत्रस्यसामंताःस्थविरादयः ॥ गोपासीमाकृषा
णाश्चसर्वेचवनगोचराः ५४ नयेयुरेनंसीमानांस्थलांगारतुष
द्रुमैः॥सेतुवल्मीकनिम्नास्थिचैत्याद्यैरुपलक्षितम् ५५ साम
न्तावासमग्रामाचत्वारोष्टौदशापिवा॥ रक्तस्रग्वसनाःसीमां
नयेयुःक्षितिधारिणः ५६ अनृतेतुपृथक्दण्ड्याराज्ञामध्यम
साहसम्॥ अभावेज्ञातृचिह्नानांराजासीम्नःप्रवर्तिता ५७

जब दूसराव्याह पतिकरे तो पहिलीस्त्रीको जो स्त्रीधनदिया न हो तो जितना व्याहमें धनलगे उतना धन देवे और स्त्री धन दियाहो तो आधादेवे५२ विभागका निह्नव(नाकबूल)करे तो जातिके लोग,बन्धुलोग,साखी,विभागपत्र और बँटेहुये गृह(घर)क्षेत्र (खेत) और धनसे उसको भावित (साबित)करे ५३ ॥ इतिरिक्थ विभागप्रकरणम् ॥ (दोगांवकीभूमिकी सीमा वा एकही ग्रामके दोखेतोंकी)सीमाका विवादहो तो सामन्त (पासपासके गांवों में रहनेवाले)वृद्धलोग,गोप,(चरवाहे)सीमाके पासका खेतजोतनेवाले और जो वन घूमाकरते हैं ५४ ये सब राजाको स्थल (ऊंची भूमि)अंगार (कोला)तुष(भुस)वृक्ष,सेतु(पुल) वल्मीक (बेमउरि) निम्न(गड़हे)अस्थि(हड्डी)औरचैत्य (पत्थरआदिके बांध)आदि से सीमाकी चिह्नाटी बतलावें और राजा निर्णयकरे ५५ (यदि ये कोई चिह्न न मिलें तो आसपास के गावोंके रहनेवाले व उसी गांव के वासी ४,८ व १० मनुष्य लालमाला और वस्त्र पहिनके शिरपर मिट्टीका टुकड़ा लेकर जहांसीमा ठहरादें वहीं निश्चितकरना ५६जो येझूंठे समझपड़ें तो राजाइनहरएकको मध्यमसाहस ५२०पण (जो आचाराध्यायमें कहआयेहैं)का दण्डदे और जातिके लोग अथवा चिह्नाटी कोई भी न हों तो राजाआपहीठहरादे५७

आरामायतनग्रामनिपानोद्यानवेश्मसु ॥ एषएवविधि
र्ज्ञेयोवर्षाम्बुप्रवहादिषु ५८ मर्यादायाःप्रभेदेचसीमातिक्रम
णेतथा ॥ क्षेत्रस्यहरणेदण्डाअधमोत्तममध्यमाः ५९ ननिषे
ध्योल्पवाधस्तुसेतुःकल्याणकारकः ॥ परभूमिंहरङ्कूपःस्व
ल्पक्षेत्रोबहूदकः ६० स्वामिनेयोनिवेद्यैवक्षेत्रेसेतुंप्रवर्त्तये
त् ॥ उत्पन्नंस्वामिनोभोगंस्तदाभावेमहीपतेः ६१ फाला
हतमपिक्षेत्रंनकुर्य्याद्योनकारयेत् ॥ सप्रदाप्यःकष्टफलंक्षेत्र
मन्येनकारयेत् ६२ माषानष्टौतुमहिषीशस्यघातस्यकारि
णी ॥ दण्डनीयातदर्द्धन्तुगौस्तदर्द्धमजाविकम् ६३ ॥

यहीविधि बगीचा, बैठक गांव, पानीका स्थल (कूप तड़ाग आदि) उद्यान (क्रीड़ास्थल) और घर की सीमा के विवाद तथा बरसातके जलबहनेके स्थल के विवादमेंभीजानना ५८ मर्य्यादा कईखेतोंके बीच जो सबकीसाधारणभूमि सीमा अलगानेकेलिये छूटीरहतीहै उसके तोड़नेमें सीमालांघने और खेतहरने में क्रम से अधम उत्तम और मध्यमदण्ड राजादेवे ५६ यदि कोई सेतु और कूपआदि दूसरेके खेत में बनाना चाहे तो खेत का स्वामी मना न करे क्योंकि इनसे पानीआदि मिलनेका उपकार बहुत होताहै और हानि बहुतथोड़ीहोतीहै ६० जो स्वामीकी अनुमति के विनाही दूसरेकी भूमिमें सेतुबनाताहै तो उसमेंजो पैदाहो सो स्वामी भोगकरे स्वामी न हो तो राजालेवे बनानेवालेको कभी न दे ६१ जो किसीका खेतजोतनेको लेकर एकाधबार थोड़ाहल चलाके फिर न आपजोते न और किसीसे जुतवावे तो वह खेत स्वामी उससेछीनके दूसरेकोजोतनेकेलियेदेदेवे और उससेउतना द्रव्य व अन्नलेवे कि जितना उसखेतमें उपजता ६२ इति सीमा विवादप्रकरणम् ॥ जिसकी भैंस, गौ, अथवा भेड़ बकरी दूसरे के खेतको चरजाय तो भैंसआदि के स्वामी को राजा क्रमसे ८४ और दो माष ताम्रिक पणका बीसवांभाग दण्ड लगावे ६३ ॥

अधिविन्नस्त्रियैदद्यादाधिवेदनिकंसमम् ॥ नदत्तंस्त्रीधन यस्यैदत्तेत्वर्द्धंप्रकीर्त्तितम् ५२ विभागनिह्नवेज्ञातिबंधुसाक्ष्याभिलेखितैः॥ विभागभावनाज्ञेयागृहक्षेत्रैश्चयौतुकैः ५३ सीम्नोविवादेक्षेत्रस्यसामंताःस्थविरादयः ॥ गोपासीमाकृषाणाश्चसर्वेचवनगोचराः ५४ नयेयुरेनंसीमानांस्थलांगारतुषद्रुमैः॥सेतुवल्मीकनिम्नास्थिचैत्याद्यैरुपलक्षितम् ५५ सामन्तावासमग्रामाचत्वारोऽष्टौदशापिवा॥ रक्तस्रग्वसनाःसीमां नयेयुःक्षितिधारिणः ५६ अनृतेतुपृथक्दण्ड्याराज्ञामध्यम साहसम्॥ अभावेज्ञातृचिह्नानांराजासीम्नःप्रवर्तिता ५७

जब दूसराव्याह पतिकरे तो पहिलीस्त्रीको जो स्त्रीधनदिया न हो तो जितना व्याहमें धनलगे उतना धन देवे और स्त्री धन दिया हो तो आधादेवे ५२ विभागका निह्नव(नाकबूल)करे तो जातिके लोग,बन्धुलोग,साखी,विभागपत्र और बँटेहुये गृह(घर)क्षेत्र (खेत) और धनसे उसको भावित (साबित)करे ५३ ॥ इतिरिक्थ विभागप्रकरणम् ॥ (दोगांवकीभूमिकी सीमा वा एकही ग्रामके दोखेतोंकी)सीमाका विवादहो तो सामन्त (पासपासके गांवों में रहनेवाले)वृद्धलोग,गोप,(चरवाहे)सीमाके पासका खेतजोतनेवाले और जो वन घूमाकरते हैं ५४ ये सब राजाको स्थल (ऊंची भूमि)अंगार (कोला)तुष(भुस)वृक्ष,सेतु(पुल) वल्मीक (वेमउरि) निम्न(गड़हे)अस्थि(हड्डी)औरचैत्य (पत्थरआदिके बांध)आदि से सीमाकी चिह्नाटी बतलावें और राजा निर्णयकरे ५५ (यदि ये कोई चिह्न न मिलें तो आसपास के गावोंके रहनेवाले व उसी गांव के वासी ४,८ व १० मनुष्य लालमाला और वस्त्र पहिनके शिरपर मिट्टीका टुकड़ा लेकर जहांसीमा ठहरादें वहीं निश्चितकरना ५६ जो येझूंठे समझपड़ें तो राजा इनहरएकको मध्यमसाहस ५४०पण (जो आचाराध्यायमें कहआयेहैं)का दण्डदे और जातिके लोग अथवा चिह्नाटी कोई भी न हों तो राजाआपहीठहरादे ५७

आरामायतनग्रामनिपानोद्यानवेश्मसु ॥ एषएवविधि
र्ज्ञेयोवर्षांबुप्रवहादिषु ५८ मर्यादायाःप्रभेदेचसीमातिक्रम
णेतथा ॥ क्षेत्रस्यहरणेदण्डाअधमोत्तममध्यमाः ५९ ननिषे
ध्योल्पबाधस्तुसेतुःकल्याणकारकः ॥ परभूमिंहरङ्कूपःस्व
ल्पक्षेत्रोवहूदकः ६० स्वामिनेयोनिवेद्येवक्षेत्रेसेतुंप्रवर्त्तये
त् ॥ उत्पन्नंस्वामिनोभोगंस्तदाभावेमहीपतेः ६१ फाला
हतमपिक्षेत्रंनकुर्य्याद्योनकारयेत् ॥ सप्रदाप्यःकष्टफलंक्षेत्र
मन्येनकारयेत् ६२ माषानष्टौतुमहिषीशस्यघातस्यकारि
णी ॥ दण्डनीयातदर्द्धन्तुगौस्तदर्द्धमजाविकम् ६३ ॥

यहीविधि बगीचा, बैठक गांव, पानीका स्थल (कूप तड़ाग आदि) उद्यान (क्रीड़ास्थल) और घर की सीमा के विवाद तथा बरसातके जलबहनेके स्थल के विवादमेंभीजानना ५८ मर्य्यादा कईखेतोंके बीच जो सबकीसाधारणभूमि सीमा अलगानेकेलिये छूटीरहतीहै उसके तोड़नेमें सीमालांघने और खेतहरने में क्रम से अधम उत्तम और मध्यमदण्ड राजादेवे ५६ यदि कोई सेतु और कूपआदि दूसरेके खेत में बनाना चाहे तो खेत का स्वामी मना न करे क्योंकि इनसे पानीआदि मिलनेका उपकार बहुत होताहै और हानि बहुतथोड़ीहोतीहै ६० जो स्वामीकी अनुमति के बिनाही दूसरेकी भूमिमें सेतुबनाताहै तोउसमेंजो पैदाहो सो स्वामी भोगकरे स्वामी न हो तो राजालेवे बनानेवालेको कभी न दे ६१ जो किसीका खेतजोतनेको लेकर एकाधवार थोड़ाहल चलाके फिर न आपजोते न और किसीसे जुतवावे तो वह खेत स्वामी उससेछीनके दूसरेकोजोतनेकेलियेदेदेवे और उससेउतना द्रव्य व अन्नलेवे कि जितना उसखेतमें उपजता ६२ इति सीमा बिवादप्रकरणम् ॥ जिसकी भैंस, गौ, अथवा भेड़ बकरी दूसरे के खेतको चरजाय तो भैंसआदि के स्वामी को राजा कमसे ८४ और दो माष ताम्रिक पणका बीसवांभाग दण्ड लगावे ६३ ॥

भक्षयित्वोपविष्टानांयथोक्ताद्द्विगुणोदमः ॥ सममेषावि
वीतेपिखरोष्ट्रंमाहिषीसमम् ६४ यावत्सस्यंविनश्येत्ताव
त्स्यात्क्षेत्रिणःफलम् ॥ गोपस्ताड्यस्तुगोमीतुपूर्व्वोक्तंदण्ड
मर्हति ६५ पथिग्रामविवीतान्तेक्षेत्रेदोषोनविद्यते ॥ अका
मतःकामचारेचौरवद्दण्डमर्हति ६६ महोक्षोत्सृष्टपशवःसू
तिकागन्तुकादयः ॥ पालोयेषांच*तेमोच्यादैवराजपरिप्लु
ताः ६७ यथार्पितान्पशून्गोपःसायंप्रत्यर्प्पयेत्तथा ॥
प्रमादमृतनष्टांश्चप्रदाप्यःकृतवेतनः ६८ ॥

खेतचरके जो वहाँबैठे व सोवे तोपूर्वोक्तदण्डसेदूनादण्डलेना और विवीताघास आदि के रखनेका बड़ा उसमें भी भैंसआदि चलीजायँ तो पहिलेही के बराबर दण्डलेना गधा और ऊंट के स्वामीसे भैंसके तुल्य दण्डलेवे ६४ जितना अनाज अटकल से खायेहों उतनाखेतके स्वामीकोदिलावे और गोप (चरवाहा) को ताड़ना (शरीरदण्डदे) परन्तु पशु स्वामीसे केवल पूर्वोक्तधनही दण्डलेना ६५ राह और गांवके पास जो खेतहों उसमें भूल से चौआपड़जाय तो दोषनहीं और जानबूझ के डाले तो चोर के तुल्य दण्डपावे ६६ महोक्ष (जो बैल गायोंके वरदानेको छोड़ाहो उत्सृष्ट पशु (वृषोत्सर्ग व किसी देवताके निमित्त छोड़ागयापशु) दशदिनकीविआईहुई) अपने यूथसे बहकके दूरदेशसे आयाहो) और जिसका पालनेवाला न हो तथा राजा और दैवसेपीड़ितहो ऐसेपशु खेतखायजायँ भी तो छोड़देना दण्ड न लेना ६७ गोप (चरवाहे)को जैसा पशु सौंपाहो वह वैसाही सन्ध्याकालमेंलाकर स्वामीको सौंपे और जो उसकेभूलसे पशुनष्टहोजायँ तो उसकी मँजूरी में पशुकामोल स्वामीको देनेकेलिये राजाकाटलेवे ६८॥

---

* पालागशालमोत्स्याइतिपाठान्तरम्

पालदोषविनाशेतुपालेदण्डोविधीयते ॥ अर्द्धत्रयोदशप
णःस्वामिनोद्रव्यमेवच६९ ग्रामेच्छायागोप्रचारोभूमिराज
वशेनवा॥द्विजस्तृणैधपुष्पाणिसर्वतःसर्वदाहरेत्७०धनुःश
तंपरीणाहोग्रामेक्षेत्रांतरंभवेत् । द्वेशतेखर्वटस्यस्यान्नगरस्य
चतुश्शतम् ७१ स्वंलभेतान्यविक्रीतंक्रेतुर्दोषोप्रकाशते ॥
हीनाद्रहोहीनमूल्येवेलाहीनेचतस्करः ७२नष्टापहृतमासा
द्यहर्तारंग्राहयन्नरम् ॥ देशकालातिपत्तौचगृहीत्वास्वयमर्प
येत् ७३ ॥

यदिपाल (चरवाहे) के दोषसे पशुका विनाशहो तो साढ़ेतेरह पणराजादण्डले और पशुस्वामीको उपपशुकामोल दिलादेवे ६९ गांवके वसनेवालोंकी इच्छासे अथवा उसभूमिकाजो राजाहोउस कीआज्ञासेगौओंकेचरनेकेलिये कुछधरतीविनाजुतीछोड़देना और द्विजलोगदेवपूजनेकेलिये सबस्थल (जगह) सेतृणलकड़ी औरफल विनापूछेअपनी चीज़कीनाईं+लेवे ७० गांवकेचारोंओर सौधनुप परिमित विनजुतीधरतीछोड़के तबखेतबनावेकर्व्वट*(कसवा) के चारोंओरदोसौधनुप तथानगर (शहरकेचारोंओर चारसौधन्वा छोड़दे ७१ इतिस्वामिपालविवादप्रकरणम् ॥ किसीचीज़जोकोई दूसरावेचदिये वा बन्दकररखदियेहो और उसचीज़कास्वामीदेख पावेतोअपनी चीज़लेलेवेक्रेता(खरीदनेवाला)ग पचुपमोललिये हो तोउसकोदोषहोताहै हीन(जिसकेपास उसचीज़केआनको संभव नहोउससे) एकान्तमें, वारातको अथवा थोड़ेमोलपर मोललेतो चोरकासा दण्डपावे ७२ अपनीनष्टचीज़ जिसके पास देखे उसे स्थानपाल आदि राजमनुष्योंकोकहकरपकड़ादेवेजोदेखेकिनगीच कोईराजपुरुषनहीं है अथवाजबतककहेंगे तबतकवहभागजायगा तोआपही पकड़केराजपुरुषको सौंपदे ७३ ॥

---

* के समान ६ * खर्व्वटभी कहते हैं ७ ॥

विक्रेतुर्दर्शनाच्छुद्धिःस्वामीद्रव्यंनृपोदमम् ॥ क्रेतामूल
म्माप्नोतितस्माद्यःतस्यविक्रयी७४ आगमेनोपभोगेननष्टं
भाव्यमतोन्यथा पंचवन्धोदमस्तस्यराज्ञेतेनाविभाव्यते ७
हृतम्प्रनष्टंयोद्रव्यंपरहस्तादवाप्नुयात्॥अनिवेद्यनृपेदण्ड
सतुपण्णावतिंपणान् ७६ शौल्किकैःस्थानपालैर्वानष्टापहृत
माहृतम् ॥ अर्वाक्संवत्सरात्स्वामीहरेतपरतोनृपः ७७ प
णानेकशफेदद्याच्चतुरःपंचमानुषे ॥ माहिषोष्ट्रगवांद्वौद्वौपाद
म्पादमजाविके ७८ स्वकुटुम्बाविरोधेनदेयंदारसुताद्दते।
नान्वयेसतिसर्वस्वंयच्चान्यस्मैप्रतिश्रुतम् ७९॥

यदिवह मोललेनेवाला बेचनेवालेको दिखलादे तो आपछूट जाताहै और बेचनेवालेसे राजादण्डले चीज़के स्वामीको उसकी चीज़दिलादे और मोललेनेवालेका दामभीफेरवादे ७४ जिसकी चीज़हो वह आगम (लेखआदि अथवा भोगसे उसको भावित सावित)करे और जोसावितनकरसके तोजितनेकीचीज़हो उसका पंचमांश राजाउससे दण्डले ७५ जो अपनीखोगई वा चोरी गई चीज़ किसीकेहाथमेंदेखेऔर विनाराजाको निवेदनकियेहीले लेवेतो उसेछानवेपण राजा दण्डले ७६ शौल्किक (मासूललेने वाले) वास्थानपाल (थानेदार) जो किसीकी खोगई वा चोरीगई चीज़पाकर राजाकेपासलावे तो डोंडीपिटाके अपनेकोश (भंडार) में रखदे जो वर्षकेभीतर उसका स्वामीआवेतो पावे उपरान्तवह चीज़ राजाकी होजाती है ७७ जिसके एकशफ (एकखुरवाले घोड़ाआदि) खोगयेहों और फिरपावेतो राजाको चारपणदेवेमनुष्यकेलिये पांचपणदेवे भैंसऊंट और गौकेलिये दोपणदेवे बकरी और भेड़केलिये पणका चौथाईदेवे ७८ इतिस्वामि विक्रयप्रकरणम् ॥ किसीको दानकरना हो तो जितना देनेसे अपने कुटुम्ब के पालनपोषणमें घाटा न पड़े उतनादेना परन्तु स्त्री औरलड़के कादानन करना और पुत्रहोवेतो सर्वदादान न करना और जो चीज़ किसी और को देनकही हो वह भी दान न करना ७९ ॥

प्रतिग्रहःप्रकाशःस्यात्स्थावरस्यविशेषतः॥देयंप्रतिश्रुतंचैवदत्त्वानापहरेत्पुनः ८० दशैकपंचसप्ताहमासत्र्यहनार्द्धमासिकम् ॥ वीजायोवाह्यरत्नस्त्रीदोह्यपुंसांपरीक्षणम् ८१ अग्नौसुवर्णमक्षीणंरजतेद्विपलंशते ॥ अष्टौत्रपुणिसीसेचताम्रेपंचदशायसि ८२ शतेदशपलावृद्धिरौर्णकार्पाससौत्रिके ॥ मध्येपंचपलावृद्धिःसूक्ष्मेतुत्रिपलामता ८३ कार्मिकेरोमवन्धेचात्रिंशद्भागःक्षयोमतः ॥ नक्षयोनचवृद्धिश्चकौशेयेवल्कलेपुच८४देशंकालंचभोगंचज्ञात्वानष्टेबलावलम्॥ द्रव्याणांकुशलाब्रूयुर्यत्तदाप्यमसंशयम् ८५ ॥

लेनेवालासवकेसामनेदानले तिससें भी स्थावर (भूमिआदि) को अवश्यदशके सामनेलेवे जो जिसे देनेकहाहो वहउसकोदेना हीचाहिये और जो वस्तुदेचुके उसको कभी फेरलेना न चाहिये८० इतिदत्ताप्रदानिकप्रकरणम् ॥ जो वीज जो,गेहूं,धान आदिके वीज (लोहा)वैल आदि जो बोझा ढोसकेहैं ॥ रत्न(मोती आदि) दोह्य दुग्ध (भैंसआदि जोदूधदेतीहैं)और दास इनके उपरान्त तोक्रमसे १०,१,५ और ७ दिन (महीना ३ दिन और १५ दिनकेभीतरही इन्हें मारखके फेरसक्ताहै इसके उपरान्त नहीं फिरते ८१ सोना आगमें तपानेसे घटता नहीं चांदी सौपलमें दोपलघटतीहैपीतल और शीशा सौमें आठपल तांवापांच और लोहा दशपलघटताहै ८२ ऊन और कपासके मोटेसूतकी जो चीज़वनानेकोदेतो सौपलमेंदशपलवढ़ताहै मझोलेसूतकी चीज़में पांचपल और महीन सूतकी चीज़में तीनपलवढ़ताहै ८३ चूटाकाढ़नेकीचीज़ और रोवांवांधनेमें तीसवांभागघटताहै और कौशेय(रेशमआदि) तथावल्कल(वृक्षकीछाल)से जो चीज़वने उसमें न कुछघटे न वढ़े ८४ देशकाल और उपभोग समझके उसद्रव्य के जाननेवाले जोकहें सो देनायही निश्चयहै (क्योंकि सवद्रव्योंका घाटावाढ़ा लिखा नहीं जासक्ता.८५. इतिक्रीतानुशयप्रकरणम् ॥

बलाद्दासीकृतश्चौरैर्विक्रीतश्चापिमुच्यते ॥ स्वामिप्रा
णप्रदोभक्तत्यागात्तन्निष्क्रयादपि ८६ प्रव्रज्यावसितोराज्ञो
दासआमरणांतिकम् ॥ वर्णानामानुलोम्येनदास्यंनप्रति
लोमतः ८७ कृतशिल्पोपिनिवसेत्कृतकालंगुरोर्गृहे ॥ अ-
न्तेवासीगुरुप्राप्तभोजनस्तत्फलप्रदः ८८राजाकृत्वापुरेस्था
नंब्राह्मणान्न्यस्यतत्रतु॥त्रैविद्यंवृत्तिमाहूयात्स्वधर्म्मःपाल्य
तामिति८९निजधर्म्माविरोधेनयस्तुसामायिकोभवेत् ॥ सो
पियत्नेनसंरक्ष्योधर्म्मोराजकृतश्चयः ९० ॥

जो बलात्कार(जबरदस्ती)सेदास (गुलाम)बनायागयाहो(जि
सेचोरोंनेबेचदियाहो जिसने अपनेस्वामीका प्राणबचायाहो)और
जिसने खायाहुआ स्वामीको चुकादियाहो अथवा जितनेपरबिका
हो सो देदेवे तो वह दास दासता(गुलामी)से छूटजाताहै ८६ जो
प्रव्रज्य (संन्यास)से भ्रष्टभयाहो और प्रायश्चित्त न करे तो मरण
पर्य्यन्त वह राजाका दासबनारहताहै और उत्तम वर्णकेदास अ-
धमवर्णवाले होतेहैं उलटानहीं होता ८७ अंतेवासी विद्यापढ़नेतक
गुरूके घररहे वह जितने कालतक गुरूके पासरहनेका करारकर-
चुकाहो चाहे उससे पहिलेही विद्यापढ़चुके परन्तु उतने दिनतक
रहे और गुरू उसको भोजनदेवे और वह अपनेशिल्पका फल(जो
शिल्पसे कमावे सो)गुरूको देवे ८८ राजा अपनेपुर(दुर्ग = किला
आदि)में स्थान बनवाके उसमें तीनोंवेद पढ़ेहुये ब्राह्मणोंको कुछ
वृत्ति(जीविका)देकर बैठावे औरकहे कि अपनाधर्म्म(वर्णाश्रमध-
र्म)पालनकरो ८९ राजाकी आज्ञापाकर जो धर्म अपने धर्म्म(श्रु-
तिस्मृति)से विरुद्धनहो और जो उससमयमें उचित प्राप्तभयाहो
और इसीप्रकारका जो राजाने धर्मकहाहो सो भी यत्नसे ये लोग
रक्षितकरें ९० ॥

गणद्रव्यंहरेद्यस्तुसंविदंलंघयेच्चयः ॥ सर्वस्वहरणंकृत्वातंराष्ट्राद्विप्रवासयेत् ९१ कर्त्तव्यंवचनैःसर्वैःसमूहहितवादिनाम् ॥ यस्तत्रविपरीतःस्यात्सदाप्यःप्रथमंदमम् ९२ समूहकार्य्येआयातान्कृतकार्य्यान्विसर्जयेत् ॥ सदानमानसत्कारैःपूजयित्वामहीपतिः ९३ समूहकार्यप्रहितोयल्लभेततदर्प्पयेत् ॥ एकादशगुणंदाप्योयद्यस्मैनार्प्पयेत्स्वयम् ९४ धर्म्मज्ञाःशुचयोलुब्धाभवेयुःकार्य्यचिन्तकाः ॥ कर्तव्यंवचनंतेषांसमूहहितवादिनाम् ९५ श्रेणिनैगमपाखण्डिगणानामप्ययंविधिः ॥ भेदंचैषांनृपोरक्षेत्पूर्ववृत्तिंच पालयेत् ९६ ॥

जोगणद्रव्य (जिसमें सबगांवभरकाखेतहो उस) कोचुरावे और जो आपसकी व राजाकी संवित (सलाह) उल्लंघनकरे उसका सब द्रव्यहरणकरके अपनेराज्यसे निकालदेवे ९१ जो सबकाहित कहे उसकी बात और दूसरे सबलोग मानें जो उसके विरुद्ध हो उसको प्रथम साहसका दण्डदेना ९२ जो सबके कार्य्यकेलिये आयेहों उनका काम होचुकनेपर दानमान और सत्कार करके राजाविदाकरे ९३ समूहकार्य्य (सबके काम) के लिये जो भेजा गया उसने जो पायाहो सो सब भेजनेवालों को देदेवे यदि अपनेही से न सौंपे तो ग्यारहगुना उससे लेना ९४ धर्म जाननेवाले पवित्ररहने वाले और लोभीनहों ऐसे कार्य्यविचारके बनाने चाहिये और उनकी बात दूसरेलोगोंको माननी चाहिये ९५ श्रेणी (जो एकही व्यापार के करनेवालेहैं) नैगम (वेदके मानने वाले) पाखण्डी (वेद न मानने वाले) और गण (जो शास्त्रविद्या आदि एकही कामसे जीवें) इनसबोंकी भी यही विधिहै और इनकेभेद (धर्मव्यवस्था) की रक्षा राजाकरे तथा उनकी पूर्ववृत्तिकापालन भी करे ९६ इतिसंविध्व्यतिक्रमप्रकरणम् ॥

गृहीतवेतनःकर्म्मत्यजन्द्विगुणमावहेत्॥अगृहीतेसमंदा
प्योभृत्यैरक्ष्यउपस्करः १७दाप्यस्तुदशमंभागंवाणिज्यप
शुशस्यतः॥ अनिश्चित्यभृतिंयस्तुकारयेत्समहीक्षिता १८
देशकालंचयोतीयाल्लाभंकुर्य्याच्चयोन्यथा॥ तत्रस्यात्स्वामि
नश्छंदोधिकंदेयंकृतेधिके १९ योयावत्कुरुतेकर्मतावत्तस्य
तुवेतनम्।उभयोरप्यसाध्यंचेत्साध्यंकुर्य्याद्यथाश्रुतम् २००
अराजदैविकंनष्टम्भांडंदाप्यस्तुवाहकः॥ प्रस्थानविघ्नकृ
च्चैवप्रदाप्योद्विगुणांभृतिम् १ प्रक्रान्तेसप्तमंभागंचतुर्थंप
थिसंत्यजन्॥ भृतिमर्द्धपथेसर्वांप्रदाप्यस्त्याजकोपिच २॥

वेतन(मजूरी) लेकर जोकामनकरे तो राजा उससे दूनादिलावे और वेतन विना लियेहीकामकरना स्वीकारकरके फिरनकरेतो जितनावेतन उसकामकाहो उतना उससेलेवे भृत्यलोगउपस्कर(औजार) कीभीरक्षाकरें १७जोमॅजूरीठहरायेबिनाही कोईबनिज,पशु व अनाजकाकामकरावे तो उससेजितनालाभउसब्योपारमेंहोउस कादशांशभृत्यकोराजादिलावे १८जोभृत्यदेशऔरकालकाउल्लंघनकरेऔरलाभसेजोघाटाकरेतोउसकेवेतन(मॅजूरी)देनेमेंस्वामी कीइच्छापरंतुजोदेशकालकीचतुराईसे अधिकलाभकियाहोतोउस भृत्यकोवेतनअधिकदेना १९ (यदिएकहीकामकोदोमनुष्यकरेतो) जोजितनाकामकरेउसेउतनावेतन(मॅजूरी)देनादोनोंसेअसाध्यहो (नहोसकाहो)तो जितनोंसेहोसके उनकोकहीहुईरीतिसेवेतनदेना २००जोजोभांड(वर्तन)राजाऔर दैवकृतउत्पातके विनाहीनष्टभयाहो वहवाहक(ढोनेवाले)से लेनाऔरजोयात्रामेंविघ्न(बाधा)डाले उससेदूनीभृति(मॅजूरी)लेनी १ जोयात्राकेआरंभमेंभृतिछोड़नेलगे उससेसातवांभाग(हिस्सा)मॅजूरीकालेनाजोथोड़ीदूरचलकेछोड़ेउससेचौथाभागऔरजोआधीराहमेंछोड़ेउससेसारीमजूरीलेनाऔर छुड़ानेवालेसेभीइसीप्रकारदिलाना २॥ इतिवेतनादानप्रकरणम्॥

ग्लहेशतिकवृद्धेस्तुसभिकःपंचकंशतम् ॥ गृह्णीयाद्धूर्त्तकितवादितराद्दशकंशतम् ३ ससम्यक्पालितोदद्याद्राज्ञेभागंयथाकृतम् ॥ जितमुद्ग्राहयेज्जेत्रेदद्यात्सत्यंवचःक्षमी ४ प्राप्तेनृपतिनाभागेप्रसिद्धधूर्त्तमण्डले ॥ जितंससभिकेस्थानेदापयेदन्यथानतु ५ द्रष्टारोव्यवहाराणांसाक्षिणश्चतएवहि ॥ राज्ञासचिह्नंनिर्वास्याःकूटाक्षोपधिदेविनः ६ द्यूतमेकमुखंकार्य्यंतस्करज्ञानकारणात् ॥ एषएवविधिर्ज्ञेयःप्राणिद्यूतेसमाह्वये ७ सत्यासत्यान्यथास्तोत्रैर्न्यूनांगेन्द्रियरोगिणाम् ॥ क्षेपंकरोतिचेद्दण्ड्यःपणानर्द्धत्रयोदशान् ८ ॥

ग्लह(जुआके खेल)में जो सौरुपयेजीते उससे सभिक (फड़वाला)पांचरुपये सैकड़ेले और जो सौसे अधिकजीते उससे दशवां भागले ३ और वह(फड़वाला)जो भलीभांति राजासे रक्षितभया हो तो जो करार राजाको देनेकाकियाहो सो देदेवे और जीतनेवालेको जीत दिलादेवे और जुआखेलनेवालेको विश्वास के लिये क्षमाशीलहोके सत्यवचन देवे ४ जब राजा अपनाभाग पाचुकाहो और धूर्तमण्डल(जुआखेलनेकीजगह)प्रसिद्धहो तो सभिक(फड़वाले)के सामने जिसने जो जीताहो उसको उतना दिलादेवे इससे अन्यथाहो तो न दिलावे ५ ऐसे विवादके देखनेवाले और साखी भी वेही(जुआकेखेलनेवालेहों)होतेहैं(नकि जैसा कहिआये हैं वेदशास्त्रपढ़े इत्यादि)और जो कपटसे खेलनेवालेहैं उन्हें राजा श्वप आदिसे माथेमें दग़वाकर अपनेराज्यसे निकलवादे ६ चोरों को पहिंचानने के लिये सब जुआरियोंका एकप्रधान बनानाचाहिये और जुआजो प्राणियों(मेढ़ालड़ाना)आदिसेकहाताहै उसमें भी यही विधिजानना ७ इतिद्यूतारूयम्प्रकरणम् ॥ जो किसीअंग भंगवाले व रोगी को मंत्री झूंठी बातोंसे अथवा व्यंगबोलने(तानामारनेसे)चिढ़ावे तो साढ़ेतेरहपण राजा उससे दण्डलेवे ८॥

उद्गूर्णेहस्तपादेतुदशविंशतिकौदमौ ॥ परस्परंतुसर्वेष
शस्त्रेमध्यमसाहसः २० पादकेशांशुककरोल्लुंचनेषुपण
न्दश ॥ पीडाकर्षांशुकावेष्टपादाध्यासेशतंदमः २१ शं
णितेनविनादुःखंकुर्वन्काष्ठादिभिर्नरः ॥ द्वात्रिंशतंपणान्दं
ण्ड्योद्विगुणंदर्शनेसृजः २२ करपाददतोभंगेछेदनेकर्णन
शयोः ॥ मध्योदंडोव्रणोद्भेदेमृतकल्पहतेतथा २३ चेष्टाभं
जनवाग्रोधेनेत्रादिप्रतिभेदने ॥ कन्धराबाहुसक्थ्नांचभंगे
मध्यमसाहसः २४ एकघ्नतांबहूनांचयथोक्ताद्द्विगुणादे
मः ॥ कलहापहृतंदेयंदण्डश्चद्विगुणस्ततः २५ ॥

अपने समान जातिवाले को मारने के लिये जो हाथ व पांव उठावे तो सबवर्णोंको क्रमसेदश और बीसपणदण्डदेनायदिशस्त्र उठावे तो मध्यम साहसका दण्डदेना२०जो पांव,केश,वस्त्र और हाथइनमें से कोई एकपकड़के खींचे तो दशपण दण्डलेना और जो कपड़े से लपेट बहुत दबाकर पांवसे मारे व खींचे तो सौ पणदण्डलेना।२१जो काठ आदिसे ऐसामारे कि रुधिर न निकले तो बत्तीसपण उससे दण्ड लेना और जो लोहू देखपड़े तो दूना लेना २२ जो हाथ, पांव और दांत तोड़दे, नाक व कान काटले फोड़ाकुचलदे और अधमरा करने के समान मारे तो उससे मध्यमसाहसका दण्डलेना २३ चलना, खाना और बोलना किसी का रोकदे आंख व जीभमें चोटदे तथाकंधा,बाहु और मोटीजांघ तोड़दे तो उसको मध्यमसाहसका दण्डदेना २४ कई मनुष्य मिलके एकको मारें पीटें तो जिस अपराधमें जितनादण्ड कहाहै उसका दूना उन हरएकसे लेना और जो चीज़ कलह में चुराली हो उसका दूनादण्ड राजालेवै और वहचीज़ भी स्वामीको दिला देनी चाहिये २५ ॥

दुःखमुत्पादयेद्यस्तुससमुत्थानजंव्ययम् ॥ दाप्योदण्डंच
योयस्मिन्कलहेसमुदाहृतः २६ अभिघातेतथाछेदेभेदेकु
ड्यावपातने ॥ पणान्दाप्यःपंचदशविंशतिंतद्द्वयंतथा २७
दुःखोत्पादिगृहेद्रव्यंक्षिपन्प्राणहरंतथा ॥ षोडशाद्यःपणा
न्दाप्योद्वितीयोमध्यमंदमम् २८दुःखेचशोणितोत्पादेशाखां
गच्छेदनेतथा ॥दण्डःक्षुद्रपशूनांतुद्विपणप्रभृतिःक्रमात् २९
लिंगस्यछेदनेमृत्यौमध्यमामूल्यमेवच ॥ महापशूनामेतेषु
स्थानेषुद्विगुणोदमः ३० प्ररोहिशाखिनांशाखास्कन्धसर्व
विदारणे ॥ उपजीव्यद्रुमाणांचविंशतेर्द्विगुणोदमः ३१ ॥

जो लड़ाईकरके किसीको दुःखपैदाकरे तो उसकी औषध में जो द्रव्यलगे सो और जिस दण्डयोग्य अपराधहो उतना दण्डभी देवे २६ जो कोई किसीकीभीत (दीवार) में धक्कादेछेदकरदे और बीचमेंगिरादे तो क्रमसे पांच,दश औरबीसपणदण्डदे और यदि सारीहीगिरादे तोपैंतीसपणदण्ड और उसके बनानेमें जोलगे सो देवे २७ जो किसीकेघरमें दुःखपैदाकरनेवाली व प्राणलेनेवाली चीज़-कोईफेंके तो उससेक्रमसे पहिले में सोलहपण और दूसरे (जीवलेनेवाली)में मध्यम साहसकादण्डदेना २८ छोटेछोटेपशुओं (बकरीहिरणआदि)को जो ताड़नकरे,ऐसामारोकि रुधिरनिकल आवे,निर्जीवअंग(सींगआदि) काटे अथवा सजीवअंग तोड़दे तो क्रमसे दो,चार,छः और आठपणदण्ड देवे २९ और जो उनके लिंगकाछेदनकरे व मारडाले तो स्वामीको उनकामोलदे औरराजाको मध्यमसाहसकादण्डदे परन्तु जो महापशु (घोड़ाआदि)के पूर्वोक्त अंगोंकाभंगकरे तो दूनादण्डदेवे ३० जिनवृक्षोंकी कलम लगसक्तीहै ऐसे वृक्षोंको वा जिनवृक्षोंकेद्वारा मनुष्यकी जीविका चलसके उनकीशाखा (डाली)स्कन्ध(पेड़)अथवा मूलजड़काटे तो क्रमसे बीस चालीस और अस्सी पण दण्ड देवे ३१ ॥

अभिगन्तास्मिभगिनींमातरंवातवेतिह ॥
द्राजापंचविंशतिकंदमम् ९ अर्द्धोधर्म्मेपुद्विगुणःपरस्त्रीषूत्तमे
पुच ॥ दण्डप्रणयनंकार्य्यंवर्णजात्युत्तराधरैः १० प्रातिलो
म्यापवादेपुद्विगुणत्रिगुणादमाः ॥ वर्णानामानुलोम्येनत
स्मादर्द्धार्द्धहानितः ११ बाहुग्रीवानेत्रसक्थिविनाशेवाचिके
दमः ॥ शक्तस्तदर्द्धिकःपादनासाकर्णकरादिषु १२ अशक्त
स्तुवदन्नेवंदंडनीयःपणान्दश ॥ तथाशक्तःप्रतिभुवंदाप्यःक्षे
मायतस्यतु १३ पतनीयकृतेक्षेपेदण्डोमध्यमसाहसः ॥ उ
पपातकयुक्तेतुदाप्यःप्रथमसाहसम् १४ ॥

जो मा बहिनको गालीदेवे तो उससे पच्चीसपण राजादण्डले अपनेसेछोटीजातिको जोगालीदे तो जितनाकहाहै९उसकाआधा दण्डदे और अपनेसे बड़ीजाति वा पराई स्त्रीको गालीदे तो दूना दण्डदे इसीप्रकार वर्ण और जाति की उँचाई निचाई देखकर दण्डकी कल्पना करनी चाहिये १० ब्राह्मण आदि वर्णोंमें जो उलटा छोटा बड़ेको अधिक्षेप(गालीदेवे)तो दूना तिगुना आदि दण्डदेना और आनुलोम्यसे(बड़ीजातिवाला छोटीजातिवालेको) अधिक्षेप(गालिप्रदान)करें तो आधाआधा घटालेजाना ११ जो मुंहसे कहे कि तेरी भुजा,गला,आंख और हड्डी तोड़डालेंगे तो सौ पणदण्डलेना और पांव नासिका कान हाथ आदि तोड़नेकहेतो उसका आधा ५० पणलेना १२ अशक्त(रोगी)जो पूर्वोक्तबातेंकहे तो उससे दशपण दण्डलेना और जो रोगीको कोई समर्थमनुष्य उक्तप्रकार से(बाहुआदितोड़नेकहे)तो वह सौपणदण्ड औरउसके क्षेम(कुशलतासे)रहनेकेलिये प्रतिभूमी (जामिनभी) देवे १३ जो ऐसा आक्षेपकरे(तुहमतलगावे)कि जिससे पतित (जातिबाहर)हो नेका सम्भवहो तो मध्यमसाहसकादण्ड(जोपहिलेअध्यायमें कहि आये हैं)देना और उपपातक सहित आक्षेपकरे तो प्रथम साहस का दण्ड देना १४ ॥

त्रैविद्यनृपदेवानांक्षेपउत्तमसाहसः ॥ मध्यमोजातिपू
गानांप्रथमोग्रामदेशयोः १५ असाक्षिकहतेचिह्नैर्युक्तिभि
श्चागमेनच ॥ द्रष्टव्योव्यवहारस्तुकूटचिह्नकृतोभयात् १६
भस्मपंकरजःस्पर्शेदण्डोदशपणःस्मृतः ॥ अमेध्यपार्ष्णि
निष्ठ्यूतस्पर्शनेद्विगुणःस्मृतः १७ समेष्वेवंपरस्त्रीपुद्विगुण
स्तूत्तमेषुच ॥ हीनेष्वर्द्धदमोमोहमदादिभिरदण्डनम् १८
विप्रपीडाकरंछेद्यमंगमब्राह्मणस्यतु ॥ उद्गूर्णेप्रथमोदण्डः
संस्पर्शेतुतदर्द्धिकः १९ ॥

तीनों वेद जानने वाले को, राजा और देवताको आक्षेप करे तो उत्तम साहस दण्ड देना और जो जाति तथा समूह को आक्षेप लगाते उनसे मध्यम साहस तथा जो गांव और देश को आक्षेप देते उनसे प्रथम साहस दण्ड लेवे १५ ॥ इतिवाक्पारुष्यम् ॥ विना साक्षी दियेही कोई कहे कि हमें अकेले में किसीने मारा तो चिह्न (स्वरूप)युक्ति(कारण प्रयोजन आदि) और आगम (जनप्रवाद) विना साक्षी हारदेखे क्योंकि झूँठा चिह्न (निशानी) वनालेने की शंका रहती है इस लिये परीक्षा भी करनी चाहिये १६ जो भस्म (खाक) पंक (कीचड़) और रज (धूलि)दूसरेपर फेंके तो उससे दशपण और जो अमेध्य (थूकखखार आदि)पार्ष्णि(एंड़ी)और कुल्ली करके किसी को मारे तो उससेदूना(२०पण)दण्ड लेना १७ यहदण्ड अपनी बराबरवालों में जानना और उत्तम जातिको परस्त्री के विषय में दूनादण्ड देना छोटीजातिके विषयमें आधादण्ड देना और जो मोह(भूल) अथवा मदसे (नशापीने से वेहोश होकर) आक्षेप किये हो तो कुछ दण्ड न देना १८ ब्राह्मणको किसी दूसरी जातिवाला जिस अंग से दुःखदे उसका वह अंग छेद न करवा देना जो मारने के लिये शस्त्र उठावे तो प्रथम साहस का दण्ड देना और शस्त्र छुकर छोड़दे तो आधा दण्ड देना १९ ॥

चैत्यश्मशानसीमासुपुण्यस्थानेसुरालये ॥ जातुद्रुमाणां द्विगुणोदमोवृक्षेपुविश्रुते३२गुल्मगुच्छक्षुपलताप्रतानौषधि वीरुधाम् ॥ पूर्वस्मृतादर्द्धदण्डःस्थानेपूक्तेपुकर्त्तने ३३ सामा न्यद्रव्यप्रसभहरणात्साहसंस्मृतम् ॥ तन्मूल्याद्द्विगणोद्ग ण्डोनिह्नवेतुचतुर्गुणः ३४ यःसाहसंकारयतिसदाप्योद्विगु णंदमम् ॥ यश्चैवमुक्काहंदाताकारयेत्सचतुर्गुणम् ३५ अर्घ्या क्रोशातिक्रमकृद्भ्रातृभार्य्याप्रहारदः॥संदिष्टस्याप्रदाताचसं मुद्रगृहभेदकृत् ३६ सामन्तकुलिकादीनामपकारस्यकारकः पंचाशत्पणिकोदण्डएषामितिविनिश्चयः ३७ ॥

जो वृक्षचैत्यश्मशान (मशान व मरघट)सीमा (सरहद)पुण्य स्थान (तीर्थस्थल)और देवताके स्थानमें लगाहो अथवा प्रसिद्ध वृक्षहो उसकी शाखाआदि काटे तो दूनादण्डलेना ३२ गुल्म(जो लताघनीहो लम्बीनहो जैसे मालती)गुच्छ(जो सीधीनहो)जैसे(क रण्ड)क्षुप(छोटीटहनीवाली)जैसे(कनेल)और लता (दाख आदि) इनकी शाखाआदि पूर्वोक्त स्थानोंमें काटे तो आधादण्ड जानना ३३ इतिदण्डपारुष्यप्रकरणम् ॥ परायेकीचीज बलात्कार(जोरा-वरी)से लेना इसको साहसकहतेहैं जितने की चीज़लियेहोउससे दूनादण्डदेवे और यदि निह्नव(नाकबूल)करेतो चौगुनादण्डदे ३४ साहस जो दूसरेसे कराता है उसको दूनादण्डदेना और जो यह कहे कि जितना धनलगेगा हमदेंगे तूकर उसको चौगुनादण्डल-गाना ३५ जो पूज्यकापूजननकरे वा आज्ञा न माने,भाई की स्त्री को मारे,सन्देशा न कहे,तालातोड़े ३६ पड़ोसी और कुलिक(अ-पने कुलमें उत्पन्न आदि) का अपकारकरनेवालाहो इनसबों को पचास २ पण दण्ड देना यह निश्चय है ३७ ॥

स्वच्छन्दविधवागामीविक्रुष्टनाभिधावकः ॥ अकारणे चाविक्रोष्टाचण्डालश्चोत्तमान्स्पृशेत् ३८ शूद्रप्रव्रजितानां चदैवेपित्र्येचभोजकः ॥ अयुक्तंशपथंकुर्वन्नयोग्योयोग्यकर्म्मकृत् ३९ वृषक्षुद्रपशूनांचपुंस्त्वस्यप्रतिघातकृत् ॥ साधारणस्यापलापीदासीगर्भविनाशकृत् ४० पितापुत्रस्वसृभ्रातृदम्पत्याचार्य्यशिष्यकाः ॥ एषामपतितान्योन्यत्यागी चशतदण्डभाक् ४१ वसानस्त्रीन्पणान्दण्ड्योनेजकस्तुपरांशुकम् ॥ विक्रयावक्रयाधानयाचितेषुपणान्दश ४२ पितापुत्रविरोधेतुसाक्षिणांत्रिपणोदमः ॥ अन्तरेचतयोर्यःस्यात्तस्याप्यष्टगुणोदमः ४३ ॥

जो जान बूझके विधवा स्त्रीसे गमन करे कोई दुःखी होकर पुकारे और न दौड़े विना प्रयोजन जो पुकारे और चाण्डाल होकर ऊंची जातिको छूले ३८ शूद्र और प्रव्रजित (संन्यासी आदि) को जो दैव और पितृकर्म में खिलावे, अयुक्त (करनेयोग्य नहोऐसा) शपथ करे, जिस काम के योग्य न हो उसे भी करे ३९ बैल और छोटेपशुओं के पुंस्त्वका विनाशकरनेवाला, साधारण (जिस में बहुतेरों का स्वत्व हो ऐसी) वस्तु को छिपाने वाला दासी का गर्भ गिरानेवाला ४० इन सबों को और पिता,पुत्र,पति, भाई स्त्री,पुरुष,आचार्य्य और शिष्य ये पतित नहीं और इन्हें जो छोड़ दें उनको भी सौ रुपये दण्ड लगाना ४१ इतिसाहसप्रकरणम् ॥ धोबी पराया वस्त्रपहिने तो तीनपण दण्डलेना और जो बेचले या अवक्रयकर (भारेपर)दे मंगनीदे अथवा बन्धक रखदे तो दश पण दण्ड देना ४२ पिता और पुत्रके विवाद में जो साखी बने उससे तीनपण दण्ड देना और जो उनका बिचवई हो उसको चौबीस पण दण्ड देना ४३ ॥

तुलाशासनमानानांकूटकृन्नाणकस्यच ॥ एभिश्चव्य
हर्त्तायःसदाप्योदमसुत्तमम् ४४ अकूटंकूटकम्ब्रूतेकूटं
इचाप्यकूटकम् ॥ सनाणकपरीक्षीतुदाप्यउत्तमसाहर
म् ४५ भिषङ्मिथ्याचरन्दण्ड्यस्तिर्यक्षुप्रथमेदमम् ॥ म
नुपेमध्यमंराजपुरुषेपूत्तमंदमम् ४६ अवध्यंयश्चवध्नाति
वद्धंयश्चप्रमुंच्यति ॥ अप्राप्तव्यवहारंचसदाप्योदमगु
त्तमम् ४७ मानेनतुलयावापियोंशमष्टमकंहरेत् ॥ द
ण्डंसदाप्योद्विशतंवृद्धौहानौचकल्पितम् ४८ भेषजस्नेहल
वणगन्धधान्यगुडादिषु ॥ पण्येषुप्रक्षिपन्हीनंपणान्द
प्यस्तुषोडश ४९ ॥

जो तुला(तराज़ू)शासन (राजाकी आज्ञा मान) (तोला) और नाणक (मुद्राचिह्नितद्रव्य) को घटवढ़ वनावे और जो उनको काम में लावे उनको उत्तम साहसका दण्ड देना ४४ जो नाणक की परीक्षा करने वाला निकम्मे को अच्छा और भलों को निकम्मा कहे तो उसे भी उत्तम साहस का दण्ड देना ४५ जो वैद्य पशु पक्षियों को झूठी औषध वा उलटी औषध देवे तो प्रथम साहस दण्ड देना मनुष्य को दे तो मध्यम साहस का दण्ड देना और राजा के मनुष्य को दे तो उत्तम साहस का दण्ड देना ४६ जो वांधने के अयोग्य को राजा की आज्ञा विना वांधे बांधने के योग्य को छोड़दे और बालक को वा पराधीन को वांधे तो उससे उत्तम साहस का दण्ड दिलाना ४७ तापने वा तोलने में जो आठवांभाग चीज़ का चुराले तो उससे दोसौ पण दण्ड लेना और इससे कम व अधिक चुरावे तो उसी रीति से कल्पना कर घटा वढ़ा लेना ४८ औषध चिकनी, लवण सुगंध, धान्य और गुड़आदि में जो कुछ निकम्मी चीज़ मिलादे तो सोरह पण दण्ड लेना ४९ ॥

मृच्चर्म्ममणिसूत्रायःकाष्ठवल्कलवाससाम्॥अजातौजाति करणेविक्रेयाष्टगुणोदमः ५० समुद्रपरिवर्त्तंचसारभांडंचकृत्रिमम् ॥ आधानंविक्रयंवापिनयतोदण्डकल्पना ५१ भिन्नेपणेतपंचाशत्पणेतुशतमुच्यते॥द्विपणोद्विशतोदण्डोमूल्यवृद्धौचवृद्धिमान् ५२ संभूयकुर्व्वतामर्थसवाधंकारुशिल्पिनाम् ॥ अर्घस्यह्रासंवृद्धिंवाजानतोदमउत्तमः ५३ संभूयवणिजांपण्यमनर्घेणोपरुन्धताम्॥ विक्रीणतांवाविहितोदण्डउत्तमसाहसः ५४ ॥

मिट्टी,चाम,मणि,सूत्र,लोहा,काठ,वृक्षकाछिलकाऔर वस्त्रइन अधमसे उत्तम बनाके बेंचेतो जितने पर बेंचेहो उससे अठगुना दण्डलेना ५० समुद्र (जो चीज़ ढकीहो जैसे पेटारी आदि)उस को जो अपने हस्त लाघव (हथचलाकी = हथफेर)से अदलवदल करदे और कस्तूरी आदि जो कोई बनाकर रक्खे वा बेंचे तो उस को आगे लिखाहुआ दण्ड देना ५१ जो पणसे कम तौलवाली बनावट की चीजको बन्धक रक्खे व बेंचे तो पचासपण दण्डउसे देना पणभरकी चीज बन्धकधरे व बेंचे तो सौसौ पणभरमें दोसौ पण दण्डदेना इसी रीति से जितना मोल बढ़ताजाय उतनाही दण्ड बढ़ाते जाना ५२ यदि वणिज (बानियां) लोग जो राजाने भावठहरादियाहै उसकी घटतीबढ़ती जानतेभीहों और आपसमें गुट्टबांध अपने लाभकेलिये दूसराएक ऐसाभाव ठहरावें कि जिस सेकारु (रजकआदि) और शिल्पि (चित्रकारआदि)को पीड़ाहो तो उनको उत्तम साहस का (१००० पण) दण्डदेना ५३ जो बनियां आपस में एकड़ा करके अच्छी चीजको थोड़े मोलपर बिकनेके लिये रोंकरक्खें अथवा छोटी चीज को बड़े मोल पर बेंचे तो भी उत्तम साहस का दण्डदेना ५४ ॥ /9/

राजनिस्थाप्यतेयोर्घःप्रत्यहंतेनविक्रयः ॥ क्रयोवानिस्त्र
वस्तस्माद्वणिजांलाभकृत्स्मृतः ५५ स्वदेशपण्येतुशतंवणि
ग्गृह्णीतपंचकम् ॥ दशकंपारदेश्येतुयःसद्यःक्रयविक्रयी५६
पण्यस्योपरिसंस्थाप्यव्ययंपण्यसमुद्भवम् अर्घोनुग्रहकृत्का
र्यःक्रेतुर्विक्रेतुरेवच ५७गृहीतमूल्यंयःपण्यंक्रेतुर्नैवप्रयच्छ
ति ॥ सोदयंतस्यदाप्योसौदिग्लाभंवादिगागते ५८ विक्री
तमपिविक्रेयंपूर्वक्रेतर्य्यगृह्णति ॥ हानिश्चेत्क्रेतृदोषेणक्रे
तुरेवहिसाभवेत् ५९ राजदैवोपघातेनपण्येदोषमुपागते ॥
हानिर्विक्रेतुरेवासौयाचितस्याप्रयच्छतः ६० ॥

जो राजा भावठहरादे उसीसे प्रतिदिन क्रयविक्रय (खरीदना और वेंचना) करें उससे जो कुछ शेषवचजाय वही वनियां लोग अपना लाभ समझें नाकि अपनेमनकाभाव वनालें ५५ अपने देश की चीज जो वनियां झटपटवेंचे तो पांचरुपयेसैकड़ेलाभ(फायदा)लें और दूर देशकी चीज वेंचें तो दशरुपये सैकड़ालें ५६ जो पण्य (सौदा)का मोल और व्यय (खर्च) लगाहो दोनों गिनलेंउस से कुछ अधिक लाभ वेंचने और लेनेवाले कोहो ऐसा विक्री का भाव राजाठहरावे ५७ जोमोल (दाम) लेकर पण्य (सौदा) क्रेता (खरीदनेवाले)को नहींदेता तो उससे राजा सोदय(व्याजसमेत) दिलादेवे और जो मोललेनेवाला दूर देशसे आयाहो तो जितना उसको अपने देश में लेजाकर वेंचने से लाभ होता वहभी उसे राजा दिलादेवे ५८ यदि पूर्वक्रेता (पहिले मोल लेनेवाला) पण्य (सौदा) न ले तो दूसरेके हाथ वेंचदेना और जो क्रेता (खरीदने वाले) के योग्य से उस पण्य सौदा में हानि हो तो वहखरीदने वालेही की होती है ५९ मोललेने वाला मांगताहो और वेंचने वाला न देताहो इसी अन्तर में जो वह चीजकुछ विगड़जावे तो वेंचने वाले की हानि समझना ६० ॥

अन्यहस्तेचविक्रीतेदुष्टंवादुष्टवद्यदि ॥ विक्रीणीतेदमस्तत्रमूल्यात्तुद्विगुणोभवेत् ६१ क्षयंवृद्धिंचवणिजापण्यानामविजानता ॥ क्रीत्वानानुशयःकार्य्यःकुर्वन्षड्भागदण्डभाक् ६२ सामवायेनवणिजांलाभार्थंकर्म्मकुर्वताम् ॥ लाभालाभौयथाद्रव्यंयथावासम्विदाकृतौ ६३ प्रतिषिद्धमनादिष्टंप्रमादाद्यच्चनाशितम् ॥ सतद्दद्याद्विप्लवाच्चरक्षिताद्दशमांशभाक् ६४ अर्घप्रक्षेपणाद्विंशंभागंशुल्कंनृपोहरेत् ॥ व्यासिद्धंराजयोग्यंचविक्रीतंराजगामितत् ६५ मिथ्यावदन्परीमाणंशुल्कस्थानादपासरन् ॥ दाप्यस्त्वष्टगुणंयश्च सव्याजक्रयविक्रयी ६६ ॥

जो एककेहाथ विकीचीज़को दूसरेकेहाथवेंचदे अथवा निकम्मी चीज़को अच्छीवनाकेवेंचे तो मोलसेदूनादण्ड उसको राजा लगावे ६१ जो वणिकपण्य(सौदा)की हानिलाभ न जाने तोमोल लेकर उसमें सन्देहकरके फेरा फेरी न करे यदिकरे तो छठाभाग उसमेंदण्डलेना६ २ इतिविक्रीयासम्प्रदानम् ॥ समवायसे(इकट्ठे होकर) जो वनियां अपनेलाभकेलिये कोई कामकरे तो अपने २ द्रव्यके अनुसार लाभालाभ (घटीमुनाफा) उठावे अथवा जैसी सविद (सलाह) करली हो तैसा उठावे ६ ३ उनमेंसे यदिकोई जो वात बर्ज्जितकीगईथी उसकेकरनेसे व औरोंकी सम्पत्ति विनाही किसीवात के करनेसे कोई चीज़ नष्टकरदे तो वह उसको भरदे और जो कोई देवीसेवचावे तो उससे दशवांभागपावे ६४ भाव ठहरानेके कारणसे वीसवांभाग राजा शुल्क (महसूल) लेवे और जो चीज़ वेचनेकी मनाकीगईहो अथवा राजाके योग्यहो तो वह दूसरेकेपास विकनेपरभी राजालेलेवे ६५ जो शुल्क(महसूल)देने क भयसे तोलकमतीवतावे शुल्कस्थान(महसूलकीजगह)सेभाग जावे और जिसकेलिये दोमनुष्योंका विवाद (झगड़ा) होरहाहो ऐसीचीज़को मोलले वेंचे तो इनमनुष्योंसे अठगनादण्डलेना ६६ ॥

तरिकःस्थलजंशुल्कंगृह्णन्दाप्यःपणान्दश ॥ ब्राह्म
णप्रातिवेश्यानामेतदेवानिमंत्रणे ६७ देशान्तरगतेप्रेतेद्र
व्यंदायादबान्धवाः ॥ ज्ञातयोऽथवाहरेयुस्तदागतास्तैर्विना
नृपः ६८ जिह्मंत्यजेयुर्निर्लाभमशक्तोन्येनकारयेत् ॥ अने
नविधिराख्यातऋत्विक्कर्षककर्म्मिणाम् ६९ ग्राहकैर्गृह्यते
चौरोलोप्त्रेणाथपदेनवा ॥ पूर्व्वकर्म्मापराधीचतथाचाशुद्ध
वासकः ७० अन्येपिशंकयाग्राह्याजातिनामादिनिह्नवैः॥
द्यूतस्त्रीपानशक्ताश्चशुष्कभिन्नमुखस्वराः ७१ ॥

जो नौकाकाशुल्क (महसूल) लेनेवालाहै वह जोस्थल (सड़क) का शुल्कलेवे तो दशपणदंडदे और पड़ोसी ब्राह्मणको जो श्राद्ध आदि में निमंत्रण (नेवता) न दे तोभी यही दंड देवे ६७ यदि इकट्ठा व्यापारकरनेवालों में से कोई दूरदेशजाके मरजावे तो उसकेदायाद (पुत्रआदि) बांधव (ममेराभाईआदि) अथवा जाति के लोगआकर उसकाअंशलेवें औरइनमेंसे कोई न आवे तो राजा लेवे ६८ इनइकट्ठा व्यापारकरनेवालोंमेंसे जोजिह्महो (ठगहारी करे) उसको कुछलाभ न देकर अपनीसंगतिसे निकालदेवे और जोअशक्तहो वह अपनाकाम दूसरेसेकरावे इसीसे ऋत्विज और खेतीकरनेवालोंके कामकरने की भी रीति समझलेना ६९ इति सम्भूयसमुत्थानम्॥ ग्राहक (राजपुरुष) लोग जिसको सबमनुष्य चोरकहें, जिसके निकट चोराईहुई चीज़की कुछचिन्हाटी मिले जिसके पांवकीसाध चोरीकेस्थल (कीजगह) के पादचिह्नसेमिल जाय जिसनेपहिलेभी चोरीकियाहो और जो अशुद्धवास (जिसके रहनेकीजगह न मालूमहोतो) इनसबको चोरीमेंपकडे ७० और भी जो अपनीजाति और नामआदिकोछिपाते हैं जोजुआकाखेल, परस्त्रीगमन और मद्यपान में आसक्तहैं, जिनका तुमकहो कौनहो ऐसा पूंछनेसे मुंहसूखजावे स्वर (आवाज़) बदलजावे ७१ ॥

परद्रव्यगृहाणांचपृच्छकागूढचारिणः ॥ निरायाव्य यवन्तश्चविनष्टद्रव्यविक्रयाः ७२ गृहीतःशंकयाचौर्य्योना त्मानंचेद्विशोधयेत् ॥ दापयित्वागतंद्रव्यंचौरदण्डेनदण्ड येत् ७३ चौरंप्रदाप्यापहृतंघातयेद्विविधैर्वधैः ॥ सचि ह्नेनंब्राह्मणंकृत्वास्वराष्ट्राद्विप्रवासयेत् ७४ घातितेपहृते दोषोग्रामभर्त्तुरनिर्गते ॥ विवीतभर्त्तुस्तुपथिचौरोद्धर्त्तुरवी तके ७५ स्वसीम्निदद्याद्ग्रामस्तुपदंवायत्रगच्छति ॥ पञ्च ग्रामीवहिःक्रोशादशग्राम्यथवापुनः ७६ ॥

जो पराये का धन और घरपूंछते फिरतेहैं जो गुप्तवेष वनाकर रहतेहैं, जिनको आय (आमद) नहो परन्तु व्यय (ख़र्च) वहुतहो और जो टूटी फूटी चीज़ के वेचने वालेहों इन सबों को शंका (शुवहा)से पकड़ना चाहिये ७२ जो शंका (शुवहा) से चोरी से पकड़ा गया और अपनी शुद्धता (सफ़ाई) न करे तो उससे हृत (चोरी गई हुई)चीज़ दिलाना और उसे चोर का सा दण्ड भी देना ७३ चोरीसे चोरीगई चीज़ दिलाकर अनेक प्रकारके वधसे (मारने से) उसे दण्डदेना परन्तु ब्राह्मणहो तो उसके मस्तक में कुत्तेके पंजेका दाग देके अपनी राज्यसे निकालदेवे ७४ यदिगांव के भीतर चोरी और घात (ख़ून) हो और चोर व मारने हारेका पता वाहर निकलजाने का न मिले तो ग्रामपालका दोषजानना (उसीसे वहचीज़ व दण्डलेना) विवीतबाड़ा व सराय में चोरी आदिहो तो उसके रक्षकसे लेना और राहमें हो तो मार्ग पालसे लेना ७५ जिसगांवकी सीमाके भीतरचोरी आदिहो उसगांव से वहचीज़लेना अथवा जहां चोरका पांवगयाहो उसस्थलके स्वामी से लेवे (यदि कईग्रामके मध्य) कोश दो कोशके पटपड़ में हुईहो तो उसके आस पास वाले पांच व दश गावों से लेना ७६ ॥

वन्दिग्राहांस्तथावाजिकुञ्जराणांचहारिणः ॥ प्रसह्य
घातिनश्चैवशूलानारोपयेन्नरान् ७७ उत्क्षेपकग्रंथिभे
दौकरसंदंशहीनकौ ॥ कार्य्यौद्वितीयापराधेकरपादैकहीं
नकौ ७८ क्षुद्रमध्यमवाद्रव्यहरणेसारतोदमः ॥ देशकाल
वयःशक्तीःसंचिन्त्यदण्डकर्म्मणि ७९ भक्तावकाशाग्न्युद
कमन्त्रोपकरणव्ययान् ॥ दत्वाचौरस्यवाहंतुर्जानतोदमउ
त्तमः ८० शस्त्रावपातेगर्भस्यपातनेचोत्तमोदमः ॥ उत्त
मोवाधमोवापिपुरुषस्त्रीप्रमापणे ८१ विप्रदुष्टांस्त्रियञ्चैव
पुरुषघ्नीमगर्भिणीम् ॥ सेतुभेदकरींचाप्सुशिलाम्बध्वा
प्रवेशयेत् ८२ ॥

जो वन्दिग्राह(कैदीछुड़ालेजाता)हो घोड़ा व हाथी चोराये और प्रसह्यघातक (जवरदस्ती किसीको मारते)हों तो इन्हेंशूल(शूली) परचढ़ावे ७७ उत्क्षेपक(उचक्काऔरग्रंथिभेद) (गँठिकटा)इनदोनों का पहिले अपराधमें तो क्रमसे हाथऔर संदंश (चुटकी) कटवा देना और दूसरे अपराध में एक एक हाथ और पांव कटवा देना ७८ क्षुद्र (छोटी) मध्यम और वड़ी चीज़के चोराने में उसद्रव्य के मोलके अनुसार दण्डदेना और देशकाल वय (अवस्था) और देखके भी दण्डकल्पना करना ७९ भोजन, रहनेकीजगह, आग, पानी, मन्त्र (सलाह) उपकरण (औज़ार)और व्यय (ख़र्च) जो चोर अथवा मारने वाले को देवे अथवा उनको जानता हो तो उन्हें उत्तमदण्ड देना ८० किसीपर शस्त्रचलावे और गर्भपातकरे (किसीका गर्भगिरावे)तो उत्तम दण्डपावे और जो पुरुष वा स्त्री को मारडाले तो (जातिकाल आदि विचारके)उत्तम व अधमदंड देना ८१ जो स्त्री अतिदुष्टा, पुरुष को मारने वाली और सेतु (पुलवांध) तोड़ने वाली हो और गर्भवती न हो तो इन सबों के गले में शिला बांध जल में डुबो देना ८२ ॥

विषाग्निदाम्पतिगुरुनिजापत्यप्रमापणीम्॥विकर्णकरना
सोष्ठींकृत्वागोभिःप्रमापयेत् ८३ अविज्ञातहतस्याशुकल
हंसुतबांधवाः॥प्रष्टव्यायोपितश्चास्यपरपुंसिरताःपृथक्८४
स्त्रीद्रव्यवृत्तिकामोवाकेनवायंगतःसहः॥ मृत्युदेशसमासन्न
म्पृच्छेद्वापिजनंशनैः ८५ क्षेत्रवेश्मवनग्रामविवीतखलदा
हकाः ॥ राजपत्न्यभिगामीचदग्धव्यास्तुकटाग्निना ८६
पुमान्संग्रहणेग्राह्यःकेशाकेशिपरस्त्रियाः ॥ सद्योवाकामजै
श्चिह्नैःप्रतिपत्तौद्वयोस्तथा ८७ ॥

विषदेनेहारी, आगलगाने वाली, गुरु,पति और अपने अपत्य को मारनेवाली स्त्री को नाक कान, हाथ और श्रोठ कटवाकर (गर्भिणी नहो तो) बैलों से मरवा देना ८३ जिसका मारने वाला जानपड़े तो उसके पुत्र, बन्धु और स्त्री से तथा व्यभिचारिणी स्त्रियों से झटपट इसप्रकार पूंछकर (कि इससे किस के साथ बिगाड़था पतालगावे ८४ इन (पूर्वोक्त) लोगों से और जो मरण प्रदेश के आसपास रहनेवालेहों उनसे विश्वासदेकर सहज में इसप्रकार पूंछे कि यह जो मारागया इसकी क्या अभिलाषा थी स्त्री को चाहता था वा द्रव्यकी इच्छा रखता था कौनसी जीविका चाहता था और किस के संगगयाथा ८५ जो खेत,घर, बन, गांव, विवीत (वाड़ा) और खलिहानमें आग लगावें और जो रानी के संग व्यभिचारकरें इनसबोंको कट (सरहरी में लपेटवाकर जलादेना ८६ इति स्तेय प्रकरणम् ॥ यदि दूसरे की स्त्री के केश खींचकर हँसे बोले अथवा नख (टटके) नखक्षत+ आदि चिह्न देखपड़ें व दोनों की प्रीति देखपड़े तो पुरुष को व्यभिचार में पकड़ना ८७ ॥

+ नहं के दाग

ऊनंवाभ्यधिकंवापिलिखेद्योराजशासनम् ॥ पारदारि
कचौरंवामुंचतोदण्डउत्तमः ९९ अभक्ष्येणाद्विजंदूष्यंद
ण्डयउत्तमसाहसम् ॥ मध्यमंक्षत्रियंवैश्यम्प्रथमंशूद्रमर्द्धिक
म्३०० कूटस्वर्णव्यवहारीविमांसस्यचविक्रयी ॥ अंगहीन
स्तुकर्त्तव्योदाप्यश्चोत्तमसाहसम् १ चतुष्पादकृतोदोपीनाप
हीतिप्रजल्पतः॥काष्ठलोष्टेपुपापाणवाहुयुग्मकृतस्तथा२छि
न्ननस्येनयानेनतथाभग्नयुगादिना॥पश्चाच्चैवापसरताहिंस
नेस्वाम्यदोपभाक् ३ शक्तोप्यमोक्षयन्स्वामीदंष्ट्रिणांशृंगि
णांतथा ॥ प्रथमंसाहसंदद्याद्विक्रुष्टेद्विगुणन्तथा ४ ॥

जोराजाकीशासन(आज्ञा)कोघटावढ़ाकर लिखे वा व्यभिचारी और चोरकोपकड़के राजाको न सौंपे अपनेआपछोड़दे तोउत्तमदंड पावे ९९ अभक्ष्य(जोभोजनके योग्यनहीं मूत्र वा विष्ठाआदि)से जो ब्राह्मणका खानापीना दूषितकरेतो उत्तमदंडपावे क्षत्रियकाकरेतो मध्यम वैश्यकाकरेतो मध्यम और शूद्रकाकरेतो प्रथमसाहसका आधादंडपावे ३०० जोकूटस्वर्ण (निकम्मेसोनेकोरंगदेकेअच्छा बनाकर उस)से व्यवहारकरे और जो कुत्सितमांस(कुत्ताविल्ली) आदिकामांस वेचतेहैं उनका अंगछेदनकरवाना और उत्तमसाहसदंडभी लेना १ जो किसीका चतुष्पाद(चारपाया)किसीकोमार और उसका स्वामी ऐसा पुकाररहाहो कि हटजाना तो पालनेवालेका दोप नहीं और इसीप्रकार काठ,लोष्ट,(ढेला)वाण,पत्थर,वाहु और युग्य(रथमें नहे घोड़ेआदि)को फेंकताहो औरपुकारताहो कि हटजाना उसको हानिहो तो फेंकनेवालेकादोप नहीं२ जिसगाड़ीके वैलकीनाथटूटगईहो जुआटूटगयाहो और पीछेको हटरहाहो वह किसीको मारदे तो स्वामीका दोप नहीं ३ सींग वाले और दांतवाले पशु जो किसीको मारतेहों और उनकास्वामी छुड़ानेमें समर्थ होकर भी न छुड़ावे तो प्रथम साहसदंडपावे यदि पुकारनेपर भी न छुड़ावे तो उससे दूनादंड पावे ४ ॥

जारञ्चौरेत्यभिवदन्दाप्यःपञ्चशतन्दमम् ॥ उपजी
व्यधनम्मुञ्चंस्तदेवाष्टगुणीकृतम् ५ राज्ञोनिष्टप्रवक्ता
रन्तस्यैवाक्रोशकारिणम् ॥ तन्मन्त्रस्यचभेत्तारञ्छित्वा
जिह्वांप्रवासयेत् ६ मृतांगलग्नविक्रेतुर्गुरोस्ताडयितुस्त
था ॥ राजयानासनारोढुर्दण्डउत्तमसाहसः ७ द्विनेत्र
भेदिनोराजद्विष्टादेशकृतस्तथा ॥ विप्रत्वेनचशूद्रस्यजीव
तोष्टशतोदमः ८ दुर्दृष्टांस्तुपुनर्दृष्ट्वाव्यवहारान्नृपेणतु ॥
सभ्याःसजयिनोदण्ड्याःविवादाद्द्विगुणन्दमम् ९ योम
न्येताजितोस्मीतिन्यायेनापिपराजितः ॥ तमायान्तम्पुन
र्जित्वादापयेद्द्विगुणंदमम् १० ॥

किसी व्यभिचारी को अपने कलंकके डरसे चोर चोर कहके छुड़ादे तो पांचसौपणदंडदेना और जो धनलेकेछोड़दे तोजितना लियेहो उसका अठगुना दंडदे ५ जो कोई राजाकी अनिष्टबातों को कहाकरे व राजाकी निन्दा कियाकरे अथवा राजाके गुप्तमं (सलाह)कोप्रकटकियाकरे तो उसकीजीभकटवाकेदेशसे निक देना ६ जो मृतक के देह पर की चीज़ों को बेचे गुरूको ता करेओ राजाके यान (सवारी) अथवा सिंहासन पर चढ़े उत्तम साहस दण्ड देना७जो किसीकी दोनों आंखें फोड़दे,वो-का द्विष्टीदेश (राजभंग आदिहोनेकी प्रसिद्धि) करे और शूद्रकरे ब्राह्मणकेवेषसेजीविका तो अठारहसौपण दण्डदेना८जोव्यवके- सभासदलोग अच्छी भांति न देखेहों (द्वेपवा प्रेमसे अन्यथा वि हों) तो राजास्वयं उसको दूसरी बारदेखे और जीतनेवाले समेत सब सभासदों से जितने का विवादहो उससे दूना दण्ड लेवे ९ जो न्यायसे (सचमुच) पराजित हुआहो और कहे कि हम पराजित नहीं भये तो उसका व्यवहार फिरसे देखकर उसे पराजित करे और दूना दण्ड उससे लेवे १० ॥

नीवीस्तनप्रावरणसक्थिकेशावमर्शनम् ॥ अदेशकाल
सम्भाषंसहैकासनमेवच ८८ स्त्रीनिषेधेशतन्दद्याद्द्विशत
न्तुदमम्पुमान् ॥ प्रतिषेधेतयोर्दण्डोयथासंग्रहणेतथा ८९
स्वजातावुत्तमोदण्डआनुलोम्येनमध्यमः ॥ प्रातिलोम्येव
धःपुंसोनार्याकर्णादिकर्त्तनम् ९० अलंकृतांहरेत्कन्यामुत्त
मंह्यन्यथाधमम् ॥ दण्डन्दद्यात्सवर्णासुप्रातिलोम्येवधःस्मृ
तः ९१ सकामास्वनुलोमासुनदोषस्त्वन्यथाधमः ॥ दूषणे
तुकरच्छेदउत्तमायाम्वधस्तथा ९२ ॥

जो कोईपरायेकी स्त्रीकीन्नीवी (फुफनी) अंचल,जंघा औरकेश अभिलाषासमेतछुवे औरअकेलेमें व अँधेरेमें उससे बातचीतकरे अथवाएकही आसनपर बैठरहाहो तोभी व्यभिचारदोषमेंपुरुषको पकड़ना८८जिसस्त्रीके पिताभाईआदि उसकोजिसपुरुषसेबोलनेमनाकरदियेहों और वहबोलतीदेखपड़े तो सौपणदण्डदेवे पुरुषको किसीस्त्रीके साथबोलनामनाकियाहो औरबोलतादेखपड़े तो दोसौपणदण्डलेना। दोनोंकोवर्जितकियाहोतो व्यभिचारसे दण्ड होताहैसोलेना८९ अपनीजातिकीस्त्रीमें व्यभिचारकरेतोउत्तमसाहसकादंडदेना अपनेसे नीचजातियोंकीस्त्रीकेसाथकरनेमें मध्यम औरअपनेसे बड़ीजातिकीस्त्रीसेकरेतोपुरुषवधदंडपावे(माराजाय) और जोस्त्रीनीचपुरुषसे व्यभिचारकरे तोउसकाअपराधकेअनुसार नाककानआदि कटवादेना ९० जिसकाविवाहहोनेवालाहो और आभूषणपहिनेहो ऐसीअपनीजातिकी कन्याकोहरलेजाय तोउत्तम दंडपावे और विवाहहोनेवालानहो तो प्रथम साहसदंडदेना यदि उत्तमजातिकी कन्याकाहरणकरे तोवधा (मारा)जावे९१ यदिवह कन्या सकाम(चाहती) हो और अपनेसे नीचजातिकीहोतो दोष नहीं और अनचाहतीकोहरे तो प्रथमसाहसकादंडदेना जोकन्याको (नख वाअंगुलीप्रक्षेपआदिसे)दूषितकरे तोउसकाहाथकटवाना और जोउत्तमजातिकीकन्याको ऐसाकरेतोउसेमरवाडालना ९२॥

शतंस्त्रीदूषणेदद्याद्द्वेतुमिथ्याभिशसंने॥पशून्गच्छन्शतन्दाप्योहीनांस्त्रींगांचमध्यमम् ९३ अवरुद्धासुदासीपुभुजिष्यासुतथैवच ॥ गम्यास्वपिपुमान्दाप्यःपंचाशत्पणिकन्दमम्९४प्रसह्यदास्यभिगमेदण्डोदशपणःस्मृतः॥ बहूनांयद्यकामांसौचतुर्विंशतिकःपृथक् ९५ गृहीतवेतनांवेश्यांनेच्छन्तींद्विगुणंवहेत्॥अगृहीतेसमन्दाप्यःपुमानप्येवमेवच ९६ अयोनौगच्छतोयोषांपुरुषंवापिमेहतः ॥ चतुर्विंशतिकोदण्डस्तथाप्रव्रजितागमे ९७अंत्याभिगमनेत्वंक्यःकवन्धेनप्रवासयेत् ॥शूद्रस्तथांत्यएवस्यादन्तस्यार्यागमेबधः ९८ ॥

जो किसीकी कन्याका सच्चाभी दोष प्रकाशकरे तो उसमें सौ पणदण्डलेना और झूठमूठ दोषलगावे तोदोसौपणदण्डलेनापशुमेंगमनकरे उससेसौपण दंडलेना और नीचस्त्री तथागौमें गमन करेतोमध्यमसाहसदंडदेना ९३जोपुरुष परायेकी अवरुद्धा(जिसको घरसेबाहरनिकलनामनाहै)औरभुजिष्या(जिसेकिसीकोसौंपदिया होऐसी)दासियोंमेंगमनकरे तो उससे पचासपणदंडले यद्यपि वे गमनकेयोग्यहैं परन्तु दूसरेकीहैं९४इनसेव्यातिरिक्त और दासियों में यदिबलात्कारसेगमनकरे तो दशपणदंडदे और जो कई पुरुष एकहीकेपास उसकीइच्छाकेविनाहीं गमनकरें तो उनसबको चौबीस२४पणदंड देना ९५ जो वैश्यादामलेके भोगकी इच्छा न करे और शरीरसे रोगीनहो दूनादे तो विनामोललियेहीं स्वीकार कियेहो और फिरन चाहे तो बराबरदे यहीदंड पुरुषकोभीजानना९६ जोस्त्रीकीयोनि छोड़ि दूसरेअंगमेंगमनकरे,पुरुषकेसामने रतिआदिकरे, और प्रव्रजितासंन्यासिनि वा अवधूतिनीके पास जावे तो चौबीसपणदण्डदेना९७चाण्डालकी स्त्रीसेगमनकरे तो उसकेमाथेमें भगकाआकार दागकर अपनेराज्यसे निकालदे और जोशूद्र हो तो वह चाण्डालहीहोजाताहै यदिचाण्डालउत्तमजातिकीस्त्रीसे गमन करेतो उसे मरवाडालना ९८ इतिस्त्रीसंग्रहणप्रकरणम् ॥

राज्ञाऽन्यायेनयोदण्डोगृहीतोवरुणायतम् ॥ निवेद्य दद्याद्विप्रेभ्यःस्वयन्त्रिंशद्गुणीकृतम् ३११ ॥

इतिश्रीयाज्ञवल्क्यीयेधर्म्मशास्त्रेद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

यदि राजा किसी से अन्याय करके दण्ड लेवे तो उसका तीस गुणा अपने पाससे वरुण देवताके नाम संकल्प करके ब्राह्मणों को दे और जितना दण्ड लियेहो उतना उसको फेरदे ३११ ॥

इतिश्रीयाज्ञवल्क्यस्मृतिटीकायांपञ्चनदमहाविद्यालयीये प्राच्यविद्यापाठशालायाम्मुख्यसंस्कृताध्यापकेनपण्डि तगुरुप्रसादशर्मणाहिन्दीभाषयाविरचितायाम्मिता क्षरानुयायिन्यांव्यवहाराध्यायःद्वितीयस्सम्पूर्णः२॥

ऊनद्विवर्षंनिखनेन्नकुर्यादुदकन्ततः ॥ आश्मशानादनु
व्रज्यइतरोज्ञातिभिर्मृतः १ यमसूक्तन्तथागाथांजपद्भिर्लौ
किकाग्निना ॥ सदग्धव्यउपेतश्चेदाहिताग्न्यावृतार्थवत् २
सप्तमाद्दशमाद्वापिज्ञातयोभ्युपयन्त्यपः ॥ अपनःशोशुचि
दघमनेनपितृदिङ्मुखाः ३ एवम्मातामहाचार्य्यप्रेतानामुद
कक्रिया ॥ कामोदकंसखिप्रजास्वस्रीयश्वशुरर्त्विजाम् ४
सकृत्प्रसिञ्चन्त्युदकन्नामगोत्रेणवाग्यताः ॥ नब्रह्मचारिणः
कुर्युरुदकम्पतितास्तथा ५ ॥

जो पूरा दो वर्ष का नहो ऐसा बालक मृतक हो तो उसे पृथ्वी में गाड़ देना और उसको उदक (तिलांजलि) भी न देना इससे अधिकअवस्थाकाहो तो जातिकेलोगश्मशानतकउसकेपीछेजावें १ और यमसूक्त तथा यमगाथा(ये दोनोंयमदेवताके वेदोक्तमन्त्र हैं) पढ़ाकरें लौकिक अग्नि (न कि अग्निहोत्रकी अग्नि) से उसका दाहकरें यदिउसका यज्ञोपवीत हुआहो तो अग्निहोत्र करनेहारे को गृह्यअग्निसे और जिसपात्रका प्रयोजन पड़े उस से दाहादि कर्म करें अग्निहोत्री नहों तो लौकिक अग्निसे दाहकरें २ सातवें वा दशवें दिनसे पहिले (किसी अयुग्म दिनमें) जाति के लोग जल के समीप (अपनः शुचिदघम्) इसमंत्र को पढ़ते आकर उदक दानकरें ३ इसी प्रकार मातामह (नाना) और आचार्य काभी उदक दानकरना मित्र, व्याही हुई लड़कियां, भागिनेय (भानजा) श्वशुर और ऋत्विज इनको इच्छा हो तो उदक देना नहीं तो न देना ४ (प्रेतका) नाम और गोत्र लेकर मौन साध एक बार जल देवे परन्तु ब्रह्मचारी और पतित ये उदक दान न करें ५ ॥

पाखण्ड्यनाश्रिताःस्तेनाभर्तृघ्न्यःकामगादिकाः ॥ सु
राप्यआत्मत्यागिन्योनाशौचोदकभाजनाः ६ कृतोदका
न्समत्तीर्णान्मृदुशाद्वलसंस्थितान् ॥ स्नातानपवदेयुस्ता
नितिहासैःपुरातनैः ७ मानुष्येकदलीस्तम्भनिःसारेसार
मार्गणम् ॥ करोतियःससम्मूढोजलवुद्बुदसन्निभे ८ पञ्च
धासम्भृतःकायोयदिपञ्चत्वमागतः ॥ कर्मभिःस्वशरीरो
त्थैस्तत्रकापरिदेवना ९ गंत्रीवसुमतीनाशमुदधिर्दैवतानि
च ॥ फेनप्रख्यःकथंनाशम्मर्त्यलोकोनयास्यति १० श्ले
ष्माश्रुवान्धवैर्मुक्तम्प्रेतोभुंक्तेयतोवशः ॥ अतोनरोदितव्यं
हिक्रियाःकार्य्याःस्वशक्तितः ११ ॥

पाखंडी (जोखोपड़ी आदिलिये फिरतेहैं) अनाश्रित (जो किसी आश्रममें नहो) चोर (सुवर्ण आदि उत्तम द्रव्यके चुरानेवाले) पति मारने वाली स्त्री व्यभिचार करने वाली इत्यादि स्त्री (निषिद्ध) सुरा पीनेवाले और आत्मघात करनेवाले इनको उदक न देना और इनका आशौच भी न मानना ६ जब उदक दान कर चुके और जहां हरी घास लगी हो उस भूमि पर बैठे तो पुरानी कथा कह २ के उनका शोक दूर करे ७ और यह कहै कि मनुष्यलोक कदलीके खंभके समान भीतर पुप्लखा है इसमें जो कोई स्थिरता का खोज करे वह मूर्ख है क्योंकि यहां पानीके बबूले का लेखाहै ८ अपने किये हुये कर्मों के कारण पांच तत्त्वोंसे यह शरीर बना है यदि वह उन्हीं पांचों में मिलगया तो उस में रोना क्या ६ पृथ्वी, समुद्र और देवता लोग भी नाशको प्राप्त होंगे तो उनकी अपेक्षा फेन सदृश जो यह मर्त्यलोक है सो क्यों न नष्टहोगा १०बांधवलोग जो श्लेष्मा (खखार) और आंसू गिराते हैं वह सब मृतक को यमके दूत खिलाते हैं इसलिये रोना न चाहिये परन्तु अपनी शक्तिके अनुसार क्रिया करनी चाहिये ११ ॥

इतिसंश्रुत्यगच्छेयुर्गृहम्बालपुरःसराः ॥ विदस्यानिम्ब पत्राणिनियताद्वारिवेश्मनः १२आचम्याग्न्यादिसलिलंगोमयंगौरसर्षपान् ॥ प्रविशेयुःसमालभ्यकृत्वाश्मनिपदंशनैः १३ प्रवेशनादिकंकर्म्मप्रेतसंस्पर्शिनामपि ॥ इच्छतान्तत्क्षणाच्छुद्धिम्परेपांस्नानसंयमात् १४आचार्यपित्रुपाध्यायान्निर्हृत्यापिव्रतीव्रती॥ सकटान्नंचनाश्नीयान्नचतैःसहसम्वसेत् १५क्रीतलब्धाशनाभूमौस्वपेयुस्तेपृथक्पृथक्॥ पिण्डयज्ञावृतादेयम्प्रेतायान्नन्दिनत्रयम् १६ जलमेकाहमाकाशेस्थाप्यंक्षीरंचमृण्मये ॥ वैतानोपासना·कार्य्या·क्रियाश्चश्रुतिनोदनात् १७ ॥

ऐसी बातेंसुन बालकोंको आगेकर घरजावें घरकेद्वारपर निम्ब वृक्षकी पत्तियांकूचकर १२ आचमनकर अग्नि,जल, गोबर, और पीलेसरसों इनका स्पर्शकर तथा पत्थरपर पांवरखके धीरेसे घरमें बैठे १३ जो अपनी जातिसे दूसराभी कोई अपनीइच्छासे मृतक का स्पर्शकरे तो निंबपत्रका कूचनाआदि प्रवेशतापर्यन्त कर्म वह भी करे और उसकी शुद्धिस्नान और प्राणायामकरनेसे उसीक्षणहोजाती है १४ आचार्य(जो आचाराध्यायमें कहआयेहैं)पिता माताऔर उपाध्याय(कहआयेहैं)यदि इनको ब्रह्मचारी श्मशानतकलेजावें तो उसका व्रतभंग नहीं होता परन्तु आशौचियोंकाअन्न न खावें और न उनकेपासरहें १५ अशौची लोग अन्नमोललेकर भोजनकरें भूमिके ऊपर अलग अलग सोवें,और श्राद्धकी रीतिसे (अपसव्यहोकर)मृतकको तीनदिन पिण्डरूप अन्नदेवे १६ एक दिन मृतकके लिये आकाशमें जल और दूध मिट्टीके पात्रमेंरखना और अग्निहोत्र आदि वैदिक नित्यकर्म्म किसी दूसरे से कराना १७ ॥

त्रिरात्रन्दशरात्रम्वाशावमाशौचमिष्यते ॥ ऊनाद्विवर्षउ भयोःसूतकम्मातुरेवहि १८ पित्रोस्तुसूतकम्मातुस्तदसृग्द र्शनाद्ध्रुवम्॥तदहर्नप्रदुष्येतपूर्वेषांजन्मकारणात् १९अन्त राजन्ममरणेशेषाहोभिर्विशुद्ध्यति॥गर्भस्रावेमासतुल्यानि शाःशुद्धेस्तुकारणम् २० हतानान्नृपगोविप्रैरन्वक्षंचात्मघा तिनाम् ॥ प्रोषितेकालशेषःस्यात्पूर्णेदत्त्वोदकंशुचिः २१ ॥

(सपिण्ड और सगोत्रके भेदसे)तीन वा दशदिनमृतकका अशौ चहोताहै यदिदोवर्षसे छोटी अवस्थावालामरे तो माता और पि- ताहीको अशौचहोता और सूतक(जन्मनेमें न छूना)केवल माता हीको होताहै १८ जन्ममें पिता और माताको न छूना चाहिये तिसमें भी माताको रुधिरदेखपड़ताहै इसहेतु अवश्यही न छुवे और वालकके जन्मदिनमें श्राद्धआदि क्रियाकरनेमें कुछदोषनहीं क्योंकि वालकका रूपधर पितर आतेहैं १६ यदि एक मनुष्यमरा वा जन्माहो और दशदिनके भीतरही दूसराजन्मे या मरे तोउस काभी शुद्ध जो पहिलेके शेष(बाकी)दिनरहेहों उतनेहीमें होजा- ताहै गर्भपातहोजावे तो(चारमहीनेसे पहिले माताहीकोतीनदि- न अनन्तर)जितनेमहीनेका गर्भहो उतनेहीदिनमें माता शुद्धहो- तीहै और पिताआदिको तीनदिनपर छःमहीनेसे अधिकहो तो प्रसवकेतुल्य अशौचलगताहै २० ब्राह्मण, राजा और गौ इनसे जो मारेगये और जिन्होंने अपनेआप जीदिया इनका अशौच उसीक्षणहोताहै विदेशमें मरजावे तो दशदिनमें जोवचाहो उत- नाहीं अशौच मानना और दशदिन वीतगयेहों तो उदकदानक- रके उसीक्षण शुद्धहोताहै(परन्तु यह बात माता पिताके विषयमें नहीं है उनका पूरा दशदिनमाननाहोताहै और भी कई प्रकार समझे हैं स्मृतियों में देखलेना) २१ ॥

क्षत्रस्यद्वादशाहानिविशःपंचदशैवतु ॥ त्रिंशद्दिनानिशूद्रस्यतदर्द्धन्यायवर्तिनः २२ आदन्तजन्मनःसद्यआचूडानैशिकीस्मृता ॥ त्रिरात्रमाव्रतादेशाद्दशरात्रमतःपरम् २३ अहस्त्वदत्तकन्यासुबालेषुचविशोधनम् ॥ गुर्वंतेवास्यनूचानमातुलश्रोत्रियेषुच २४ अनौरसेषुपुत्रेषुभार्यास्वन्यगतासुच ॥ निवासराजनिप्रेतेतदहःशुद्धिकारणम् २५ ब्राह्मणानानुगंतव्योनशूद्रोनद्विजःक्वचित् ॥ अनुगम्यांभसिस्नात्वास्पृष्ट्वाग्निंघृतभुक्शुचिः २६ महीपतीनांनाशौचहतानांविद्युतातथा ॥ गोब्राह्मणार्थेसंग्रामेयस्यचेच्छतिभूमिपः२७ ॥

क्षत्रीको बारह दिन वैश्यको पन्द्रह और शूद्रको तीसदिनका अशौचहोताहै परन्तु जो शूद्रब्राह्मणकी सेवामें तत्परहो उसको पन्द्रहदिनका होता है २२ दांत निकलने से पहिले मरे तो उसी क्षण शुद्धहोताहै, दांतनिकलनेकेअनन्तर मुंडनतक एकदिनरात औरमुंडनसे व्रतबन्धतक तीनदिनरात और व्रतबन्धहोनेपर दश दिनका अशौच मानना २३ जिस कन्याका वाग्दान न कियाहो उसके और बालक, गुरू, अन्तेवासी (जो ब्रह्मचारी पढ़नेको गुरू के पासरहे) वेदवेत्ताब्राह्मण, मामा और श्रोत्रिय इनके मरने में एक दिनका अशौच मानना २४ औरस छोड़ दूसरे पुत्रों के व्यभिचारिणी भार्या के और अपने देशके राजाके मरने में एकही दिनसे शुद्धहोताहै २५ ब्राह्मण किसी असगोत्रद्विज अथवा शूद्र के मृतक के पीछे श्मशान में न जावे यदि जावे तो स्नानकरके अग्निका स्पर्शकरे और उसदिन केवल घी खाकर रहे तब शुद्ध होताहै २६ राजाओं को अशौचनहींहोता जो विजली का मारा मराहो गौ वा ब्राह्मण के लिये संग्राम में जो मरे जिसको राजा न चाहे इनसबों का अशौच न मानना २७ ॥

ऋत्विजांदीक्षितानांचयज्ञियंकर्म्मकुर्वताम् ॥ सत्रिव्रति
ब्रह्मचारिदातृब्रह्मविदांतथा २८ दानेविवाहेयज्ञेचसंग्रामे
देशविप्लवे ॥ आपद्यपिहिकष्टायांसद्यःशौचंविधीयते २९
उदक्याशुचिभिःस्नायात्संस्पृष्टस्तैरुपस्पृशेत् ॥ अब्लिं
गानिजपेच्चैवगायत्रींमनसासकृत् ३० कालोग्निःकर्म्मसृ
द्वायुर्मनोज्ञानंतपोजलम् ॥ पश्चात्तापोनिराहारःसर्वेमीशु
द्धिहेतवः ३१ अकार्य्यकारिणंदानंवेगोनद्याश्चशुद्धिकृत्॥
शोध्यस्यमृच्चतोयंचसंन्यासोवैद्विजन्मनाम् ३२ तपोवेदवि
दांक्षांतिर्विदुषांवर्ष्मणोजलं ॥ जपःप्रच्छन्नपापानांमनसः
सत्यमुच्यते ३३ भूतात्मनस्तपोविद्येबुद्धेर्ज्ञानंविशोधनम्॥
क्षेत्रज्ञस्येश्वरज्ञानाद्विशुद्धिःपरमामता ३४ ॥

ऋत्विजलोग, दीक्षित (जिसनेयज्ञमेंअभिषेकपायाहो) यज्ञके कामकरनेवाले,यज्ञकरनेवाले,व्रतकरनेवाले (यज्ञऔर उत्सव कर रहेहों) ब्रह्मचारी,दाता और ब्रह्मज्ञानीइनसबपुरुषोंको २८ और दान, विवाह, यज्ञ, लड़ाई, देश विप्लव और बड़ाकष्ट देनेवाली विपत्ति इन सब समयोंमें उसीक्षण शुद्धिहोजातीहै २९ रजस्वला स्त्री और चाण्डाल जो छू देवे तो स्नान कर उनको छू के कोई दूसरा छूवे तो आचमन करने से और वरुणदेवता के मंत्र तथा गायत्री जपने से शुद्ध होताहै ३० काल,अग्नि, मृत्तिका,वायु, मन, ज्ञान, तप, जल, पश्चात्ताप और उपवास ये सब शुद्धि के हेतुहैं ३१ निकम्मा काम करनेवालोंकीशुद्धि दान से होती है औरनदीकेवेगसे अशुद्धवस्तुकीमृत्तिका औरजलसे तथाद्विजोंकी शुद्धिसंन्याससेहोतीहै ३२ वेदजाननेवालों कीतपसे विद्वानों की क्षमा से शरीरकीजलसेगुप्तपापोंकीजपसे, औरमनकीसचाईसे ३३ भूतात्माकी तप और विद्यासेबुद्धिकीज्ञानसे और क्षेत्रज्ञकीईश्वर के ज्ञानसे परमशुद्धता होती है ३४ ॥ इत्यशौचप्रकरणम् ॥

क्षात्रेणकर्म्मणाजीवेद्विशांवाप्यापदिद्विजः ॥ निस्तीर्य्य
तामथात्मानंपावयित्वान्यसेत्पथि ३५ फलोपलक्षौमसोम
मनुष्यापूपवीरुधः ॥ तिलौदनरसक्षारांदधिक्षीरंघृतंजल
म् ३६ शस्त्रासवमधूच्छिष्टमधुलाक्षाथवर्हिषः ॥ मृच्चर्म्म
पुष्पकुतुपकेशतक्रविषक्षितीः ३७ कौशेयनीललवणमांसै
कसफसीसफान् ॥ शाकाद्रौषधिपिण्याकपशुगंधांस्तथैव
च ३८. वैश्यवृत्त्यापिजीवन्नोविक्रीणीतकदाचन ॥ धर्मार्थं
विक्रयंनेयास्तिलाधान्येनतत्समाः ३९ लाक्षालवणमांसानि
पतनीयानिविक्रये॥पयोदधिचमद्यंचहीनवर्णकराणितु ४०॥

आपत्तिकाल में ब्राह्मण क्षत्री के अथवा वैश्यों के काम करके जीविकाकरे और जब उससमयसे पारहो जाय तो प्रायश्चित्त से देह पवित्रकर अपनी निज वृत्ति ग्रहण करे ३५ फल, पत्थर, अतसी के वस्त्र आदि, सोमलता, मनुष्य, पुआ, विरुद्ध तिल, ओदन (भात) रस (तेल आदि) क्षार (खारी नोन आदि) दहीं, दूध, घी, जल ३६ शस्त्र, आसव, (मदिरा अरक आदि) मधु, जूठामद्य, लाक्षा, कुश, मिट्टी, चाम, फूल, कुतुप (कम्बल) बालकी चीज़, (चवरआदि) तक्र (माठा) विष, पृथ्वी ३७ पाट वस्त्र, नील, लवण, मांस, एकखुरवाले (घोड़ाआदि) सीसा, शाक आर्द्रौषधि (गीलीबिरई) पिण्याक (पीना) और पशु (बनैल) मृगआदि, गन्ध चन्दन आदि ३८ इनसब चीजों को वैश्यकी वृत्तिकरे तोभीनबेंचे धर्म्मकार्य के अर्थ किसीदूसरेअन्नको बराबर लेकर तिलकी विक्रीकरे ३९ लाख, नोन और मांस इनके बेंचने से मनुष्य पतितहोता और दूध, दही और मदिरा इनके बेंचनेसे हीनवर्ण होजाताहै ४० ॥

आपद्गतःसम्प्रगृह्णन्भुञ्जानोवाग्यतस्ततः ॥ नलि
प्येतैनसाविप्रोज्वलनार्कसमोहिसः ४१ कृपिशिल्पंभृति
र्विद्याकुसीदंशकटंगिरिः ॥ सेवानूपंनृपोभैक्ष्यमापत्तौजीव
नानितु ४२ बुभुक्षितस्त्र्यहंस्थित्वाधान्यमब्राह्मणाद्धरेत् ।
प्रतिगृह्यतदाख्येयमभियुक्तेनधर्म्मतः ४३ तस्यवृत्तंकुलंशी
लंश्रुतमध्ययनंतपः ॥ ज्ञात्वाराजाकुटुम्बंचधर्म्यांवृत्तिंप्रक
ल्पयेत् ४४सुतविन्यस्तपत्नीकस्तयावानुगतोवनम्॥वानप्र
स्थोब्रह्मचारीसाग्निःसोपासनोव्रजेत् ४५ अफालकृष्टेना
ग्नींश्चपितॄन्देवातिथीनपि ॥ भृत्यांश्चतर्पयेत्श्मश्रुजटालोम
दात्मवान् ४६ ॥

आपत्कालमें यदिब्राह्मणनीचदानले व भोजनकरेतो दोपनहीं क्योंकि उससमयवहअग्नि और सूर्य्यके समानहोताहै ४१ खेती करनी,शिल्प (कारीगरी) भृति(मजूरी)विद्या (पढ़नाआदि,कुसीद (व्याजलेनेवाला) शकट (गाड़ी) गिरि (पहाड़की घासलकड़ी वेंचना) सेवा अनूप (जलप्रायदेश) नृप (राजा) और भीप येसव विपत्तिकालमेंजीनेकेउपायहैं ४२ तीनदिनभूखारहकरब्राह्मणको छोड़दूसरेकेघरसे अन्नचुरानायदि पकड़ाजावे तोधर्मसे सच सच कहदेवे ४३ इसप्रकारविपत्तिमेंपड़ेहुये मनुष्यका कुल,शील,विद्या वेद,तप और कुटुम्बयहसबदेखके राजा उसको धर्म के अनुकूल वृत्ति (जीविका) ठहरादेने ४४ इत्यापद्धर्मप्रकरणम् ॥ लड़कों को स्त्रीसौंपकर व उसे साथही लेकर ब्रह्मचर्य्यव्रत धारण करके अग्नि (वैतानाग्नि) और उपासना (गृह्याग्नि) समेत वानप्रस्थहोवे (वनमेंजावे) ४५ विनजुती भूमिमें जो अन्न उपजे उसी से अग्नि,पितर,देवता,अतिथि और भृत्यों (सेवकों को) तुष्टकरे जटा और रोम न तुड़ावे आत्मवान् (आत्माकीउपासनामें) रत भी होवे ४६ ॥

अह्नोमासस्यषण्णांवातथासंवत्सरस्यवा ॥ अर्थस्यसंचयंकुर्य्यात्कृतमाश्वयुजेत्यजेत् ४७ दांतस्त्रिषवणस्नायीनिवृत्तश्चप्रतिग्रहात् ॥ स्वाध्यायवान्दानशीलःसर्वसत्त्वहितेरतः ४८ दन्तोलूखलिकःकालपक्काशीवाश्मकुट्टकः ॥ श्रौतंस्मार्त्तंफलंस्नेहैःकर्म्मकुर्य्यात्तथाक्रियाः ४९ चांद्रायणैर्नयेत्कालंकृच्छ्रैर्वावर्त्तयेत्सदा ॥ पक्षेगतेवाप्यश्नीयान्मासेवाहनिवागते ५० स्वप्याद्भूमौशुचीरात्रौदिवासंप्रपदैर्नयेत् ॥ स्थानासनविहारैर्वायोगाभ्यासेनवातथा ५१ ग्रीष्मेपंचाग्निमध्यस्थोवर्षासुस्थण्डिलेशयः ॥ आर्द्रवासास्तुहेमन्तेशक्त्यावापितपश्चरेत् ५२ ॥

एकदिन, महीनाभर, छः महीना अथवा वर्षभर के लिये अन्न इकट्ठा रक्खे और उसको कुंवार की पूर्णमासी को सब उठा देवे ४७ इन्द्रियों का दमन रक्खे तीनकाल स्नानकरे दान न लेवे वेदपढ़ाकरे दानदियाकरे और सब जीवों के हित में तत्पर रहे ४८ दांतसे कुंचलकर जो चीज़ खासके सो खावे (ओखली में न कूटे) अथवा अपने से जो पकगयाहो सो खावे व पत्थरपर कूटले और वेदोक्तकर्म व धर्मशास्त्र की क्रियामें जो हवन आदि करनाहो और देहमें मलना आदि निजकार्य भी फल के चिकना (तेल) से करे ४९ सदा चान्द्रायण व्रत अथवा कृच्छ्र व्रत करके अपनाकाल बितावे अथवा पन्द्रहदिन व महीना भर व एकदिन बीतनेपर भोजनकरे ५० शुद्धहोके रातको नंगी भूमिपर सोवे और दिनमें घूमते फिरते बितावे अथवा स्थान (खड़ा रहना) और आसन (बैठने)के बिहारसे व योगाभ्यास से दिन काटे ५१ ग्रीष्म (गरमी) में पंचाग्नि के बीच बैठे, वर्षा में भूमि पर सोवे हेमन्त ऋतु में गीलावस्त्र पहिने अथवा अपनी शक्ति के अनुसार तपकरे ५२ ॥

यःकण्टकैर्वितुदतिचन्दनैर्यश्चालिम्पति ॥ अक्रुद्धोपरि
तुष्टश्चसमस्तस्यचतुस्यच ५३ अग्नीन्वाप्यात्मसात्कृत्वा
वृक्षावासोमिताशनः ॥ वानप्रस्थगृहेष्वेवयात्रार्थम्भक्ष्य
माचरेत् ५४ ग्रामादाहृत्यवाग्रासानष्टौभुंजीतवाग्यतः ॥
वायुभक्षःप्रागुदीचींगच्छेद्वावर्ष्मसंक्षयात् ५५ वनाद्गृहाद्वां
कृत्वेष्टिंसार्ववेदसदक्षिणाम् ॥ प्राजापत्यांतदन्तेतानग्नी
नारोप्यचात्मनि ५६ अधीतवेदाजपकृत्पुत्रवानन्नदोग्नि
मान् ॥ शक्त्याचयज्ञकृन्मोक्षेमनःकुर्य्यात्तुनान्यथा ५७ स
र्वभूतहितःशान्तस्त्रिदण्डीसकमण्डलुः ॥ एकारामःपरिव्र
ज्यभिक्षार्थीग्राममाश्रयेत् ५८ ॥

जोकांटाचुभावे और जोचंदनलगावे इनदोनोंकोवराबरजाने न पहिलेपरतुष्टहो और न दूसरेपरक्रोधकरे ५३ अथवा तीनोंअग्नियों कोभी आत्मामेंसमझले वृक्षकेतले वासरक्खे परमित (नपाहुआ) भोजनकरे और प्राणकीरक्षाकेलिये वानप्रस्थोंहींके घरभिक्षाकरे ५४ अथवा गांवसे अन्नलेआकरमौनीहोआठग्रासखावे अथवावायु भक्षण(उपवास)करतेहुयेईशानदिशामें जवतकनमरे वरावरचला जावे ५५ इतिवानप्रस्थप्रकरणम् ॥ यदिगृहस्थाश्रम अथवावानप्र-स्थाश्रम में प्रजापतिदेवताकी ऐसीयज्ञकरे कि अपना सर्वस्वधन दक्षिणामेंदेडाले और यज्ञकीउन (वैताल) अग्नियोंको वेदरीति से आत्मामेंस्थापनकरावे, ५६ और वेदपढ़ाहो, जपकरताहो, पुत्रजन्म होचुकाहो, दीनदुःखितकोअन्नदेताहो, अग्निमेंहोमकरताहोऔरअ पनीशक्तिकेअनुसारयज्ञकरताहोवे तोमोक्ष(संन्यासाश्रम)कोग्रहण करनेकीइच्छाकरनेमेंमनचलावे ऐसानहोतो इसकीइच्छानकरे ५७ सवजीवोंकाहितकरे शांतरहे (कड़ीवातकहनेपरक्रोधनकरे) बांसके तीनदंड औरकमंडलुधारणकरे किसीकासंगनरक्खे वैरप्रीतिआदि संसारकेकाम सवछोड़दे और भिक्षालेनेको गांवमेंजावे ५८ ॥

अप्रमत्तश्चरेद्भैक्ष्यंसायाह्नेनभिलक्षितः ॥ रहितेभिक्षुकैर्ग्रामेयात्रामात्रमलोलुपः ५९ यतिपात्राणिमृद्वेणुदार्वलाबुमयानिच ॥ सलिलैःशुद्धिरेतेषांगोवालैश्चावघर्षणम् ६० सन्निरुद्धेन्द्रियग्रामंरागद्वेषौप्रहायच ॥ भयंहित्वाचभूतानाममृतीभवतिद्विजः ६१ कर्त्तव्याशेषशुद्धिस्तुभिक्षुकेणविशेषतः ॥ ज्ञानोत्पत्तिनिमित्तत्वात्स्वातन्त्र्यंकरणायच ६२ अवेक्ष्यागर्भवासाश्चकर्म्मजागतयस्तथा ॥ आधयोव्याधयः क्लेशाजरारूपविपर्य्ययः ६३ भवोजातिसहस्रेषुप्रियाप्रियविपर्य्ययः॥ध्यानयोगेनसम्पश्येत्सूक्ष्मआत्मात्मनिस्थितः ६४

प्रमाद (वाणी और चक्षु आदिकी चपलता) छोड़कर सन्ध्या समय में अनाभिलक्षित (ज्योतिषी वा सामुद्रिकके कामसे रहित होकर जहां दूसरा भिक्षुक न होवे वहांअपने पेटही भरनेके योग्य भिक्षा मांगे अधिकका लालच न करे ५६ मृत्तिका, वांस, काठ और अलावु (लौकी) से संन्यासियों के पात्र बनते हैं जलके साथ धोने और गोवाल के घसनेसेही उनकी शुद्धि होतीहै ६० सब इन्द्रियों का संयमकरे वैर प्रीति छोड़ दे और किसी जीवको भयदेनेहारा कामनकरे तो द्विजमुक्त होताहै ६१ संन्यासी विशेष करके अन्तःकरण की शुद्धि प्राणायामसे करे क्योंकि उससे ज्ञान बढ़ता और ध्यानकरने में स्वतन्त्रता होती है ६२ विराग होने के लिये गर्भवास (जहां मल मूत्रमें रहना होताहै उस) परध्यान दे और कुकर्मसे जो गति होतीहै उन्हें समझे आधि (चित्तकी पीड़ा) व्याधि (शरीरका रोग) क्लेश (अविद्याआदि पांच बुढ़ापा और स्वरूप का बदलना) ६३ सैकड़ों जातों में जन्म लेनाचाही बात न होना और अनचाहीका होना इनसबकोदेख ध्यानद्वारा निश्चिन्ताई से अपनी शरीर में स्थित आत्मा को देखे ६४ ॥

नाश्रमःकारणंधर्म्मेक्रियमाणोभवेद्धिसः ॥ अतोयदात्म
नोपथ्यंपरेपांनतदाचरेत् ६५ सत्यमस्तेयमक्रोधोह्रीःशौचं
धीर्धृतिर्दमः ॥ संयतेन्द्रियताविद्याधर्म्मःसर्वउदाहृतः ६६
निस्सरंतियथालोहपिंडात्तप्तात्स्फुलिंगकाः ॥ सकाशादात्म
नस्तद्वदात्मनःप्रभवन्तिहि ६७ तत्रात्माहिस्वयंकिंचित्कर्म
किंचित्स्वभावतः ॥ करोतिकिंचिदभ्यासाद्धर्म्माधर्म्मोभया
त्मकम् ६८ निमित्तमक्षरःकर्त्ताबोद्धाब्रह्मगुणीवशी ॥ अजः
शरीरग्रहणात्सजातइतिकीर्त्यते ६९ सर्गादौसयथाकाशं
वायुंज्योतिर्जलम्महीम् ॥ सृजत्येकोत्तरगुणांस्तथादत्तेभव
न्नपि ७० ॥

किसीधर्मके आचरण में कोई आश्रम कारण नहींहै क्योंकि करनेसे सब आश्रमोंमें धर्महोताहीहै इसलिये जो वार्ताअपनेको भली न लगे वह दूसरेको न करे ६५ सचबोलना, चोरी न करनी, क्रोध न करना, लज्जा. पवित्रता, बुद्धिमानी, धीरज, शांति इन्द्रियों को वशमें रखना और विद्याभ्यास यहसब धर्मके लक्षण हैं ६६ इतियतिप्रकरणम् ॥ जिसप्रकार तपायेहुये लोहेसेजो छोटे छोटे कण उडतेहैं उन्हेंस्फुलिंग (चिनगारियां) कहतेहैंइसीप्रकार परमात्मासे जीवात्मा उपजते हैं यहबात कहीजाती है ६७ फिर वहां धर्म और अधर्मरूपी काम कुछ तो आत्मा आपहीकरता कुछस्वभावसे और कुछअभ्याससे करताहै ६८ यद्यपि आत्मा सब वस्तुओंकानिमित्त विनाशरहित, करनेहारा,ज्ञानरूप(जानने-वाला) ब्रह्म (व्यापक) गुणी, वशी (इन्द्रियों को वशमें रखने वाला) और अज (कभी जन्मतानहीं) परन्तुशरीर ग्रहणकरनेसे उसको लोग कहतेहैं कि पैदाहुआहै ६९ जिसप्रकार सृष्टिके आदि में वह आकाश, वायु, तेज, जल और पृथ्वीकोजो क्रमसे एक एकगुण अधिक रखते (आ० १ वा० २ ते० ३ ज० ४ पृ० ५)इन्हें बनाता इसीप्रकार उत्पन्न होकर उन्हें धारणभी करता है ७० ॥

आहुत्याप्यायतेसूर्य्यःसूर्य्याद्वृष्टिरथौषधिः ॥ तदन्नंरसरूपेणशुक्रत्वमधिगच्छति ७१ स्त्रीपुंसयोस्तुसंयोगेविशुद्धेशुक्रशोणिते॥ पंचधातून्स्वयंषष्ठआदत्तेयुगपत्प्रभु ७२इन्द्रियाणिमनःप्राणोज्ञानमायुःसुखंधृतिः॥ धारणाप्रेरणंदुःखमिच्छाहंकारएवच ७३ प्रयत्नआकृतिर्वर्णःस्वरद्वेषौभवाभवौ ॥ तस्यैतदात्मजंसर्व्वमनादेरादिमिच्छतः ७४ प्रथमेमासिसंक्लेदभूतोधातुविमूर्च्छितः॥ मास्यर्बुदंद्वितीयेतुतृतीयेंगेन्द्रियैर्युतः ७५ आकाशाल्लाघवंसौक्ष्म्यंशब्दंश्रोत्रंबलादिकम् ॥ वायोश्चस्पर्शनंचेष्टांव्यूहनंरौक्ष्यमेवच ७६ ॥

आहुतिदेने (होमकरने)से सूर्य्य पुष्टहोतेहैं सूर्य्यसे वृष्टि उससे सब औषधीबढ़तीहैं और उनके अन्नका रस शुक्र(वीर्य)बनता है ७१ जबस्त्रीपुरुषके संयोगसेशुक्र(वीर्य)शोणित(रज)शुद्धहोतेहैं तो पांचों धातुओंको छठांआपप्रभु (आत्मापरमात्माएकहीवारग्रहण करताहै ७२ इन्द्रिय,मन,प्राण,ज्ञान,आयु(अवस्था)सुख,धीरज,धारण (स्मरणशक्ति)प्रेरणा.दुःख इच्छा,अहंकार ७३ प्रयत्न आकृति (स्वरूप)वर्ण (रंग)स्वरद्वेष उत्पत्तिऔर नाश ये सबउसआदि रहित आत्माके सब आश्रय (आधारहोतेहैं)जब वह उत्पन्नहोनेकी इच्छाकरताहै ७४ पहिलेमहीने(पृथ्वीआदि)धातुओंसे मूर्च्छितहोकर गर्भसंक्लेद(पानीकेसमानगीला)रहताहै,दूसरेमहीने अर्बुद(कड़ाहोताहै)तीसरेमेंअंग(हाथपांवआदिऔर इन्द्रियों(नाककानआदि)से युक्तहोताहै ७५ आकाश(रूप महाभूत)सेहरुआई.सूक्ष्मता, शब्द(ध्वनिसुननेकीशक्ति)औरबलआदि*वायुसे स्पर्श(छूना) चेष्टा(इधरउधरडोलना),और रुक्षता(रूखापन)धारणकरताहै ७६ ॥

*छिद्रओरविविक्तता ॥

पित्तात्तुदर्शनंपक्तिमौष्ण्यंरूपंप्रकाशितम् ॥ रसात्तुरसनं शैत्यंस्नेहंक्लेदंसमार्दवम् ७७ ॥ न्धंतः घ्रा ौर ति मेवच ॥ आत्माग्रहणात्यजःसर्व्वंतृतीयेस्पन्दतेततः ७८ द्वौ हृदस्याप्रदानेनगर्भोदोपमवाप्नुयात् ॥ वैरूप्यं स्मात्कार्य्यंप्रियंस्त्रियाः ७९ स्थैर्य्यंचतुर्थेत्वंगानांपंचमेशोणितोद्भवः ॥ पष्ठेवलस्यवर्णस्यनखरोम्णांचसम्भवः ८० मनश्चैतन्ययुक्तोसौनाडीस्नायुशिरायुतः ॥ समे ष्टमे मांसस्मृतिमानपि ८१ पुनर्धात्रींपुनर्गर्भमोजस्तस्यप्रधावति ॥ अष्टमेमास्यतोगर्भोजातःप्राणैर्वियुज्यते ८२ ॥

पित्तसे देखना,पचानेकी सामर्थ्य,उष्णता,रूप औरप्रकाशकरनेकी शक्तिग्रहणकरताहै रससेरसना जिससे(स्वादमालूमहोतहै)शीतलता,गीलापन,ढीलापन और नरमावटपाताहै ७७ भूमिसे गन्ध,घ्राण(जिससे गन्धजानपड़ताहै)गौरव(गरुआई)औरमूर्त्ति(आकार व स्वरूप)इन सवको भी आत्मातीसरे ही मासमें ग्रहणकरताहै इसके अनन्तर कुछकुछ डोलनेलगताहै ७८ दोहद(जिसचीज़पर गर्भिणीस्त्रीकामनचले उस)के न देनेसे गर्भमें कुरूपता और मरणआदि दोपहोजातेहैं इसलिये जोस्त्रीकोप्रियलगे सो करना ७९ चौथे महीनेमें अंग(हाथपांव) आदिकी दृढ़ताहोतीहै,पांचवेंमें रुधिर उपजताहै और छठेमहीनेमेंवल,वर्ण(रंग) नख और रोमकीसंचय (वढ़ती)होतीहै ८० सातवेंमें मन,चैतन्य, नाड़ी (वायुवाहिनीजोट पकड़लेतीहै)स्नायु (जिससेहड्डियांवँधीरहतीहैं)और शिरा (जिसमें वात पित्त और श्लेष्मावूमतेहैं)इनसे युक्त होताहै आठवेंमें त्वचा(खाल)मांस औरस्मरणशक्तिकोपाताहै८१ आठवें महीनेमें उसगर्भका ओज (वल व पिता) वारम्वार धात्री (माता)और गर्भको दौड़ताहै इसलिये यदि आठवेंमें जन्मे तो जीवनिकलजाता है ८२ ॥

नवमेदशमेवापिप्रबलैःसूतिमारुतैः॥निःसार्यतेवाणइव यंत्रच्छिद्रेणसज्वरः८३ तस्यषोढाशरीराणिषट्त्वचोधारयंतिच ॥ षडंगानितथास्थ्नांचसहषष्ट्याशतत्रयम्८४स्थालैः सहचतुःषष्टिर्दंतावैविंशतिर्नखाः॥पाणिपादशलाकाश्चतेषां स्थानचतुष्टयम् ८५ षष्ट्यंगुलीनांद्वेपार्ष्ण्योर्गुल्फेषुचचतुष्टयम् ॥ चत्वार्य्यरत्निकास्थीनिजंघयोस्तावदेवतु ८६ द्वेद्वेजानुकपोलोरुफलकांससमुद्भवे ॥ अक्षतालूषकश्रेणीफलकेचविनिर्दिशेत्८७भागास्थ्येकंतथापृष्ठेचत्वारिंशच्चपंचच ॥ ग्रीवापंचदशास्थ्नींस्याज्जत्र्वेकैकंतथाहनुः ८८ ॥

नवें व दशवें महीनेमें बड़े प्रवलप्रसूतिमारुत(अपान वायु) से प्रेरितहोकर ज्वरसाहित उसप्रकार गर्भसे वाहर निकलताहै,जैसे यंत्रसे वाणछूटताहै ८३ उसके छःप्रकारके*शरीरछहीत्वचा और छः* अंगोंको और तीनसौ साठहड्डियां धारणकरतेहैं ८४ उन तीनसौ साठ हड्डियोंको गिनाताहै स्थाल(समगुर)समेत चौंसठ दांत,वीसनह,हाथ और पांवकी(शलाकारूप)लंवीलंवी हड्डियां भी वीसहोतीहैं और उनके चारस्थानहैं(दोहाथ दोपांव८५अंगुलियोंकी साठपार्ष्णि(एँड़ी)की दोगुल्फ(पांवकेपंजे)की चारअरत्निका (मुठहंथ)की चार और दोनों जंघोंकी भी उतनीही चारहड्डियां होतीहैं८६ जानु(टेउनी) कपोल(गाल) उरु(पट्टे) फलक अंस (कन्धे)अक्ष (कक्षा)तालूष (तालु)श्रोणी और फलक(दोनोंचूतर) में दोदो हड्डियां जानना ८७ भग (गुदा) की एकपीठकी पैंतालीसग्रीवा(गर्दन)मेंपंद्रहजत्रु(हँसुआ)औरहनु(ठुड्डी)मेंएक२८८

*रक्त,मांस,मेदस, अस्थि, मज्जा और शुक्र इन छः धातुओं के परिपाक हेतु जो जठराग्निके स्थान हैं उनके योगसे छः प्रकार शरीर कहेजातेहैं और वेही छः त्वचा कहेजाते हैं जैसे केले भेड़की छाल सम्भादी है २॥

तन्मूलेद्वेललाटाक्षिगण्डेनासाघनास्थिका ॥ पार्श्वका स्थालकैःसार्द्धमर्वुदेश्चद्विसप्ततिः ८९ द्वौशंखकौकपाला निचत्वारिशिरसस्तथा ॥ उरःसप्तदशास्थीनिपुरुषस्या स्थिसंग्रहः९० गन्धरूपरसस्पर्शशब्दाश्चविषयाःस्मृताः नासिकालोचनेजिह्वात्वक्श्रोत्रंचेन्द्रियाणिच ९१ हस्तौपा यूरुपस्थंचजिह्वापादौचपंचवै ॥ कर्मेन्द्रियाणिजानीयान्म नश्चैवोभयात्मकम् ९२ नाभिरोजोगुदंशुक्रंशोणितंशंखकौ तथा ॥मूर्द्धांसकण्ठहृदयंप्राणस्यायतनानिच९३वपावसाव हननंनाभिःक्लोमयकृत्प्लिहा॥क्षुद्रांत्रंवृक्कौवस्तिःपुरीषाधा नमेवच ९४ ॥

उसदाढ़ के मूल (जड़) की दो हड्डियां,ललाट (मस्तक) आंख गण्ड कपोल और आंखका बीच इनमेंभी दो दो और नाक में घननासक एकहड्डी है पार्श्वक (पंशुलीकी हड्डियां) अपने स्थालक (रहने की जगह) और अर्वुद नाम हड्डियोंसमेत,बहत्तर होती हैं ८९ दो हड्डियां शंखक (भौंह औ कानकेबीच) की चार कपाल की हड्डियां और छाती में सत्रह इतनी हड्डियां मनुष्यके होती हैं सो मैंने दिखाईं ९० गन्ध,रूप, रस,स्पर्श और शब्द इतने विषय (मनुष्यके बन्धनहैं) और नाक,आंख, जीभ,त्वचा (खाल) और कान ये उनकी ज्ञानेन्द्रिय (जाननेके द्वार)हैं ९१ हाथ,पांव,गुद व उपस्थ (जिससे रतिकासुखहो) जीभ और पांव येपाँच कर्मेन्द्रिय कहलातेहैं औरमनको (ज्ञानेन्द्रिय) (कर्मेन्द्रिय)दोनों कहते हैं९२ नाभी, ओज (पिता) गुद शुक्र(बीज) रक्त,शंखक भौंह कान के बीच शिर, कन्धे व कण्ठ(नटी)हृदय येदश प्राणके घरहैं९३वपा (कीली)वसा(चरबी) अवहनन (फुफ्फस)*नाभिक्लोमयकृत् (दहिने कोखकी बरवट, क्लोमप्लीहा,बायेंकोखे की तापतिल्ली) क्षुद्रांत्र (हृदयकी आंती)वृक्क (हृदयके पास दो मांसके गोलेहोते हैं) वस्ति (पेड़ू) पुरीषाधान मलकी जगह ९४ ॥

आमाशयोथहृदयं स्थूलांत्रंगुदएवच ॥ उदरञ्चगुदौ कोष्ठ्यौ विस्तारोयमुदाहृतः ९५ कनीनिकेचाक्षिकूटशष्कुलीकर्णपत्रकौ कर्णौशंखौभ्रुवौदन्त वेष्टावोष्ठौककुन्दरे ९६ वंक्षणौवृषणौवृक्कौ श्लेष्मसंघातजौस्तनौ ॥ उपजिह्वास्फिजौवाहू जंघोरुषुचपिण्डिका ९७ तालूदरंवस्तिशीर्षं चिबुकेगलशुण्डिके ॥ अवटश्चैवमेतानि स्थानान्यत्रशरीरके ९८ अक्षिवर्णचतुष्कञ्च पद्धस्तहृदयानि च ॥ नवच्छिद्राणितान्येवप्राणस्यायतनानितु ९९ शिराःशतानिसप्तैवनवस्नायुशतानिच ॥ धमनीनांशतेद्वेतुपञ्चपेशिशतानिच१०० ॥

आमाशय (जहां अन्नपचकर इकट्ठा होताहै) हृदय कमल वड़ी अन्तड़ी, गुद, उदर, (पेट) और गुदकी दोनो कोठियां इतने प्राणके रहनेके स्थलोंका विस्तारहै ९५ कनीनिका (आंखके तारे) अक्षिकूट (आंखऔरनाककाजोड़)शष्कुली (कानकाभीतरीखण्ड) कर्णपत्र (कानका वाहरी खण्ड) कान, शंखक, भौंह, दन्तवेष्ट (दतपाली) ओठ, ककुन्दर (जघनकूप) ९६ वंक्षण (जंघा और ऊरूकाजोड़)वृषण(अण्डकोश)वृक (हृदयकेपासमांसकेदोगोले)दोनों स्तन जो श्लेष्माकेइकट्ठेहोनेसेवनेहैं, उपजिह्वा (घंटी)स्फिज (कटिप्रोथा) वाहु,जंघा और उसकी मांसपिण्डिका ९७ तालुउदर पेड़ू, शिर, चिबुक, (दाढ़ी) गलशुण्डिका (दाढ़ी) और गलेकाजोड़ और जो कोई शरीरमेंगर्त(नीचीजगह) हो ९८ आंख, कान, नाक मुंह, मूत्रद्वार, मलद्वार ये नवोछिद्र और पूर्वोक्तस्थान और पांव हाथ और हृदय येसवप्राणके रहनेके स्थलहैं ९९ शिरा (वात पित्त श्लेष्मवाहिनी) नाडी सातसौहैं स्नायुहड्डियों के वन्धन नौसौ हैं धमनी (प्राणवाहिनी) नाड़ी दोसौ हैं और पेशी (मोटी मोटी नसे जो जंघा आदि की हैं वे पांचसौ होती हैं १०० ॥

एकोनत्रिंशल्लक्षाणितथानवशतानिच ॥ षट्पञ्चाशच्चजानीतांशिराधमनिसंज्ञिताः १ त्रयोलक्षास्तुविज्ञेयाःश्मश्रुकेशाशरीरिणाम् ॥ सप्तोत्तरंमर्म्मशतंद्वेचसन्धिशतेतथा २ रोम्णांकोटयस्तुपञ्चाशच्चतस्रःकोटयएवच ॥ सप्तषष्ठिस्तथालक्षाःसार्द्धाःस्वेदायनैःसह ३ वायवीयैर्विगण्यन्तेविभक्ताःपरमाणवः ॥ यद्यप्येकोनुवेत्त्येषांभावानांचैवसंस्थितिम् ४ रसस्यनवविज्ञेयाजलस्यांजलयोदश ॥ सप्तैवतुपुरीषस्यरक्तस्याष्टौप्रकीर्त्तिताः५षट्श्लेष्मापञ्चपित्तञ्चचत्वारोमूत्रमेवच॥ सात्रयोद्वौतुमेदोमज्जैकोर्ध्वंतुमस्तके६ श्लेष्मौजसस्तावदेव रेतसस्तावदेवतु॥इत्येतदस्थिरंवर्ष्मयस्यमोक्षायकृत्यसौ७॥

हेमुनिलोग यहजानो कि शिरा और धमनीइनदोनोंनाड़ियोंके मिलनेसेउसकी शाखाउन्नीसलाखनवसौछप्पन होजाती हैं १ मनुष्योंकेदाढ़ीमूंछऔरशिरमेंसबमिल तीनलाखबालहोतेहैं एकसौ सातमर्मस्थल(जहांचोटलगनेसेमरजावेंऐसीजगह)हैंऔर दोसौहड्डियोंके जोड़हैं २ स्वेदायन (पसीनानिकलनेकीजगह)समेतचौवन करोड़सातलाख रोमहोते हैं ३ इनकी गिनती तब होसक्ती है कि जब वायुकेपरमाणुमें अलगअलगकियेजावें औरहेमुनिलोग तुममें जोकोई इनभावोंकीस्थितिजानताहो वहमान्यहै क्योंकिये बड़ेकठिनहैं ४इसशरीरमेंअन्नकारसनवअंजली, जलदशअंजली, पुरीष (अन्नमल)सातअंजली,रक्तआठअंजली,५श्लेष्मा(कफ)छःअंजली पित्तपांचअंजली,मूत्रचारअंजली,वसा(चरबी)तीन,मेद (मांसरस दो)मज्जा(हड्डीकेभीतरकीचरबी)सारेशरीरमेंएकऔरमस्तकमेंआधीअंजली।मिलजुलडेढ़अंजलीहोतीहैं ६ श्लेष्मौजस (कफकेसार) औररेत(वीर्य)भीउतनीहीडेढ़अंजलीरहता है इसप्रकारहाड़मांस आदिअपवित्रवस्तुओंसे यहशरीरबनाहैऔरअस्थिरहै (बहुतदिन न रहेगा)ऐसीजिसकीमतिहै सोपण्डितमोक्षपानेके योग्यहोताहै ७॥

द्वासप्ततिसहस्राणिहृदयादिभिनिःसृताः॥हिताहितानाम
नाड्यस्तासांमध्येशशिप्रभम् ८ मण्डलंतस्यमध्यस्थआत्मा
दीपइवाचलः ॥ सज्ञेयस्तंविदित्वेहपुनराजायतेनतु ९ ज्ञेयं
चारण्यकमहंयदादित्यादवाप्तवान् ॥ योगशास्त्रञ्चमत्प्रोक्तं
ज्ञेययोगमभीप्सता १० अनन्यविषयंकृत्वामनोबुद्धिस्मृती
न्द्रियम् ॥ ध्येयआत्मास्थितोयोसौहृदयेदीपवत्प्रभुः ११ य
थाविधानेनपठन्सामगायमविच्युतम् ॥ सावधानस्तदभ्या
सात्परंब्रह्माधिगच्छति १२ अपरान्तकमुल्लोप्यम्मद्रकम्म
करीन्तथा ॥औवेणकंसरोविन्दुमुत्तरंगीतकानिच १३ ॥

जो हृदयस्थहित और अहितनामक बहत्तरसहस्र(बहत्तरहजार)नाड़ियां निकलीहैंऔर इड़ापिंगला और सुषुम्णातीन ये इनसबोंकेमध्यमें चन्द्रमाके सदृश प्रकाशमान८एक मंडल उसकेबीच निर्वातस्थलके दीपकेसमान अचल और प्रकाशमान आत्मा है उसको जाननाचाहिये क्योंकि जो उसेजाने वह फिर इससंसारमें नहीं उत्पन्नहोता ९ याज्ञवल्क्यमुनि कहतेहैं कि योग(और विषयों को छोड़ आत्मामें स्थिरता)पानेकी अभिलाषारक्खे वह बृहदारण्यकनामग्रन्थ जो मैंने सूर्य्यदेवतासे पायाहै उसे और हमारेबनायेहुये योगशास्त्रको पढ़े १० मनबुद्धि,स्मृति और (हाथ, पांव, आंख)(कानआदि)इन्द्रियोंको दूसरेविषयोंसे हटाकर जो हृदयमें अचल दीपकेसमान प्रभु आत्मास्थित है उसका ध्यानकरना ११ (यदि आत्माकाध्यान नहोसके तो)सामवेद का गान सावधान होकर यथाविधि पढ़े और अभ्यासकरे तो परब्रह्मको जानता है १२ (जिसका मन उसमें भी न लगे) अपरान्तक,उल्लोप्य, मद्रक, प्रकरी, औवेणक और सरोविंदसहित उत्तरगीत इनसब गीतोंको १३ ॥

ऋग्गाथापाणिकादक्षविहिताब्रह्मगीतिका॥गेयमेतत्द
भ्यासकरणान्मोक्षसंज्ञितम् १४वीणावादनतत्वज्ञःश्रुतिजा
तिविशारदः॥तालज्ञश्चाप्रयासेनमोक्षमार्गंनियच्छति १५
गीतज्ञोयदियोगेननाप्नोतिपरमम्पदम्॥रुद्रस्यानुचरोभूत्वा
तेनैवसहमोदत १६ अनादिरात्माकथितस्तस्यादिस्तुशरी
रकम् ॥ आत्मनस्तुजगत्सर्वंजगतश्चात्मसम्भवः १७ कथ
मेतद्विमुह्यामस्सदेवासुरमानवम्॥जगदुद्भूतमात्माचकथन्त
स्मिन्वदस्वनः १८ ॥

और ऋग्गाथा, पाणिका, दक्षगीतिका और ब्रह्मगीतिका इन सबोंकोगावे उनके अभ्याससे चित्त एकाग्रहोताहै इसलिये इन्हें मोक्षदेनेवाली कहतेहैं १४ जो मनुष्य वीणा(वीन)जिसके बजाने की रीति भरतआदि,मुनियोंनेकहीहै)बजानेकातत्त्व जाननेवाला हो श्रुति और जातिमें प्रवीणहो और ताल भी जाने तो वेप्रयास मुक्तिकी राहपाताहै १५ गीतजाननेवाला यदि योगकरनेसे परम पद(मुक्ति)न पावे तो रुद्र(महादेव)का अनुचर होताहै और उन्हीं के साथ क्रीड़ाकरताहै १६ (इसप्रकरणमें जितनी बातेंकहीहैं सब दिखाताहै)आत्माअनादिहै,उसकी उत्पत्ति यहीहै कि शरीरधारण करना,आत्मासे सब(पृथ्वीआदि)जगत् और जगत्(पृथ्वीआदिम-हाभूत के संग)से आत्मा(जीवों)की उत्पत्ति यह कहाहै १७ परन्तु यह बात विस्तारपूर्वक हमसे कहिये कि यह देवता, असुर और मनुष्य आदि के सहित संसार कैसे उपजा और उस जगत् में आत्मा किसप्रकार (पशुपक्षी आदि योनिमें) प्राप्तहोताहै क्योंकि इसमें हमलोगोंको बड़ा,संदेह है (ऐसाऋषियोंने याज्ञवल्क्यमुनि से पूछा) १८ ॥

मोहजालमपास्येहपुरुषोदृश्यतेहियः ॥ सहस्रकरपन्न
त्रःसूर्य्यवर्चाःसहस्रकः १९ सआत्माचैवयज्ञश्चविश्वरूपः
प्रजापतिः॥विराजःसोन्नरूपेणयज्ञत्वमुपगच्छति२० योद्र
व्यदेवतात्यागसम्भूतोरसउत्तमः ॥ देवान्सन्तर्प्यसरसोय
जमानंफलेनच २१ संयोज्यवायुनासोमंनीयतेरश्मिभिस्त
तः ॥ ऋग्यजुःसामविहितंसौरंधामोपनीयते२२सुमण्डला
दसौसूर्य्यःसृजत्यमृतमुत्तमम्॥यजन्मसर्व्वभूतानामशनान
शनात्मना२३तस्मादन्नात्पुनर्यज्ञःपुनरन्नम्पुनःक्रतुः ॥ एव
मेतदनाद्यन्तञ्चक्रंसम्परिवर्त्तते २४ ॥

(याज्ञवल्क्यमुनि उत्तरदेतेहैं)इस संसारके मोहजाल(जो इस स्थूलशरीरमें आत्माका अभिमानकरतेहैं इस)को छोड़ जो असंख्यहाथपांव और लोचनरखनेवालाहै,सूर्य्यके समानतेजसे प्रकाशमानहै और अनेक शिरवालाहै,१९ वहीआत्मा और यज्ञकहलाताहै क्योंकि वह विराट पुरुष अन्नरूपसे यज्ञहोताहै और उस से वृष्टिआदि के द्वारा विश्वरूप(सारेसंसारका आधार)होताहै २० देवताओंके निमित्त जो वस्तुदीजातीहै उससे जोउत्तम(सकलजगत्के जन्मका बीज)(रसअदृष्ट व दैव)उत्पन्नहोताहै वह देवताओं को और फलसे यजमानको तुष्टकरके २१ वायुसे प्रेरितहोकर चन्द्रमण्डलमें प्राप्तहोताहै वहांसे किरणोंके द्वारा सूर्य्यमण्डल में प्राप्तहोकर ऋक्यजुः और साम इनतीनों वेदोंका स्वरूपहोजाता है २२ अपने मण्डलसे सूर्य्य वृष्टि रूप अमृत उत्पन्नकरता है जो चर और अचर रूप सब जगत्के जन्मका हेतुहै २३ उस वृष्टि से उत्पन्नहुये अन्नसे फिर यज्ञहोताहै और यज्ञसे फिर(पूर्वोक्त प्रकार से)अन्नहोताहै उससे फिर यज्ञ इसप्रकार यह अनादि और अविनाशी संसारघूमता रहता है २४ ॥

अनादिरात्मासम्भूतिर्विद्यतेनान्तरात्मनः॥समवायीतुपु
पोमोहेच्छाद्वेषकर्म्मजः २५सहस्रात्मामयायोवाआदिदेव
दाहृतः॥ मुखबाहोरुपज्जाःस्युस्तस्यवर्णायथाक्रमम् २६ पृथि
वीपादतस्तस्यशिरसोद्यौरजायत॥ नस्तःप्राणादिशःश्रोत्र
त्स्पर्शाद्वायुर्मुखाच्छिखी २७ मनसश्चन्द्रमाजातश्चक्षुषः
दिवाकरः॥जघनादन्तरिक्षंचजगच्चसचराचरम् २८ यद्येव
सकथन्ब्रह्मन्पापयोनिषुजायते ॥ईश्वरःसकथम्भावैरनिष्टै
सम्प्रयुज्यते २९ करणैरन्वितस्यापिपर्व्वज्ञानंकथंचन ।
वेत्तिसर्व्वगतांकस्मात्सर्व्वगोपिनवेदनाम् ३० ॥

आत्मा अनादि है इसलिये अन्तरात्माकी उत्पत्ति नहीं होती यद्यपि ऐसाहै तो भी पुरुषशरीरसे समवायी(सुखदुःख आदिभोगका सम्बन्ध रखनेवाला)होताहै और वह सम्बन्ध मोहइच्छा और द्वेष इनसे उत्पादित कर्मकेद्वारा होताहै २५ (हे मुनिलोग) जो मैंने तुमसे असंख्यरूप और सकल जगत्का कारण आदिदेवकहा है उसीके मुंह,बाहु,उर और पादसे क्रमकरके चारोंवर्णउत्पन्नहुये हैं २६ उसीके पांवसे पृथ्वी,शिरसे आकाश (देवलोक व स्वर्ग)नाकसे प्राण, कानसे दशोदिशा)स्पर्श से वायु मुंहसे अग्नि २७ मनसे चन्द्रमा,आंखसे सूर्य्य और जघनसे अंतरिक्ष (शून्य) (आकाश)और चराचर जगत् उत्पन्नहोताहै २८ (ऋषिलोगपूंछते हैं)हेब्रह्मन्(हेयोगिन्याज्ञवल्क्य)जो ऐसाही(आत्माही जीवहोता) है तो यह पापयोनि(मृगपक्षी आदि)में क्यों उत्पन्नहोताहै और वह ईश्वर है इससे अनिष्टभाव (मोह राग,द्वेष आदि दोष) भी उसमें नहीं लगसक्ते कि जिससे वह जन्मलेवे २९ और मनआदि ज्ञान इन्द्रियों से युक्त है तो उसको पूर्वजन्मकी बातोंका ज्ञान क्यों नहीं रहता और वही सबमें है तो सबको (दुःखआदि सुख) वेनाका क्यों नहीं जानता ३० ॥

अन्त्यपक्षिस्थावरतांमनोवाक्कायकर्म्मजैः ॥ दोषैःप्रयाति
जीवोयम्भवंयोनिशतेषुच ३१ अनन्ताश्चयथाभावाःशरीरे
षुशरीरिणाम् ॥रूपाण्यपितथैवेहसर्व्वयोनिषुदेहिनाम् ३२
विपाकःकर्म्मणाम्प्रेत्यकेषांचिदिहजायते ॥ इहवामुत्रवै
केषाम्भावास्तत्रप्रयोजनम् ३३ परद्रव्याण्यभिध्यायन्स्त
थानिष्टानिचिन्तयन् ॥ वितथाभिनिवेशीचजायतेन्त्यासुयो
निषु ३४ पुरुषोनृतवादीचपिशुनःपुरुषस्तथा ॥ अनिबद्धप्र
लापीचमृगपक्षिषुजायते ३५ अदत्तादाननिरतःपरदारोप
सेवकः ॥ हिंसकश्चाविधानेनस्थावरेष्वभिजायते ३६ ॥

(पहिलेप्रश्नका उत्तर योगीश्वर कहते हैं) कि यद्यपि यह जीव ईश्वरांश है और ईश्वरका सत्यज्ञान आदि स्वरूप है तो भी मन वाणी और शरीरसे जो कर्म्म(अविद्याके समावेश वशहोकर मोह राग आदि भावद्वारा) किये गये हैं उनसे अत्यन्त (चाण्डाल) पक्षी और स्थावर (वृक्षआदियोगियों में) क्रमसे सैकड़ों जन्मतक प्राप्त होताहै ३१ और जीवोंकी अपने अपने शरीरमें जैसे अनन्तभाव होते हैं उसीकेअनुसार सब योनियोंमें देहियोंके स्वरूप भी होते हैं ३२ किसी कर्म का फल परलोक में किसी का यहांहीं और किसी का यहां वहां दोनों स्थल में होता है इसमें भी जैसा भाव (अभिलाषा)हो३३(पहिले कहाहै कि मनो वाक्काय कर्मोंसे चांडाल आदि योनि मिलती हैं उसी को बढ़ाके दिखाता है)जो दूसरेके द्रव्यके रहनेकी चिन्तासदा करता रहता औ अनिष्ट (ब्रह्महत्यादि हिंसा)काचिन्तन करताऔर झूठीबातमेंबारम्बारयहसंकल्पकरता है वहचाण्डालहोताहै३४जोपुरुष झूंठबोलता,चुगुलीखाता कठोर वचनबोलाकरता औरवेप्रसंगकीबात कहाकरताहैवह मृगऔरपक्षी की योनि में उत्पन्नहोताहै३५जो बिना दियेही दूसरेका धनलेता रहताहै और दूसरेकी स्त्रीमें आसक्तरहता औरयज्ञआदिकेविनाहीं जीवोंको माराकरताहै वह स्थावर योनिमें उत्पन्न होता है ३६ ॥

आत्मज्ञःशौचवान्दान्तस्तपस्वीविजितेन्द्रियः ॥ धर्म्म
कृद्वेदविद्यात्सात्विकोदेवयोनिताम् ३७ असत्कार्यरतोधी
आरम्भीविषयीचयः ॥ सराजसोमनुष्येषुमृतोजन्माधिग
च्छति ३८ निद्रालुःक्रूरकृल्लुब्धोनास्तिकोयाचकस्तथा ।
प्रमादवान्भिन्नवृत्तोभवतीर्यक्षुतामसः ३९ रजसातमसा
चैवंसमाविष्टोभ्रमन्निह ॥ भावैरनिष्टैःसंयुक्तःसंसारंप्रतिप
द्यते ४० मलिनोहियथादर्शोरूपालोकस्यनक्षमः ॥ तथा
विपक्ककरणंआत्मज्ञानस्यनक्षमः ४१ ॥

जो आत्मज्ञानी (विद्या और धनआदि के गर्व से रहित)होता है शौचवान् (बाह्य आभ्यन्तर की शुद्धि से युक्त) होता शान्ति रखनेवाला, तपस्वी होता,जितेन्द्रिय होता, धर्म करनेवाला और वेदों का अर्थ जानने वाला होता है वह सात्विक (सतोगुणवाला) देवयोनि को प्राप्त होता हैं ३७ जो असत्कार्य (नृत्यगीत आदि) में सदा रतरहता,व्यग्रचित्त रहता (कार्योंसे व्याकुल)और विषयों में लिपटा रहता हैं वह रजोगुणवाला मरने पर मनुष्यकी योनि में उत्पन्न होता है ३८ जो निद्रालु (अधिक सोनेवाला) जीवों को पीड़ादेनेवाला, लोभी, नास्तिक (धर्मनिन्दक) याचक (मंगन) प्रमादी (कार्य विवेक से रहित) और उलटे आचारसे युक्तहोता है वह तामस(तमोगुणवाला)तिर्यक्योनि पशुपक्षी आदियोनि, में उत्पन्न होता है ३९ इस प्रकार जो गुसा और तमोगुण से युक्त, होकर यहआत्मा इस संसार भ्रमतामें हुआ अनेक प्रकारके दुःख, देनेवाले भावसे युक्तहोता और पुनःपुनः शरीरधरताहै ४० अब पूर्वजन्मकी सुधि क्यों नहीं रखता इत्यादि (दूसरे प्रश्नका उत्तर देते हैं)जिसप्रकार मलीन दर्पण होतो उसमें रूपनहीं देखपड़ता इसीतरह आत्मा भी अविपक्ककरण(राग द्वेष आदि मत से आक्रान्त चित्त)होनेसे पूर्वजन्मकी बातोंके जानने में समर्थ नहीं होता ४१ ॥

कटुवेर्वारोयथापक्केमधुरःसन्रसोपिन ॥ प्राप्यतेह्यात्म
नितथानापक्ककरणेज्ञता ४२सर्व्वाश्रयांनिजेदेहेदेहेविन्दति
वेदनाम् ॥योगीमुक्तश्चसर्व्वासांयोनप्राप्नोतिवेदनाम् ४३
आकाशमेकंहियथाघटादिपुपृथग्भवेत् ॥ तमात्मैकोह्यनेक
श्चजलाधारेष्विवांशुमान् ४४ ब्रह्मखानिलतेजांसिजलम्भू
श्चेतिधातवः ॥ इमेलोकाएषचात्मातस्माच्चसचराचरम् ४५
मृद्दण्डचक्रसंयोगात्कुम्भकारोयथाघटम्॥करोतितृणमृत्का
ष्ठैर्गृहंवागृहकारकः ४६ ॥

जिसप्रकार कड़ुई (तीतकी) ककड़ी में विनापके उसका मधुर रसप्रकट नहीं होता इसीतरह जवतक आत्माके करण(इन्द्रिय) (अपकरागद्वेष आदि मलसे युक्त)रहतेहैं तवतक जाननेकी शक्ति नहीं होती ४२ जिसको देहका अभिमानलगाहै वह अपनी देह में सर्वाश्रय (आध्यात्मिक आधिदैविक और आधिभौतिक)वेदना को पाताहै और जो योगी तथा अहंकार आदिसेरहितहै वहदूसरोंकी वेदनाजानताहै और आप उनको नहीं पाता४३जिसप्रकार आकाश एकहीहै परन्तु घटआदि उपाधि भेदसे घटाकाश मठाकाश ऐसे भिन्न भिन्न नामसे कहाजाता अथवा जैसे सूर्य्य एकही है परन्तु जिस जिसप्रकारके पात्र में जलरक्खोगे उसमें वैसाही दीखपड़नेसे अनेकप्रकार का मालूम होताहै इसीप्रकार आत्माएं-कहीहै परन्तु अन्तष्करण उपाधिभेदसेअनेकजानपड़ताहै४४ब्रह्म (आत्मा)आकाश वायु,अग्नि,जल और भूमि ये सबधातु कहलाते हैं क्योंकि शरीरमें व्याप्तहोकर उसका धारणकरतेहैं औरइनआकाश आदि को लोक जड़ भी कहतेहैं और यह ज्ञानमय आत्मा कहलाताहै और इन दोनोंसे चराचर जगत् उत्पन्न होताहै ४५ जिसप्रकार मिट्टी, दंड और चक्रसे कुम्हार घड़ा वनाता तृण, मृत्तिका और काठसे गृहकारक (वढ़ई) घरवनाता है ४६ ॥

हेमपात्रमुपादायरूपंवाहेमकारकः ॥ निजलालासमायोगात्कोशंवाकोशकारकः ४७ करणान्येवमादायतासुतास्विहयोनिषु ॥ सृजत्यात्मानमात्माचसंभूयकरणानिच ४८ महाभूतानिसत्यानियथात्मापितथैवाहि ॥ कोन्यथैकेननेत्रेण दृष्टमन्येनपश्यति ४९ वाचंवाकोविजानातिपुनःसंश्रुत्यसंश्रुताम् ॥ अतीतार्थस्मृतिःकस्यकोवास्वप्नस्यकारकः ५० जातिरूपवयोवृत्तविद्यादिभिरहंकृतः ॥ शब्दादिविषयोद्योगंकर्म्मणामनसागिरा ५१ ससन्दिग्धमतिःकर्म्मफलमस्ति नवेत्तिवा ॥ विप्लुतःसिद्धमात्मानमसिद्धोपिहिमन्यते ५२ ॥

केवल सुवर्णसे सोनार विविधभांतिके रूपबनाताहै और जैसे अपनीलाला(लार)से मकड़ी कोश(जाला)तनतीहै ४७ इसीप्रकार इंद्रियोंको और पृथ्वी आदि महाभूतोंको लेकर आत्मा भिन्नभिन्न योनियोंमेंअपनेहीको (निजकर्मसेबँधाहुआ)उपजाताहै ४८ जिस प्रकार (पृथ्वी आदि)महाभूत सचहैं इसीढब आत्माभी सच है नहीं तो एक इन्द्रियसे जो वस्तु जानीगई उसको दूसरीसे यहवही चीजहै ऐसा कौनजानता ४९ और एकसमय सुनीहुईबातको फिरकर यहवही बातहै ऐसा कौनजानता,जो बातें बहुत दिनकी होगईहैं उनकीसुधि कौनरखता,जोबातें स्वप्नमें देखीं उनकास्मरण किसकोहोता (क्योंकिउससमय सबइन्द्रियोंका व्यापार विरुद्ध रहताहै) ५० जाति,रूप और विद्या आदिसे हमी युक्तहैं ऐसा अहंकार किसको होता और सुनना स्पर्शकरना आदि जो विषय के भोगहैं इनकेलिये अर्थ उद्यम कौनकरता (इसलिये बुद्धि और इन्द्रियों से अलग एकआत्मा है यह सिद्ध है) ५१ वह आत्मा अहंकार आदि से दूषितहोके सबकर्मों में फल है वा नहीं है ऐसा सन्देह बुद्धिमें लाता है और अपनेको कृतार्थ न हो तोभी कृतार्थ मानता है ५२ ॥

ममदारासुतामात्याअहमेषामितिस्थितिः ॥ हिताहिते
षुभावेषुविपरीतमतिःसदा ५३ज्ञेयज्ञेप्रकृतौचैवविकारेवाविशेषवान्॥अनाशकानलापातजलप्रपतनोद्यमी५४एवंवृत्तो
विनीतात्मावितथाभिनिवेशवान् ॥ कर्म्मणाद्वेषमोहाभ्यामिच्छयाचैवबध्यते ५५ आचार्य्योपासनंवेदशास्त्रार्थेषुविवेकिता ॥ तत्कर्म्मणामनुष्ठानंसंगःसद्भिर्गिरःशुभाः ५६ स्त्र्यालोकालम्भविगमःसर्वभूतात्मदर्शनम् ॥ त्यागःपरिग्रहाणांच
जीर्णकाषायधारणम् ५७ विषयेन्द्रियसंरोधस्तन्द्रालस्यविवर्जनम् ॥ शरीरपरिसंख्यानंप्रवृत्तिष्वघदर्शनम् ५८ ॥

उस (अहंकारादिदूषितआत्मा) को यह ममताहोतीहै कि ये हमारे स्त्री,पुत्र और भृत्यहैं और मैं इनकाहूं और हित तथाअनहित कार्योंमें सदाविपरीत मतिहोती है यहशास्त्रमर्यादाहै ५३ (ज्ञेयज्ञ)आत्माप्रकृति (आत्माके गुणकी साम्यावस्था)और विकार (अहंकारआदि)से विवेकरहितहोताहै और अनशन (अनटकरके खाना छोड़देना)अग्नि और जलमें प्रवेशकरना और ऊंचेस्थल से गिरके मरजाना इत्यादि बातोंमें उद्यमकरताहै ५४ऐसा अविनीतात्मा होकर झूठासंकल्प करताहुआ कर्म राग, द्वेष, मोह और इच्छासे बँधाजाताहै ५५ (मुक्तिका उपाय कहतेहैं) विद्याके लिये गुरुकी उपासना वेदांत और योगशास्त्र आदिके अर्थका विवेक रखना,उनमें जो कर्म कहे हैं उन्हें करना सज्जनोंसे संगकरना प्रियवचन बोलना ५६ स्त्रियोंका देखना और स्पर्शत्यागदेना,सब जीवोंको अपने समान जानना,परिग्रह (पुत्र स्त्री आदि)का त्याग करना,पुराना वस्त्र पहिनना ५७ विषयों से इन्द्रियों को रोकना तन्द्रा(जंभाई)और आलस्य(अनुत्साह)को छोड़नादेहमें अपवित्रता आदि दोषोंको समझाकरना सब प्रवृत्तियों (गमन आदि)में अघ (पाप)को देखना ५८ ॥

नीरजस्तमतासत्त्वशुद्धिर्निःस्पृहताशमः ॥ एतैरुपायैःसं
शुद्धःसत्त्वयोग्यमृतीभवेत्५९ तत्त्वस्मृतेरुपस्थानात्सत्त्वयो
गात्परिक्षयात्॥कर्म्मणांसन्निकर्षाच्चसतांयोगःप्रवर्तते ६०
शरीरसंक्षयेयस्यमनःसत्त्वस्थमीश्वरम् ॥ अविप्लुतमतिःस
म्यग्जातिसंस्मरतामियात् ६१ यथाहिभरतोवर्णैर्वर्णयत्या
त्मनस्तनुम् ॥ नानारूपाणिकुर्वाणस्तथात्माकर्म्मजास्तनूः
६२ कालकर्म्मात्मवीजानांदोषैर्म्मातुस्तथैवच ॥ गर्भस्य
वैकृतन्दृष्टमंगहीनादिजन्मनः ६३ अहंकारेणमनसागत्या
कर्म्मफलेनच ॥ शरीरेणचनात्मायम्मुक्तपूर्वःकथंचन ६४ ॥

रजोगुण और तमोगुणकापरित्याग(प्राणायाम आदिसे अन्तः
करणकी शुद्धि,विषयोंमें अभिलाप न रखना और शम (संयम)
रखना,इन सब उपायोंसे शुद्धहो केवल सतोगुण युक्त होकर ब्रह्म
की उपासना करे तो मुक्त होताहै ५९ तत्त्व(आत्मा)का सदास्मरण
होनेसे,सतोगुण (शुद्धि)के योगसे,कर्मोंके नाशहोनेसे और सज्ज-
नोंके संगसे आत्माकायोग होताहै ६० जिस अविप्लुतमति(अहं-
कार आदिसे अदूपित बुद्धि)का मन शरीरत्याग समयमें सत्त्वगुण
युक्त होकर ईश्वरमें लगताहै वह यदि परमगति न पावे तो पूर्व
जन्मोंका स्मरण तो उसे होताही है ६१ जिसप्रकार नट अनेक
रूप बनानेकेलिये भिन्न भिन्नप्रकार का वेपवनाताहै इसीप्रकार
अपने(शुभाशुभ)कर्मोंसे उत्पन्न शरीर आत्मा धारणकरताहै ६२
काल,कर्म और आत्मा बीज(अपनीउत्पत्ति का कारण पिताका
बीज)और माताके (रजके) दोप इन सब दोपोंसेभी गर्भकाविका-
रहोकर अंगहीन आदिका जन्महोताहै ६३ अहंकार,मन,संसारके
हेतु भूत जो दोपहैं धर्म अधर्मरूपी कर्मोंका फल और सूक्ष्म शरीर
इन सबसे युक्त आत्मा (मोक्षहोनेविना)कभी नहीं छूटता है ६४ ॥

वत्याधारःस्नेहयोगाद्यथादीपस्यसंस्थितिः ॥ विक्रिया
पिचदृष्टैवमकालेप्राणसंक्षयः६५ अनन्तारश्मयस्तस्यदीपव
द्यःस्थितोहृदि ॥ सितासिताःकर्बुनीलाःकपिलापीतलोहिताः
६६ ऊर्ध्वमेकःस्थितस्तेषांयोभित्त्वासूर्य्यमण्डलम् ॥ ब्रह्मलो
कमतिक्रम्यतेनयातिपरांगतिम् ६७ यदस्यान्यद्रश्मिशत
मूर्ध्वमेवव्यवस्थितम् ॥ तेनदेवशरीराणितैजसानिप्रपद्यते
६८येनैकरूपश्चाधस्ताद्रश्मयोस्यमृदुप्रभाः॥इहकर्म्मोपभो
गायतैःसंसरतिसोवशः ६९ वेदैःशास्त्रैःसविज्ञानैर्जन्मना
मरणेनच ॥ आर्त्यागत्यातथागत्यासत्येनह्यनृतेनच ७०
श्रेयसासुखदुःखाभ्यांकर्म्मभिश्चशुभाशुभैः ॥ निमित्तशाकु
नज्ञानग्रहसंयोगजैःफलैः ७१ ॥

जैसे एकहीदीपकमेंकई बत्तियां और तेलकेयोग्यसेजलतेदीपकी प्रबलवायुएकसाथही सबकोबुझादेताहै इसीप्रकारअकाल में भी मनुष्योंका प्राणत्याग होजाताहै६५ (मोक्षमार्गकहतेहैं)जो आत्मा दीपकेसदृश हृदयमेंस्थितहै उसकेश्वेत,काली,कबरी,नीली,कपि· ला,पीली और लालरंगकी असंख्यनाड़ियांहैं ६६ उनमें एकनाड़ी जो ऊपरकी और सूर्य्यमण्डलको भेदकर ब्रह्माके स्थानसे भी परे चलीगईहै उसीकेद्वारा परमगतिको प्राप्तहोताहै ६७ इस आत्माकी मुक्तिनाड़ीसे भिन्न और जो सैकड़ों ऊर्ध्वमुख नाड़ियांहैं उनसेदेव- ताओंकेधाम और शरीरप्राप्तहोतेहैं ६८ और जो उसकेनीचे कम ज्योतिवाली नाड़ियांहैं उनकेद्वारा इससंसारमें अपनेकर्म्मों का भोगकरनेके लिये जन्मपाताहै ६९ वेद,शास्त्र,अनुभव,जन्म, मरण पीड़ा,चलना,नचलना,सचाई झुठाई, ७० हितवस्तुका मिलना (परलोकके)सुख और दुःख अच्छे और बुरेकर्म,निमित्त (भूकम्प आदि)शकुनज्ञान (पक्षीकीचेष्टा जाननी)(सूर्य्य आदि)ग्रहोंके सं· योगसे जो फल उत्पन्नहो ७१ ॥

तारानक्षत्रसंचारैर्जागरैःस्वप्नजैरपि ॥ आकाशपवनज्यं तिर्जलभूतिमिरैस्तथा ७२ मन्वन्तरैर्युगप्राप्त्यामंत्रोपधिफलैरपि ॥ वित्तात्मानंवेद्यमानंकारणंजगतस्तथा ७३ अहंकारःस्मृतिर्मेधाद्वेपोबुद्धिःसुखन्धृतिः॥इन्द्रियान्तरसंचारइच्छाधारणजीविते ७४ स्वर्गःस्वप्नश्चभावानाम्प्रेरणम्मनसोंगतिः॥ निमेपश्चेतनायत्रआदानम्पांचभौतिकम् ७५ यत॰॰॰ निदृश्यन्तेलिंगानिपरमात्मनः ॥ तस्मादस्तिपरोदेहादात्मासर्वगईश्वरः ७६ बुद्धीन्द्रियाणिसार्थानिमनःकर्मेन्द्रियाणि च ॥ अहंकारश्चबुद्धिश्चपृथिव्यादीनिचैवहि ७७ ॥

तारा(अश्विनी आदि सत्ताईससे भिन्न)और नक्षत्र (अश्विनी आदि).इनकीगतिद्वारा शुभाशुभ फलजानना, जागते वा सोते समय जो भलाबुरादेखें,आकाश,वायु, ज्योति (सूर्य्य आदि) जल भूमि और अन्धकार जो ये जीवोंके उपभोग के लिये बने हैं ७२ मन्वंतर (मनुका बदलना) युगका बदलना और मंत्र तथा औ-षधियोंका फल इनसबबातोंसे (हेमुनिलोग) देहसे पृथक् आत्मा है और वह जगत्का कारण हैऐसा समझो ७३ अहंकार स्मरण मेधा (धारण) द्वेप,बुद्धि,सुख,धीर्य्य,इन्द्रियान्तर संचार(अर्थात्) एक इन्द्रिय से जानीहुई चीजका दूसरीसे स्मरण करना) इच्छा धारण, जीना, ७४ स्वर्ग, स्वप्न, इन्द्रियों की प्रेरणा,मनकी गति निमेप (पलक मारना) चेतना ,यत्न,पञ्च, भूतोंका धारण ७५ इतने सब परमात्माके चिह्न देखपड़ते हैं, इसलिये देहसे अलग कोई आत्मा जो सबका ईश्वर और सबमें व्याप्तहै यह बात सिद्ध भई ७६ (शब्द आदि) अपने विषयों सहित श्रोत्र आदि बुद्धि इन्द्रिय मन (वाणी आदि) कर्म्मेन्द्रिय अहंकार, बुद्दि पृथ्वी आदि पञ्च महाभूत ७७ ॥

अव्यक्तमात्मक्षेत्रज्ञःक्षेत्रस्यास्यनिगद्यते॥ ईश्वरःसर्वभूतस्थःसन्नसन्सदसच्चयः॥७८वुद्धेरुत्पत्तिरव्यक्तात्ततोऽहंकारसम्भवः॥तन्मात्रादीन्यहंकारादेकोत्तरगुणानिच७९शब्दस्पर्शश्चरूपंचरसोगन्धश्चतद्गुणाः॥योयस्मान्निःसृतश्चैषांसतस्मिन्नेवलीयते ८० यथात्मानंसृजत्यात्मातथावःकथितोमया॥ विपाकात्त्रिःप्रकाराणांकर्म्मणामीश्वरोपिसन् ८१ सत्त्वंरजस्तमश्चैवगुणास्तस्यैवकीर्त्तिताः॥ रजस्तमोभ्यामाविष्टश्चक्रवद्भ्राम्यतेह्यसौ ८२ अनादिरादिमांश्चैवसएवपुरुषःपरः॥ लिंगेन्द्रियग्राह्यरूपःसविकारउदाहृतः ८३ पितृयानोजवीथ्याश्चयदगस्त्यस्यचान्तरम्॥ तेनाग्निहोत्रिणो यातिस्वर्ग्गकामादिवम्प्रति॥ ८४

औरअव्यक्त(प्रकृति)येसव उससर्वव्यापीऔर ईश्वरसत्असत् रूपधारीके स्थानहैं और इनमेंरहकर वहआत्मा और क्षेत्रज्ञकहा जाता है७८अव्यक्त(सत्त्वरजस्तम इनतीनोंगुणोंकी साम्यावस्था) से वुद्धिकीउत्पत्तिहोती है उससेअहंकार और अहंकारसे तन्मात्रा आदि उत्पन्नहोतेहैं और इनमेंक्रमसे एक२गुण अधिकहोतेहैं ७९ शब्द,स्पर्श,रूप,रस और गन्धये सव उन(आकाशआदिपञ्चभूतों) के गुण हैं और जो जिससेनिकलताहै वहप्रलयसमय उसीमेंलीन होजाताहै८०ईश्वरभी होकर जिसतौर यहआत्मा मानस आदि तीनोंप्रकार के कर्म्मोंके विपाक होनेसे आत्माको (जीवको)सिरजताहै सो मैंने आपलोगोंसे कहा ८१ सत्त्व,रज और तम ये तीनों गुण भी उसीकेहैं और रजोगुण तमोगुणसेयुक्तहोकर चक्रकेसदृश वहीआत्मा इस संसारमें घूमताहै यह भी कहा ८२ वह अनादि परमपुरुष शरीरधारणरूपीविकारसे आदिमानहोता चिह्न और इन्द्रियोंसे देखनेयोग्य भी होताहै ८३ (अजवीथी (देवताओं का पथ) और अगस्त्यके ताराकेवीच पितृयानहै उसीमें होकर स्वर्ग की इच्छासे यज्ञकरनेवाले अग्निहोत्री लोग स्वर्गमें जातेहैं ८४॥

येचदानपराःसम्यगष्टाभिश्चगुणैर्युताः॥ तेपितेनैवमार्गे णसत्यव्रतपरायणाः ८५ तत्राष्टाशीतिसाहस्रामुनयोगृहमे धिनः॥ पुनरावर्तिनोबीजभूताधर्म्मप्रवर्त्तकाः ८६ सप्तर्षिना गवीथ्यन्तर्देवलोकंसमाश्रिताः॥तावन्तएवमुनयःसर्वारम्भ विवर्जिताः८७ तपसाब्रह्मचर्येणसंगत्यागेनमेधया॥तत्रग त्वावतिष्ठंतेयावदाभूतसंप्लवम्८८यतोवेदाःपुराणानिविद्यो पनिषदस्तथा॥ श्लोकाःसूत्राणिभाष्याणियच्चकिंचनवाङ्म यम्८९वेदानुवचनंयज्ञोब्रह्मचर्यंतपोदमः॥ श्रद्धोपवासःस्वा तंत्र्यमात्मनोज्ञानहेतवः ९० सह्याश्रमैर्विजिज्ञास्यःसमस्तै रेवमेवतु॥द्रष्टव्यस्त्वथमन्तव्यःश्रोतव्यश्चद्विजातिभिः९१॥

जो लोग दानी और अहंकारसे वर्जित होकर दया, क्षांति अनसूया) शौच, अनायास, मंगल, अकार्पण्य और अस्पृहा आत्माके इन आठों गुणोंसे युक्तहैं वे भी सत्यवादी उसी मार्गसे स्वर्ग को जातेहैं ८५ उसी पितृयानमें अट्ठासी हज़ार मुनि गृहस्थधर्मवाले वसतेहैं उनका यही धर्महै कि पुनःपुनः सृष्टिके आदिमें धर्म का उपदेश करके उसका बीज बोतेहैं ८६ सप्तर्षि और नागवीथी (ऐरावत पथ) के बीच देवलोक में रहनेवाले उतनेही (अट्ठासी हज़ार) मुनि सबकामकोछोड़ केवल ज्ञानमेंरत ८७ तपस्या, ब्रह्मचर्य संगत्याग और मेधा इनसब गुणोंसे युक्त महाप्रलय तक वे स्थितही रहतेहैं ८८ और उन्हीं से वेद, पुराण, अंगविद्या, उपनिषद्, श्लोक, सूत्र, भाष्य और जो कुछ शास्त्रहैं सब प्रचलित भये हैं ८९ वेदोंका पढ़ना, यज्ञकरना, ब्रह्मचर्य रखना तपस्या (इंद्रियों का दमन, धर्म में श्रद्धा, उपवास और स्वतंत्रता (निश्चिन्ताई) इन सबसे ज्ञान होताहै ९० द्विज लोग हरएक आश्रम में उस आत्मा की जिज्ञासा (खोज करें) उसके उपाय ये हैं उसी को सुनि मनन न करें और ध्यान करें ९१॥

यएनमेवम्विन्दन्तियेचारण्यकमाश्रिताः ॥ उपासतेद्वि
जाःसत्यंश्रद्धयापरयायुताः ९२ क्रमात्तेसम्भवन्त्यर्चिरहः
शुक्लन्तथोत्तरम् ॥ अयनन्देवलोकंचसवितारंसवैद्युतम् ९३
ततस्तान्पुरुषोभ्येत्यमानसोब्रह्मलौकिकान् ॥ करोतिपुन
रावृत्तिस्तेषामिहनविद्यते ९४ यज्ञेनतपसादानैर्येहिस्वर्ग्ग
जितोनराः ॥ धूमन्निशांकृष्णपक्षन्दक्षिणायनमेवच ९५
पितृलोकंचन्द्रमसंवायुंवृष्टिंजलंमहीम् ॥ क्रमात्तेसम्भवन्ती
हपुनरेवव्रजन्तिच ९६ एतद्योनविजानातिमार्ग्गद्वितयमा
त्मवान् ॥ दन्दशूकःपतंगोवाभवेत्कीटोथवाकृमिः ९७ ऊरु
स्थोत्तानचरणःसव्येन्यस्योत्तरंकरम् ॥ उत्तानंकिंचिदुन्नाम्य
मुखम्विष्टभ्यचोरसा ९८ ॥

जोद्विजबड़ीश्रद्धासे युक्तहोकर उसआत्माकीउपासना इसप्रकार अरण्य (निर्जनप्रदेश)में करतेहैं वे उसकोपातेहैं ९२ जिन्हें आत्मज्ञानहोताहै वे क्रमसे अग्नि, दिन, शुक्लपक्ष उत्तरायन, देवलोक, सूर्य्य और विद्युत (बिजली) इनसबमुक्तिकीराहदिखानेवाले देवताओं के लोकमेंजाकर उन्हींकासारूपपातेहैं ९३ फिरमानस(जिसकीउत्पत्ति मनकेसंकल्पसेहै) पुरुषआकर उनको ब्रह्मलोकमेंपहुंचाता है और वहांसे फिर उनकाजन्मनहींहोता क्योंकि(परमात्मामेंलीनहोजाते हैं) ९४ जो लोग यज्ञ तपस्या और दानदेनेसे स्वर्गमेंजाते वे अपने पुण्यकाफल भोगनेकेअनन्तर क्रमसेधूम, निशा, कृष्णपक्ष, दक्षिणायन ९५ पितृलोक, चन्द्रलोक, इनकेदेवताकालोकपातेहैं फिर वायु वृष्टि जलऔरभूमिकोप्राप्तहोकर(अन्नआदिकेवीर्यकारूपहो)संसार में आतेहैं ९६ जो इनदोनों पथोंके धर्मों का आचरण नहीं करता वहसांप पक्षी और कीड़े मकोड़ोंका जन्मपाताहै ९७ (उपासना का प्रकार कहतेहैं) पद्मासन बांध, बांयेंहाथकी हथेलीमें दहिना हाथ उत्तान रख मुंह कुछ ऊपरको उठा वा छाती से रोक ९८ ॥

निमीलिताक्षःसत्त्वस्थोदन्तैर्दन्तानसंस्पृशन् ॥ तालुस्थ चलाजिह्वश्चसंवृतास्यःसुनिश्चलः ९९ संनिरुध्येन्द्रियग्रामंनातिनीचोच्छ्रितासनः ॥ द्विगुणंत्रिगुणंवापिप्राणायामंपक्रमेत् २०० ततोध्येयःस्थितोयोसौहृदयेदीपवत्प्रभुः । धारयेत्तत्रचात्मानंधारणांधारयन्बुधः १ अंतर्द्धानंस्मृतिंकांतिर्दृष्टिःश्रोतज्ञतातथा ॥ निजंशरीरमुत्सृज्यपरकायप्रवेशनम् २ अर्थानांछंदतःसृष्टिर्योगसिद्धेर्हिलक्षणं ॥सिद्धेयोंगेत्यजन्देहममृतत्वायकल्पते ३ अथवाप्यभ्यसन्वेदंन्यस्तकर्मावनेवसन् ॥ अयाचिताशीमितभुक्परांसिद्धिमवाप्नुयात् ४ ॥

आंखमूंद)काम क्रोधआदिसे रहितहो,दांतोंसे दांत न मिलाकर, तालूमें जीभकोअचलरख, मुंहमूंद,निश्चलहो (देहनडोलावे) ९९ इन्द्रियोंको अपनेअपनेविषयोंसे अच्छीतरहरोक और न बहुत नीचे औरन ऊंचेआसनपरबैठकर दूना व तिगुना प्राणायामकरने का आरम्भकरे २०० (जबप्राणवायु अपनेवशमेंहोजावें) तो निश्चल दीपकेसमान जोप्रभुहृदयमें स्थितहै उसकाध्यानकरना और उस हृदयमें आत्मा धारणकरना और धारण (एकप्रकारका प्राणायाम)भी विज्ञलोगों को रखनी चाहिये १ अन्तर्द्धान (अदृश्य होजाना)स्मृति (अतीन्द्रिय वार्तोंका स्मरण) कांति(शोभा) दृष्टि (जो होगईहै व होनेवाली बात है उसका देखना) श्रोत्रज्ञता (बडीबड़ी दूरकी बातोंको सुनलेना) अपना शरीर छोड़कर दूसरे के शरीरमें प्रवेश करजाना २ और अपनी इच्छाही से जिसचीज को चाहे उत्पन्नकरले ये,सबयोग सिद्धिकेलक्षणहैं और जब योग सिद्धभया तो देहत्यागकरनेसे ब्रह्मरूप होजाताहै ३ अथवा (यज्ञ दानआदि नकरसकेतो) किसी वेदकाअभ्यास करते सबकाम छोड़ वनमेंरह, विनामांगे जो मिले उसे परमित भोजन करता रहै तो परमसिद्धि (मुक्ति) को पाता है ४ ॥

न्यायागतधनस्तत्त्व ज्ञाननिष्ठोतिथिप्रियः ॥ श्राद्धकृत्स
त्यवादीच गृहस्थोपिहिमुच्यते ५ महापातकजान्घोरान्
नरकान्प्राप्यदारुणान् ॥ कर्मक्षयात्प्रजायन्ते महापातकि
नस्त्विह ६ मृगश्वशूकरोष्ट्राणां ब्रह्महायोनिमृच्छति॥ खर
पुष्कसवेनानां सुरापोनात्रसंशयः ७ कृमिकीटपतंगत्वं
स्वर्णहारीसमाप्नुयात् ॥ तृणगुल्मलतात्वंचक्रमशोगुरुतल्प
गः ८ ब्रह्महाक्षयरोगीस्यात् सुरापःश्यावदन्तकः॥हेमहा
रीतुकुनखीदुश्चर्मागुरुतल्पगः ९ योयेनसम्वसत्येषांसतल्लिं
गोभिजायते॥अन्नहर्त्तामयावीस्यान्मूकोवागपहारकः१०॥

जिसने धर्म्मसे धन कमायाहो जो तत्त्वज्ञानमें निष्ठा (प्रीति) रखताहो, अतिथि (पूजनेका) प्यारकरे, श्राद्ध करनेवाला और सत्यवादी हो तो वह गृहस्थभी मुक्तहोता है ५ इत्यध्यात्मप्रकरणम् ॥ महापातक (ब्रह्महत्यादि पांच) से उत्पन्न घोर नरकों के भोगने से जब कर्म्म का क्षय होता तो महापातकी, लोग इस संसार में जिस जिस योनिको प्राप्तहोतेहैं सो ये हैं ६ मृगा (हिरन) कुत्ता, सुअर और ऊंटका जन्म ब्रह्मघाती पाताहै सुरापीने वाला गधा, पुष्कस (प्रतिलोम निषादसे शूद्रकी स्त्री में उत्पन्न) और वेन (वैदेहकसे आंवष्टी में उत्पन्न) का जन्म पाताहै ७ (स्वर्णहरी) सोना चोरानेवाला कृमि, कीट और पतंग काजन्म पाता और (गुरुपत्नीभोक्ता) तृण, गुल्म और लताका जन्म पाताहै ८ ब्रह्मघाती (मनुष्यका जन्मपावेतो) (राजयक्ष्मी) होता है, सुरापी कालेदांतवाला होता सोना चुरानेवाले के नखसड़ेहोते, गुरुतल्पगामी कुष्ठीहोता ९ और जो इनमें किसी के संग रहे वह भी वैसाही महापातकी कहलाताहै अन्नचुरावे तो उसे अजीर्ण रोगहोता, वाणीचुरावे (पोथी चुरावे व कपटसे पढ़े व विद्याजाने व बतावे) तो मूक (गूंगा) होताहै १० ॥

धान्यमिश्रोऽतिरिक्तांगः पिशुनःपूतिनासिकः ॥ तैलहत्तै
लपायीस्यात्पूतिवक्त्रस्तुसूचकः ११ परस्ययोषितंहत्वाब्रह्म
स्वमपहृत्यच ॥ अरण्येनिर्जलेदेशेभवतिब्रह्मराक्षसः १२
हीनजातौप्रजायेतपररत्नापहारकः ॥ पत्रशाकंशिखीहत्वा
गन्धान्छुच्छुन्दरीशुभान् १३ मूषकोधान्यहारीस्याद्यानमु
ष्ट्रःकपिःफलम्॥ जलंप्लवःपयःकाकोगृहकारीह्युपस्करम् १४
मधुदंशःफलंगृध्रोगांगोधाग्निंबकस्तथा ॥ श्वित्रीवस्त्रंश्वार
संतुचीरीलवणहारकः १५ ॥

धान्यसे मिलीहुई चीज चुरावे तो उसके कोई अधिकअंगहोता है (जैसे छःउंगली)चुगलीकरनेवाले की नासिका दुर्गन्धदेतीहै तेल चुरावे तो तैलपायी (कीटविशेषतेलिन) होताहै,सूचकहो(झूठसूठ किसीको दोषलगावे) तो उसका मुंह बसाताहै ११ जो दूसरेकी स्त्री अथवा ब्राह्मण की चीज अपहरणकरताहै वह जहांजल नहीं ऐसे वनमें ब्रह्मराक्षस होताहै १२ परायेकेरत्नोंको चुरावे तो हीन जाति (हेमकारनामपक्षी योनि)में उत्पन्नहोताहै जिसमें पत्तेहीहों ऐसा शाकचुरावे तो मयूरहोता और सुगन्धकी वस्तुचुरावे तो छछूंदरहोताहै १३ धानचुरावे तो मूसाहोता यान (सवारी)चुरावेतो ऊंट होता,फल चुरावेतो वानरहोता,जलचुरावे तो प्लव (शकटबिल नाम पक्षी) होता दूधचुरावे तो काकहोता और गृहस्थीकी चीजचुरावे (मूशल आदि)तो गृहकारी (बरटनामककीट)होताहै १४ मधु चुरावे तो दंश(डंस)होताहै मांसचुरावे तो गिद्धहोता गौ चुरावे तो गोहहोता,अग्नि चुरावे तो बगला,वस्त्र (कपड़ा) चुरावे तो कुष्ठीहोता,कोई (खट्टामीठा आदि)रस चुरावे तो कुत्ताहोता, और लवणचुरावे तो चीरी (ऊंचे स्वर से बोलनेवाला कीट) होताहै १५ ॥

प्रदर्शनार्थमेतत्तुमयोक्तंस्तेयकर्माणि॥द्रव्यप्रकाराहियथा
तथैवप्राणिजातयः १६ यथाकर्मफलंप्राप्य:तिर्यक्त्वंकालप
र्ययात् ॥ जायंतेलक्षणभ्रष्टादरिद्राःपुरुषाधमाः १७ ततो
निष्कल्मषीभूताःकुलेमहतिभोगिनः ॥ जायंतेविद्ययोपेता
धनधान्यसमन्विताः १८ विहितस्याननुष्ठानान्निन्दितस्यच
सेवनात् ॥ अनिग्रहाच्चेन्द्रियाणान्नरःपतनमृच्छति १९
तस्मात्तेनेहकर्त्तव्यम्प्रायश्चित्तम्विशुद्धये ॥ एवमस्यान्तरा
त्माचलोकश्चैवप्रसीदति २० प्रायश्चित्तमकुर्वाणाःपापेषु
निरतानराः ॥ अपश्चात्तापिनःकष्टान्नरकान्यांतिदारुणा
न् २१ तामिस्रंलोहशंकुंचमहानिरयशाल्मली ॥ रौरवं
कुड्मलम्पूतिमृत्तिकंकालसूत्रकम् २२ ॥

दिखलानेके लिये मैंनें इतनाही कहा है परन्तु जिसप्रकारकी चीजचुराये वैसीही जातिमें वह उत्पन्नहोताहै ऐसा समझ लेना चाहिये १६ अपनेकियेहुये कर्मके अनुसार नरकमें वास और पशु पक्षी आदि योनिकोपाकर काल क्रमसे कर्मफल क्षीण होने पर कुरूप और दरिद्री मनुष्यका जन्मपातेहैं १७ तब जो अच्छा कर्म करे तो पापरहितहोते और बड़े कुलमें जन्मपाकर नानाप्रकार के भोग,विद्या और धन धान्यसे युक्तहोतेहैं ॥ इतिकर्मविपाकप्रकरणम् १८ जो नित्य वा नैमित्तिक वस्तु विहित हैं उनके न करने से, निंदित वस्तुके करनेसे और इन्द्रियोंका संयम न रखनेसे मनुष्य पतितहोताहै १९ इसलिये वह पुरुष प्रायश्चित्तकरे इसके करनेसे वह शुद्धहोता और तब उसका अन्तरात्मा और यह लोक परलोक सब प्रसन्नहोतेहैं २० जो प्रायश्चित्त नहीं करते और सदा पापमें रत रहते और उसका पछतावा भी नहीं करते वे लोग दारुणकष्ट देनेवाले नरकमें जातेहैं २१ तामिस्र,लोहशंकु,महानिरय शाल्मलि, रौरव, कुड्मल, पुतिमृत्तिक, कालसूत्रक २२ ॥

संघातंलोहितोदंचसविपंसम्प्रपातनम् ॥ महानरकं
कोलंसंजीवनमहापथम् २३ अवीचिमंधतामिस्रंकुम्भीपा
कन्तथैवच ॥ असिपत्रवनंचैवतापनंचैकविंशकम् २४ म
हापातकजैर्घोरैरुपपातकजैस्तथा ॥ अन्वितायान्त्यचरि
तप्रायश्चित्तानराधमाः २५ प्रायश्चित्तैरपैत्येनोयदज्ञानकृ
तम्भवेत् ॥ कामतोऽव्यवहार्यस्तुवचनादिहजायते २६ ब्र
ह्महामद्यपःस्तेनस्तथैवगुरुतल्पगः ॥ एतेमहापातकिनोय
श्चतैःसहसम्वसेत् २७ गुरूणामभ्यधिक्षेपोवेदनिन्दासुहृ
द्वधः ॥ ब्रह्महत्यासमंज्ञेयमधीतस्यचनाशनम् २८ निषि
द्धभक्षणंजैह्म्यमुत्कर्षेचवचोऽनृतम् ॥ रजस्वलामुखास्वादः
सुरापानसमानितु २९ ॥

संघात,लोहितोदक,सविप,संप्रयासन,महानरक,काकोल संजीवन,महापथ २० अवीचि,अन्धतामिस्र, कुंभीपाक, और असिपत्र वन ये इक्कीस नरक हैं जैसा इनका नामहै तैसेही कष्ट इनमें होतेहैं २४ जो नरोंमें अधम महापातक और उपपातकसे युक्तहोते और प्रायश्चित्त नहीं करते वे इन नरकोंमें पड़ते हैं २५ जो पाप अज्ञानसे करे वह प्रायश्चित्त करनेसे दूरहोताहै और जो जानबूझ के कियाहो वह दूर नहीं होता परन्तु प्रायश्चित्त करने से धर्मशास्त्र के वचनोंके द्वारा लोकमें व्यवहारके योग्य होजाताहै २६ ब्राह्मण को मारनेवाला, मदिरा पीनेवाला, ब्राह्मणका सोना चुरानेवाला, गुरूकी स्त्रीमें गमनकरनेवाला और जो इनके संगमें रहे ये पांच महापातकी कहेजातेहैं २७ गुरूकी झूठीनिंन्दा,वेदकी निन्दा,मित्रका वधकरना और पढ़ेहुये शास्त्रको भुलायादेना ये चारों ब्रह्महत्याके समान हैं २८ (लशुनआदि)निषिद्ध चीजों का खाना, कुटिलाई करनी,वड़ाई के लिये झूठबात बोलना और रजस्वला स्त्री का मुंह चूमना ये सब सुरापान के तुल्य हैं २९ ॥

अश्वरत्नमनुष्यस्त्रीभूधेनुहरणन्तथा॥ निक्षेपस्यचसर्वं हेसुवर्णस्तेयसम्मितम् ३० सखिभार्याकुमारीपुस्वयोनि वन्त्यजासुच॥सगोत्रासुसुतस्त्रीषुगुरुतल्पसमंस्मृतम् ३१ पेतुःस्वसारम्मातुश्चमातुलानींस्नुपामपि ॥मातुःसपत्नींभ गिनीमाचार्यतनयांतथा ३२ आचार्यपत्नींस्वसुतांगच्छंस्तु ुरुतल्पगः॥लिंगंछित्वावधस्तत्रसकामायाःस्त्रियाअपि३३ ोवधोव्रात्यतास्तेयमृणानांचानपाक्रिया ॥ अनाहिताग्नि ापण्यविक्रयःपरिवेदनम् ३४ भृतादध्ययनादानम्भृत ाध्यापनन्तथा ॥ पारदार्यंपारिवित्यम्वार्धुष्यंलवणक्रि ां ३५ ॥

घोड़ा,रत्न,मनुष्य,स्त्री,भूमि गौ और थाती रक्खीहुई चीजका अपहरणकरना ये सब सुवर्णस्तेयके समानहैं ३० मित्रकी स्त्री उत्तमजातिकीकारीकन्या,वहिन,चाण्डाली,अपनेगोत्रकी स्त्री और पुत्रकीवधू इनसबमें गमनकरना गुरुतल्पगमनके तुल्यहैं ३१ फूफी, माता,मामी,पतोहू,सवतीलीमाता,वहिन, गुरूकीलड़की ३२ गुरू की स्त्री और अपनीलड़की इनमेंसे किसीकागमनकरे तो गुरुतल्प-गहोताहै राजा उसका लिंगकटवाकर मारडाले और जो ये स्त्री भी कामवशहोके इन्हीं पुरुषोंके पास जावें तो उन्हें भी मरवाडाले३३ गौकावध करना, जिसको जिससमय में कहा है उससमयतक यज्ञोपवीत न देना चोरीकरना ऋणका न देना, अधिकारी होकर अग्निहोत्र न करना, जो वेचनेयोग्य चीज नहीं है उनका वेचना, जेठेभाई के रहतेही छोटेकाव्याह करना ३४ नौकर से पढ़ना, नौकरहोकर पढ़ाना, दूसरेकी स्त्रीकासेवन,छोटेका व्याह हो बड़े का क्वारा बैठाही रहना, व्याजलेने की जीविका करना नोनघनाना ३५ ॥

स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधोनिंदितार्थोपजीवनम् ॥ नास्तिक्य
म्व्रतलोपश्चसुतानांचैवविक्रयः ३६ धान्यकुप्यपशुस्तेयम
याज्यानांचयाजनम् ॥ पितृमातृसुतत्यागस्तडागारामवि
क्रयः ३७ कन्यासंदूषणंचैवपरिविंदकयाजनम् ॥ कन्याप्र
दानंतस्यैवकौटिल्यम्व्रतलोपनम् ३८ आत्मनार्थेक्रियारंभो
मद्यपस्त्रीनिषेवणम् ॥ स्वाध्यायाग्निसुतत्यागोबान्धवत्या
गएवंच ३९ इन्धनार्थंद्रुमच्छेदःस्त्रीहिंसौषधजीवनम् ॥ हिं
स्त्रयंत्रविधानंचव्यसनान्यात्मविक्रयः ४० शूद्रप्रेष्यंहीनस
ख्यंहीनयोनिनिषेवणम् ॥ तथैवानाश्रमेवासःपरान्नपरि
पुष्टता ४१ ॥

स्त्री,शूद्र,वैश्य और क्षत्रियकावधकरना,निन्दित वस्तुसे जीवि-
का करनी,नास्तिकताकरनी,ब्रह्मचारीहोकर स्त्रीगमनकरना, अपने
लड़कोंकावेंचना ३६ धान्य,पीतल सीसा आदि द्रव्य और पशुकी
चोरीकरनी,यज्ञके योग्य जो नहीं (शूद्रआदि) उनको यज्ञकराना,
पिता,माता और लड़का इनका त्यागकरना तालाव और वगीचे
को वेंचना ३७ कन्याका दूषण (अंगुलीआदि से योनिविदारण)
करना, वड़े भाई के रहते जो पहिले अपनाव्याहकरे उसको यज्ञ
कराना उसीको कन्यादान देना,कुटिलता करनी,व्रतछोड़ना ३८
अपनेही लिये रोटीवनाना, मदिरापीनेवाली स्त्रीका सेवन, वेदके
पढ़ने अग्निहोत्र और लड़केको त्यागना, वान्धव (चाचा मामा
आदि) का त्यागकरना ३९ ईंधनकेलिये पेड़काटना, स्त्रीके द्वारा
जीवनकरना, किसीजीवके वधसे व औषधसे जीवनकरना, हिंसा
करनेवाले यंत्रोंको वनाना व्यसन (मृगया आदि १८) अपने
को वेंचना ४० शूद्रकी सेवाकरनी, हीनजाति से मित्रताकरना,
नीचजातिकी स्त्रीका भोग किसी आश्रम में न रहना, दूसरेकी
रोटीखाकर जीना ४१ ॥

असच्छास्त्राधिगमनमाकरेष्वधिकारिता ॥ भार्यायावि
क्रयश्चैषामेकैकमुपपातकम् ४२ शिरःकपालीध्वजवान्भि
क्षाशीकर्म्मवेदयन् ॥ ब्रह्महाद्वादशाब्दानिमितभुक्शुद्धिमा
प्नुयात् ४३ ब्राह्मणस्यपरित्राणाद्गवांद्वादशकस्यच ॥ तथा
श्वमेधावभृथस्नानाद्वाशुद्धिमाप्नुयात् ४४ दीर्घतीव्रामयग्र
स्तम्ब्राह्मणंगामथापिवा॥दृष्ट्वापथिनिरातंकंकृत्वावाब्रह्म
हाशुचिः ४५ आनीयविप्रसर्वस्वंहृतंघातितएववा ॥ तन्नि
मित्तक्षतःशस्त्रैर्जीवन्नपिविशुद्ध्यति ४६ ॥

असत् शास्त्र (नास्तिक आदि के शास्त्रों को) पढ़ना, जहां सोना चांदी आदि निकलें ऐसी खानिमे अधिकारपाना और अपनीस्त्री का बेचना इनमें से हरएक उपपातक कहलातेहैं ४२ ब्राह्मणका घातकरे तो उसी अपनेमारेहुये ब्राह्मणकी खोपड़ी हाथमें लेकर और एक दूसरी खोपड़ीको बांसमें बांधकर ध्वजाबनाकर अपना कियाहुआ कर्म सबको सुनाकर भीखमांगमांगके थोड़ाथोड़ाखावे इसप्रकार बारहवर्ष व्रतकरे तो ब्रह्महत्यासे छूटताहै ४३ किसी ब्राह्मणका प्राणबचादेवे अथवा बारहगौका प्राणबचावे वा किसी के अश्वमेध यज्ञमें अवभृथनाम स्नानकरे तो उसीसमय ब्रह्महत्यासे छूटजाताहै ४४ चिरकालसे किसीरोगकरके ग्रस्त वा बड़े दुःखदायीकुष्ट आदि रोगसेपीड़ित ब्राह्मण अथवा गौको राहमें देखे और उसकी सेवाकरके उसेचंगाकरे तोभी ब्रह्महत्यासे छूट जाताहै ४५ जो कोई ब्राह्मणका सर्वस्वधनहरताहो उससेलड़ाई करके ब्राह्मणका धनबचावे और घायलहोकर जीवे तो ब्रह्म हत्या से छूटजाता है यदि मरजाय तोभी ब्रह्महत्या से दूर होजाताहै ४६॥

लोमभ्यःस्वाहेत्येवंहिलोमप्रभृतिवैतनुम् ॥ मज्जांतां
हुयाद्वापिमंत्रैरेभिर्यथाक्रमम् ४७ संग्रामेवाहतोलक्ष्यभूत
शुद्धिमवाप्नुयात् ॥ मृतकल्पःप्रहारार्तोजीवन्नपिविशुद्ध
ति ४८ अरण्येनियतोजप्त्वात्रिवैवेदस्यसंहितां ॥ शुद्धयं
वामिताशीत्वाप्रतिस्रोतःसरस्वतीम् ४९ पात्रेधनंवापर्याप्त
दत्वाशुद्धिमवाप्नुयात् ॥ अदातुश्चविशुद्धयर्थमिष्टिवैश्वान
रीस्मृता ५० यागस्थक्षत्रविड्घातीचरेद्ब्रह्महणिव्रतम् ॥ ग
र्भहाचयथावर्णंतथात्रेयीनिषूदकः ५१ चरेद्व्रतमहत्वापिघात
र्थंचेत्समागतः॥ द्विगुणंसवनस्थेतुब्राह्मणेव्रतमादिशेत् ५२।

अथवा(लोमभ्यःस्वाहा)इत्यादिमंत्रोंसेअपनेशरीरके(रोम,खा
ल,रक्त, मांस,मेद,स्नायु,हड्डी औरमज्जा)इनसबको अग्निमेंहवन
करदे तोब्रह्महत्यासे छूटजाताहै४७ धनुर्विद्याजाननेवाले जहां
लड़तेहों उनकेबीचमें खड़ाहोवे यदि उनकेबाणोंसे मरजाय तो
शुद्धहोता और बहुतघायलहोके जीताबचे तोभी ब्रह्महत्यासेशुद्ध
होताहै४८अपनेभोजनका संयमकर(थोड़ाभोजनकरे)वनमेंजास-
म्पूर्ण वेदकोतीनवारपाठकरे तोभी शुद्धहोताहै अथवा मिताशी
होके(थोड़ाथोड़ाखाताहुआ)सरस्वतीनदीके तीरतीरपश्चिमसमुद्र
नजावे तो शुद्धहोताहै ४९ अथवा सुपात्रब्राह्मणको उसके जीवन
भरकेलिये यथेष्टद्रव्यदेदेवे तोभी शुद्धहोताहै५०जो यज्ञकरतेहुये
क्षत्रिय वा वैश्यकोमारे तो ब्रह्महत्याकाव्रतकरे जिसवर्णके गर्भका
पातकरे उसवर्णकेमारनेमें जो प्रायश्चित्तकहा है सोकरे और रज-
स्वला स्त्रीकोमारे तोभी जिसवर्णकी स्त्रीहो उसीवर्णकी हत्याका
प्रायश्चित्तकरे५१मारनेकेलियेआवे और किसी कारणसे न मारे
तोभी वह उतनाहीं प्रायश्चित्तकरे कि जो मारनेमेंहोता है यदि य-
ज्ञकरतेहुये ब्राह्मणकोमारे तो दूनाप्रायश्चित्त करनाचाहिये ॥ इति
ब्रह्महत्याप्रायश्चित्तप्रकरणम् ५२ ॥

सुरांबुघृतगोमूत्रपयसामग्निसन्निभम् ॥ सुरापोन्यतम
म्पीत्वामरणाच्छुद्धिमृच्छति ५३ बालवासाजटीवापिब्रह्मह
त्याव्रतंचरेत् ॥ पिण्याकंवाकणान्वापिभक्षयेत्त्रिसमानिशि
५४ अज्ञानात्तुसुरांपीत्वारेतोविण्मूत्रमेवच ॥ पुनःसंस्कारम
र्हंतित्रयोवर्णाद्विजातयः ५५ पतिलोकंनसायातिब्राह्मणीया
सुरांपिबेत् ॥ इहैवसाशुनीगृध्रीशूकरीचोपजायते ५६ ब्राह्म
णःस्वर्णहारीतुराज्ञेमुशलमर्पयेत् ॥स्वकर्मख्यापयंस्तेनहतो
मुक्तोपिवाशुचिः ५७ अनिवेद्यनृपेशुद्ध्येत्सुरापव्रतमाचरन्॥
आत्मतुल्यंसुवर्णंवादद्याद्वापिप्रतुष्टिकृत् ५८ ॥

यदि कोई सुरापीवे तो मदिरा,जल,घी,गौकामूत्र और दूध इन मेंसे किसी एकको अग्निकेसमान तपाकरपीवे और उसीसेमरजाय तो शुद्धिहोतीहै ५३ कंबलपहिनकर और जटाबढ़ाकर ब्रह्महत्या का व्रतकरे अथवा तीन वर्षतक रात्रिकेसमय एकहीवारपिण्याक (पीना)व चावलकेकण(कन्ना)भोजनकरे तोभी शुद्धहोताहै ५४ यदि विनाजाने सुरा,रेत विष्ठा अथवा मूतपीले वे तो तीनों द्विज वर्णोंका फिरसे संस्कार करनाचाहिये ५५ जो ब्राह्मणी स्त्री सुरापीवे तो वह पतिलोकको नहीं प्राप्तहोती यहांही कुत्ती,शूकरी और गिद्धपक्षीकी योनिसें उत्पन्नहोतीहै ५६ इतिसुरापानप्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ ब्राह्मणका सोनाचुरानेवाला अपनाकर्मकहके राजाको लोहेकामूशलदे फिर राजाचाहे उसमूशलसे उसकावधकरे व छोड़दे दोनोंप्रकार वह शुद्धहोजाताहै ५७ राजासे निवेदन न करे तो सुरापीका व्रतकरनेसे शुद्धहोताहै अथवा अपनेबराबर या जिनसे ब्राह्मण संतुष्टहो इतना सोनादे तोभी शुद्धहोताहै इतिस्वर्णस्तेयप्रायश्चित्तप्रकरणम् ५८ ॥

तप्तेयःशयनेसार्धमायस्यायोपितास्वपेत् ॥ गृहीत्वोत्कृत्यवृषणौनैर्ऋत्यांचोत्सृजेत्तनुम् ५९ प्राजापत्यंचरेत्कृच्छ्रंसमावागुरुतल्पगः ॥ चान्द्रायणंवात्रीन्मासानभ्यसेद्वेदसंहिताम् ६० एभिस्तुसंवसेद्योवैवत्सरंसोपितत्समः ॥ कन्यांसमुद्वहेदेषांसोपवासामकिंचनाम् ६१ चान्द्रायणंचरेत्सर्वानवकृष्टान्निहन्यत् ॥ शूद्रोधिकारहीनोपिकालेनानेनशुद्ध्यति ६२ पंचगव्यम्पिवेद्गोघ्नोमासमासीतसंयमः ॥ गोष्ठेशयोगोनुगामीगोप्रदानेनशुद्ध्यति ६३ ॥

जो गुरुपत्नीमें गमनकरे वह लोहेकीशय्या और स्त्रीवनाकेउसे इतनातपावे कि लालहोजाय तब उसी स्त्री के संग सोवे अथवा अपनाअंड और लिंगकाटके अंगुलीमें लियेहुये नैर्ऋत्यदिशामें चलतचेलते प्राणत्यागदे तो शुद्धहोताहै५९अथवा तीनवर्षतककृच्छ्र प्राजापत्यनाम व्रतकरे(इनसबव्रतोंको आगेकहेंगे) व तीनमहीनेतक वेदसंहिताका अभ्यासकरताहुआ चान्द्रायणव्रतकरे तो भी शुद्धहोताहै६० इतिगुरुतल्पगप्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ इनकेसाथ जो एकवर्षरहै वह भी उन्हींके समान होजाताहै इन लोगोंकी कन्याको उपवासकराके और एकसूतभी पिताकाउसकेशरीर पर नहो ऐसी रीतिसे व्याहले तो कुछ दोष नहीं है ६१ ॥ इतिसंसर्गप्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ किसी नीचजाति (सूत,मागध आदि)मनुष्यको मारे तो चान्द्रायणव्रतकरे यद्यपि इनसब व्रतोंकेकरनेमें जपभीकरनाहोताहै और उसमें शूद्रका अधिकार नहींहैपरन्तु तो भी वह इतनेकालके व्रतहीसे शुद्धहोजाताहै ६२ जो गौको मारे वह पञ्चगव्य (गौकामूत,गोवर,दूध,दही,घी और कुशाका जल) पीकरमहनिाभरतक इंद्रियोंकासंयमकरकेगौकीशालामेंसोवेगौके पीछेपीछे दिनमें घूमाकरे-महीनाके अन्तमें एकगोदानकरे तो शुद्धहोताहै ६३ ॥

कृच्छ्रञ्चैवातिकृच्छ्रञ्चचरेद्वापिसमाहितः ॥ दद्यात्त्रिरात्रंचोपोष्यवृषभैकादशास्तुगाः ६४ उपपातकशुद्धिःस्यादेवंचान्द्रायणेनवा॥पयसावापिमासेनपराकेणाथवापुनः६५ ऋषभैकसहस्रागादद्यात्क्षत्रवधेपुमान् ॥ ब्रह्महत्याव्रतंवापिवत्सरत्रितयंचरेत् ६६ वैश्यहाब्दंचरेदेतद्दद्यादेकशतंगवाम् ॥ षण्मासाच्छूद्रहोप्येतद्धेनूर्दद्याद्दशाथवा ६७ दुर्वृत्तब्रह्मविट्क्षत्रशूद्रयोषाःप्रमाप्यतु ॥ दृतिन्धनुर्वस्तमविंक्रमाद्दद्याद्विशुद्धये ६८ अप्रदुष्टांस्त्रियंहत्वाशूद्रहत्याव्रतंचरेत् ॥ अस्थिमतांसहस्रंतुतथानस्थिमतामनः ६९ ॥

मासभर समय से कृच्छ्र व्रतकरे व अतिकृच्छ्रकरे अथवा तीन दिन उपवास करके दश गौ और एक बैल दान देवे तो शुद्ध हो जाता है ६४ ॥ इतिगोवधप्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ दूसरे उपपातकों की भी शुद्धि इसी गोवध प्रायश्चित्त से होती है अथवा चान्द्रायण व्रत से व महीना भर दूधपीने से व पराक व्रत करने से भी होती है ६५ यदि कोई पुरुष क्षत्रिय को मारे तो एक बैल समेत हज़ार गौ दान देने से व तीनवर्ष तक ब्रह्महत्या का व्रत करने से शुद्ध होता है ६६ वैश्यको मारे तो एकबर्ष ब्रहत्या व्रतकरे अथवा सौ गोदान दे तो शुद्ध होता है और शूद्र का वध करे तो छः महीने ब्रह्महत्या व्रतकरे व दश गौ और एकबैल दान देकर शुद्ध होता है ६७ यदि ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय और शूद्र की व्यभिचारिणी स्त्रियों को मारे तो अपनी शुद्धि के लिये क्रम से दृति (चरसा व मोटधनुष, वस्त्र) और भेड़ का दानदेवे ६८ अदुष्टा (सुशीला) स्त्री को मारे तो शूद्रहत्याका व्रत करे और हज़ार हड्डीवाले तथा एक गाड़ी का बोझ वे हड्डीवाले जीव मारे तो एक शूद्रहत्याका व्रतकरे ६९ ॥

मार्जारगोधानकुलमण्डूकाश्चपतत्रिणः ॥ हत्वात्र्यहं
पिबेत्क्षीरंकृच्छ्रंवापादिकंचरेत् ७० गजेनीलवृषाःपंचशुके
त्सोद्विहायनः ॥ खराजमेषेषुवृषोदेयःक्रौंचेत्रिहायनः ७१
हंसश्येनकपिक्रव्याज्जलस्थलशिखंडिनः ॥ भासंहत्वाच
द्याद्गामक्रव्यादस्तुवत्सिकाम् ७२ उरगेष्वायसोदण्डोपण्ड
केत्रपुसीसकम् ॥ कोलेघृतघटोदेयउष्ट्रेगुंजाहयेंशुकम् ७३
तित्तिरौतुतिलद्रोणंगजादीनामशक्नुवन् ॥ दानन्दातुंचरेत्कृ
च्छ्रमेकैकस्यविशुद्धये ७४ फलपुष्पान्नरसजसत्वघातेघृत
शनम् ॥ किंचित्सास्थिमतान्देयम्प्राणायामस्त्वनास्थिके ७५

बिल्ली, गोह, नेउरा, मेढ़क, कुत्ता, और चिड़िया इन्हें मारे तो तीन दिनतक दूधपीकेरहे व पादकृच्छ्र व्रतकरे तो शुद्ध होता है ७० हाथीको मारे तो पांच नीलवृषभदानदे शुक (तोता) मारे तो दोवर्षका बछरादानदे गदहा, बकरा, मेढ़ा और क्रौंचपक्षी को मारे तो तीन वर्षका बछरा दानदेवे ७१ हंस, बाज, वानर क्रव्याद (कच्चामांस खानेवाले गिद्धव्य घ्रशृगालआदि) जलचर और स्थलचर पक्षी मयूर और भास (पक्षिविशेष) पक्षीको मारे तो एक गौ दानदे क्रव्याद छोड़ औरोंको मारे तो बछिया दानदे ७२ सांपको मारे तो लोहेकादण्डदानकरे पण्डुक (नपुंसक व जलमेंरहनेवाला सर्पडेड़हा) मारे तो पीतल और सीसादानकरे, कोल (शूकर) को मारे तो घीका घड़ादेवे ऊंटको मारे तो गुंजा (घुंघची) दान दे घोड़ामारे तो वस्त्र दानकरे ७३ तित्तिरमारे तो एकद्रोना तिल दानकरना और हाथी आदि के मारनेमें जो दानदेना कहाहै वह न करसके तो हरएक के बदले एकएककृच्छ्रव्रतकरे ७४ फल फूल अनाज और रस (गुड़आदि) में जो जीवपड़जातेहैं इनकोमारे तो घीभोजनकरे और हड्डीवाले जीवकोमारे तो थोड़ासादानदे बिना हड्डीका हो तो एकप्राणायाम करनेसे शुद्धहोताहै ७५ ॥

वृक्षगुल्मलतावीरुच्छेदनेजप्यमृक्शतम् ॥ स्यादौषधिवृथाछेदेक्षीराशीगोनुगोदिनम् ७६ पुंश्चलीवानरखरैर्दष्टश्चोष्ट्रादिवायसैः ॥ प्राणायामंजलेकृत्वाघृतम्प्राश्यविशुद्ध्यति ७७ यन्मेद्यरेतइत्याभ्यांस्कन्नंरेतोभिमन्त्रयेत् ॥ स्तनान्तरम्भ्रुवोर्मध्येतेनानामिकयास्पृशेत् ७८ मयितेजइतिच्छायांस्वान्दृष्ट्वाम्बुगतांजपेत् ॥ सावित्रीमशुचौदृष्टेचापल्येचानृतेपिच ७९ अवकीर्णीभवेद्गत्वाब्रह्मचारीतुयोषितम् ॥ गर्दभम्पशुमालभ्यनैर्ऋतंसविशुद्ध्यति ८० भैक्ष्याग्निकार्येत्यक्त्वातुसप्तरात्रमनातुरः ॥ कामावकीर्णइत्याभ्यांजुहुयादाहुतिद्वयम् ८१ ॥

यदिकोईप्रयोजन(आम्रआदि)वृक्ष,गुल्म,लताऔरवीरुध(येसवे व्यवहाराध्यायमेंकहआयेहैं)इनसबोंकोकाटे तो सौवारकोईगायत्री आदि ऋचाजपनेसे शुद्धहोताहै और औषधियोंको वेप्रयोजनकाटे तो दिनभर दूधपीकेरहे औरगौकीसेवाकरे इतनाविशेषहै ७६ व्यभिचारिणीस्त्री, वानर,गदहा,ऊंट और कौआआदि दांतसेकाटलेवें तो जलमेंखड़ाहोकेप्राणायामकरे और उसदिन घीखाकेरहे तो शुद्ध होताहै७७जिसकावीर्य स्वप्नआदिमेंअपनेआपगिरपड़ेतोवह(यन्मेऽद्यरेतः)इत्यादि दोनोंमंत्रोंसे उसका अभिमन्त्रणकरे और उसकी छातीकेमध्य और भौंहकेवीच अनामिकाअंगुलीसेछुआवे७८अपनी परछांहींपीछेआतीदेखेतो (मयितेजः)इसमंत्रकोजपे औरकिसी अपवित्र मनुष्यकोदेखेव चंचलता करे अथवा झूंठवोले तो गायत्री का जपकरे ७६ यदि कोईब्रह्मचारी स्त्रीकेपासजाय तो वह अवकीर्णी कहलाताहै औरगदहाकोमारकेउसकेमांससे निर्ऋतिदेवताकायज्ञ करे तो शुद्धहोताहै ८० अनातुररहे (किसीकार्यसेव्याकुलनहो) और सात दिनतक भिक्षा और अग्निहोत्र छोड़ दे तो वह ब्रह्मचारी (कामावकीर्ण) इत्यादि दो मंत्रोंसे दोआहुति हवन करके ८१ ॥

उपस्थानन्ततःकुर्य्यात्समासिंचत्वनेनतु ॥ मधुमांस
शनेकार्यःकृच्छ्ःशेपव्रतानिच ८२ प्रतिकूलंगुरोःकृत्वाप्रस
दैवविशुद्ध्यति ॥ कृच्छ्त्रयंगुरुःकुर्य्यान्म्रियतेप्रहितोयदि
८३ क्रियमाणोपकारेतुमृतेविप्रेनपातकम् ॥ विपाकेगो
वृपाणाञ्चभेपजाग्निक्रियासुच ८४ मिथ्याभिशंसिनोदोपो
द्विःसमोभूतवादिनः ॥ मिथ्याभिशस्तदोपञ्चसमादत्तेमृप
वदन् ८५ महापापोपपापाभ्यांयोभिशंसेन्मृपापरम् ॥ अ
ब्भक्षोमासमासीतसजापीनियतेन्द्रियः ८६ ॥

समासिंचतु, इसमन्त्र से अग्निका उपस्थानकरे जो ब्रह्मचारी मधु व मांसखालेवे तो कृच्छ्रव्रत उसके प्रायश्चित्त के लिये करे और फिर जो उसके व्रत शेपरहेहों सो समाप्त करे ८२ गुरु की इच्छा के विरुद्ध कोई काम ब्रह्मचारी करे तो गुरूको प्रसन्न करानेही से शुद्ध होता है और जो गुरू किसी ऐसे काम को भेजे कि ब्रह्मचारी मरजाय तो गुरू तीनकृच्छ्र व्रतकरे ८३ यदि कोई औपधिदेने व अन्न खिलाने आदि से ब्राह्मण और गौका उपकारकर रहाहो संयोग से वह गौ व ब्राह्मणमरजाय तो औपधिआदि हित वस्तु देनेवाले को पाप नहींलगता ८४ जो किसी को मिथ्याही दोप लगावे तो उसको दूना दोप लगता है और सत्य भी किसी का दोपहो उस को वे पूछे आपसे आप कहता फिरे तो उतनाहीं दोप उसको लगता है जो झूठमूठ दोपलगाताहै वह केवल दूना दोपही नहीं पाता किन्तु जिसको दोप लगाता है उसने जो पाप कियेहों सब उसको लगते हैं ८५ महापातक और उपपातकका दोप जो झूठ मूठ दूसरेको लगावे वह इन्द्रियों का संयमकरके महीने भरतक जप करतारहे और केवल जल पीके रहै अन्न न खावे ८६ ॥

अभिशस्तोमृषाकृच्छ्रञ्चरेदाग्नेयमेवच ॥ निर्वपेत्तुपुरो
डाशंवायव्यम्पशुमेववा ८७ अनियुक्तोभ्रातृजायांगच्छं
श्चान्द्रायणंचरेत् ॥ त्रिरात्रान्तेघृतम्प्राश्यगतोदक्याविशु
ध्यति ८८ त्रीन्कृच्छ्रानाचरेद्व्रात्ययाजकोभिचरन्नपि ॥
वेदप्लावीयवान्यब्दन्त्यक्त्वाचशरणागतम् ८९ गोष्ठेवस
न्ब्रह्मचारी मासमेकम्पयोव्रतः ॥ गायत्रीजाप्यनिरतःशु
ध्यतेसत्प्रतिग्रहात् ९० प्राणायामीजलेस्नात्वाखरया
नोष्ट्रयानगः ॥ नग्नःस्नात्वाचभुक्त्वाचगत्वाचैवदिवास्त्रि
यम् ९१ ॥

जिसको झूठमूठ दोष लगाया गयाहो वह कृच्छ्र प्राजापत्य करे व अग्निदेव का पुरोडाश (हविष्य) बनाकर यज्ञकरे अथवा वायुदेवता के पशुसेयज्ञकरे ८७ बड़े लोगों की आज्ञा से विनाही जो भाईकी स्त्री में गमन करता है वह चान्द्रायण व्रत करे और रजस्वला स्त्री में गमन करे तो तीनदिन उपवास करे घी खावे तो शुद्ध होता है ८८ जो व्रात्य (पतितसावित्री) को यज्ञ करावे वहतीन कृच्छ्रव्रतकरे और किसीका अभिचार (कष्टदेने व मारने का उद्योग)करे तो भी तीन कृच्छ्रकरे जो अनध्याय में व शूद्रके सामने वेदपढ़े वह और जो अपनी शरण आये को निकालदे वहभी एक वर्षभर यवका भातखाकर व्रत कियाकरे तो शुद्ध होताहै ८९ यदि किसी निषिद्ध मनुष्य का दान ग्रहणकरे तो ब्रह्मचर्य्य धारण करके महीनाभर दूधपीता और गायत्री जपता हुआ गोशाला में वासकरे तो शुद्ध होता है ९० इत्युपातक प्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ जिस रथमें गदहे व ऊंट नधेहों उसपरचढ़के कहीं जावे अथवा नंगाहोकर नहावे व भोजनकरे या दिनको अपनी स्त्री के पास जावे तो जलमें स्नानकरके प्राणायामकरेतो शुद्ध होताहै ९१ ॥

उपस्थानन्ततःकुर्य्यात्समासिंचत्वनेनतु ॥ मधुमांस
शनेकार्यःकृच्छ्रःशेषव्रतानिच ८२ प्रतिकूलंगुरोःकृत्वाप्रस
दैवविशुद्धयति ॥ कृच्छ्रत्रयंगुरुःकुर्य्यान्म्रियतेप्रहितोयदि
८३ क्रियमाणोपकारेतुमृतेविप्रेनपातकम् ॥ विपाकेगो
वृषाणाञ्चभेषजाग्निक्रियासुच ८४ मिथ्याभिशंसिनोदोषो
द्विःसमोभूतवादिनः ॥ मिथ्याभिशस्तदोषञ्चसमादत्तेमृषा
वदन् ८५ महापापोपपापाभ्यांयोभिशंसेन्मृषापरम् ॥ अ
ब्भक्षोमासमासीतसजापीनियतेन्द्रियः ८६ ॥

समासिंचतु, इसमन्त्र से अग्निका उपस्थानकरे जो ब्रह्मचारी मधु व मांसखालेवे तो कृच्छ्रव्रत उसके प्रायश्चित्त के लिये करे और फिर जो उसके व्रत शेषरहेहों सो समाप्त करे ८२ गुरु की इच्छा के विरुद्ध कोई काम ब्रह्मचारी करे तो गुरूको प्रसन्न करा नेही से शुद्ध होता है और जो गुरू किसी ऐसे काम को भेजे कि ब्रह्मचारी मरजाय तो गुरू तीनकृच्छ्र व्रतकरे ८३ यदि कोई औषधिदेने व अन्न खिलाने आदि से ब्राह्मण और गौका उपकारकर रहाहो संयोग से वह गौ व ब्राह्मणमरजाय तो औषधिआदि हित वस्तु देनेवाले को पाप नहींलगता ८४ जो किसी को मिथ्याही दोष लगावे तो उसको दूना दोष लगता है और सत्य भी किसी का दोषहो उस को वे पूछे आपसे आप कहता फिरे तो उतनाही दोष उसको लगता है जो झूठमूठ दोषलगाताहै वह केवल दूना दोषही नहीं पाता किन्तु जिसको दोष लगाता है उसने जो पाप कियेहों सब उसको लगते हैं ८५ महापातक और उपपातकका दोष जो झूठ मूठ दूसरेको लगावे वह इन्द्रियों का संयमकरके महीने भरतक जप करतारहे और केवल जल पीके रहे अन्न न खावे ८६ ॥

अभिशस्तोमृषाकृच्छ्रञ्चरेदाग्नेयमेवच ॥ निर्वपेत्तुपुरो
डाशंवायव्यम्पशुमेववा ८७ अनियुक्तोभ्रातृजायांगच्छं
श्चान्द्रायणंचरेत् ॥ त्रिरात्रान्तेघृतम्प्राश्यगतोदक्याविशु
ध्यति ८८ त्रीन्कृच्छ्रानाचरेद्व्रात्ययाजकोभिचरन्नपि ॥
वेदप्लावीयवान्यब्दन्त्यक्त्वाचशरणागतम् ८९ गोष्ठेवस
न्ब्रह्मचारी मासमेकम्पयोव्रतः ॥ गायत्रीजाप्यनिरतःशु
ध्यतेसत्प्रतिग्रहात् ९० प्राणायामीजलेस्नात्वाखरया
नोष्ट्रयानगः ॥ नग्नःस्नात्वाचभुक्त्वाचगत्वाचैवदिवास्त्रि
यम् ९१ ॥

जिसको झूठमूठ दोष लगाया गयाहो वह कृच्छ्र प्राजापत्य करे व अग्निदेव का पुरोडाश (हविष्य) बनाकर यज्ञकरे अथवा वायुदेवता के पशुसेयज्ञकरे ८७ बड़े लोगों की आज्ञा से विनाही जो भाईकी स्त्री में गमन करता है वह चान्द्रायण व्रत करे और रजस्वला स्त्री में गमन करे तो तीनदिन उपवास करे घी खावे तो शुद्ध होता है ८८ जो व्रात्य (पतितसावित्री) को यज्ञ करावे वहतीन कृच्छ्रव्रतकरे और किसीका अभिचार (कष्टदेने व मारने का उद्योग)करे तो भी तीन कृच्छ्रकरे जो अनध्याय में व शूद्रके सामने वेदपढ़े वह और जो अपनी शरण आये को निकालदे वहभी एक वर्षभर यवका भातखाकर व्रत कियाकरे तो शुद्ध होताहै ८९ यदि किसी निषिद्ध मनुष्य का दान ग्रहणकरे तो ब्रह्मचर्य्य धारण करके महीनाभर दूधपीता और गायत्री जपता हुआ गोशाला में वासकरे तो शुद्ध होता है ९० इत्युपातक प्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ जिस रथमें गदहे व ऊंट नयेहों उसपरचढ़के कहीं जावे अथवा नंगाहोकर नहावे व भोजनकरे या दिनको अपनी स्त्री के पास जावे तो जलमें स्नानकरके प्राणायामकरेतो शुद्ध होताहै ९१ ॥

गुरुंतुंकृत्यहुंकृत्य विप्रन्निर्जित्यवादतः ॥ बध्वावावे
ससाक्षिप्रम्प्रसाद्योपवसेद्दिनम् ९२ विप्रदण्डोद्यमेकृच्छ्
स्त्वतिकृच्छ्रोनिपातने ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रोसृक्पाते कृच्छ्रो
भ्यन्तरशोणिते ९३ देशंकालंवयःशक्तिम्पापंचावेक्ष्ययत्न
तः ॥ प्रायश्चित्तम्प्रकल्प्यंस्याद्यत्रचोक्तानन्निष्कृतिः ९४
दासीकुम्भम्बहिर्ग्रामान्निनयेरन्स्वबान्धवाः ॥ पतितस्यव
हिःकुर्युः सर्वकार्येषुचैवतम् ९५ चरितंव्रतआयातेनिनयेर
न्नवंघटम् ॥ जुगुप्सेरन्नवाप्येनंसंविशेयुश्चसर्वशः ९६ ॥

गुरु (अपने से बड़ा पिता आदि) को तुकारी मारे, ब्राह्मण को क्रोधसे हुंकर (डाटदे) अथवा वस्त्र गले में डाल ब्राह्मणको बांधे तो झटपट उसके पांवपर गिरके प्रसन्नकरावे और दिनभर उपवासकरे तो शुद्ध होताहै ९२ ब्राह्मणको मारनेके लिये लाठी आदि उठावे तो कृच्छ्रव्रत करे चलादेवे तो अतिकृच्छ्रव्रतकरे जो लहू निकाले तो कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतकरे और भीतर लहू होआवे तो भी कृच्छ्रव्रत करे ९३ इतिप्रकीर्णकम् ॥ जिस पापका प्रायश्चित्त नहीं कहाहै उस पापको देखना और देशकालको देखना फिर उसके अनुसार प्रायश्चित्त की कल्पना करलेनी ९४ जिसको पापलगाहो और वह अपनी जातिके लोगों के कहनेपर भी प्रायश्चित्त नकरे तो उसके जाति और बान्धवलोग मिलके उसके नामका जल से भराहुआ घड़ा दासीके हाथ गांवसे बाहर निकालदेवे उसपतितको फिर हरएकप्रकारसे व्यवहारसे अलगरक्खें ९५ यदि घड़ा निकालनेपर कुछ सूझे और प्रायश्चित्तकरके फिर अपने जातिभाइयों के निकटआवे तो वे लोग इकट्ठेहोकर उसके साथ नये घड़े में पानीमँगाके पीवें और उसकी निन्दाभी कभी न करें और सब व्यवहारमें उसका संग्रह रक्खें ९६ ॥

पतितानामेषएवविधिःस्त्रीणाम्प्रकीर्तितः ॥ वासोगृहा
न्तिकन्देयमन्नंवासःसरक्षणम् ९७ नीचाभिगमनंगर्भपातः
नर्भर्तृहिंसनम् ॥ विशेषपतनीयानिस्त्रीणामेतान्यपिध्रुवम्
९८ शरणागतबालस्त्रीहिंसकान्संविशेन्नतु॥ चीर्णव्रतानपि
संतःकृतघ्नसहितानिमान् ९९ घटेपवर्जितेज्ञातिमध्यस्थोय
वसंगवाम्॥प्रदद्यात्प्रथमंगोभिःसत्कृतस्यहिसत्क्रिया ३००
विख्यातदोषःकुर्वीतपर्षदोनुमतंव्रतम् ॥ अनभिख्यातदोष
स्तुरहस्यंव्रतमाचरेत् १ त्रिरात्रोपोषितोजप्त्वाब्रह्महात्वघ
मर्षणम्॥ अंतर्जलेविशुध्येतदत्त्वागांचपयस्विनीम् २ ॥

यहीविधि पतितस्त्रियोंकी भीहै केवल इतनाविशेषहै कि अपने घरकेनिकट कोईझोपड़ी उनकेरहनेकोलगादेनी और अन्नवस्त्रसाधारणरीतिसे दियाकरनातथा इसबातकी रक्षाभीरक्खे कि वह अभिचारआदि न करनेपावें ९७ नीचजातिकेपुरुषके पासजाना गर्भ गिराना और अपनेपतिका वधकरना इनसबकामोंसे विशेष करके स्त्रीपतितहोतीहै और महापातक आदिसे भी पतितहोतीहै ९८ शरणागतबालक और स्त्री इनकोमारनेवालाजो प्रायश्चित्तकर भी डाले तोउसकेसाथखानपानका व्यवहारनकरना यहीरीतिकृतघ्नी कीभीसमझना ९९ जिसकाघड़ा निकालागयाहो वह फिर प्रायश्चित्त करके जातिमेंमिलनेआयाहो तो पहिलेसबजातिबन्धुओंकेबीच अपनेहाथसेगौकोयवस(कोमलघास)खिलावे तो जातिकेलोग भी उसका सत्कारकरें नहींतोनहीं ३०० जिसकेपापको जाति व गांवके लोगजानगयेहोंतो वहपर्षत्केकहनेकेअनुसार प्रायश्चित्तकरेऔरजिसकाकोई न जानतेहों वहरहस्यव्रतकरनेसेही शुद्धहोताहै १ इतिप्रकशिप्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ ब्रह्मघातीकारहस्यव्रतयहहै कितीनदिन उपवासकरके जलके भीतर अघमर्षणमंत्र तीनवारजपे और दूध देनेवाली गौ ब्राह्मण को दे तो शुद्धहोताहै २ ॥

लोमभ्यःस्वाहेत्यथवा दिवसम्मारुताशनः ॥ जलेरि
त्वाग्निजुहुयाच्चत्वारिंशतूघृताहुतीः ३ त्रिरात्रोपोषितं
त्वाकूष्माण्डीभिर्घृतंशुचिः ॥ ब्राह्मणःस्वर्णहारीतुरुद्रजापी
जलेस्थितः ४ सहस्रशीर्षाजापीतुमुच्यतेगुरुतल्पगः ॥
गौर्देयाकर्मणोस्यान्ते पृथगेभिःपयस्विनी ५ प्राणायामश
तंकार्य्यंसर्वपापापनुत्तये ॥ उपपातकजातानामनादिष्टस्य
चैवहि ६ ओंकाराभिष्टुतःसोमसलिलम्पावनम्पिबेत् ॥ कृ
त्वातुरेतोविण्मूत्रप्राशनन्तुद्विजोत्तमः ७ निशायांवादिवावा
पियदज्ञानकृतम्भवेत् ॥ त्रैकाल्यसंध्याकरणात्तत्सर्वंविप्र
णश्यति ८ ॥

अथवा एकदिनरातभूखारहे और उसीरातभर जलमेंखड़ारहे प्रातःकालजलसे निकल(लोमभ्यःस्वाहा) इन आठोंमन्त्रोंसे चालीस आहुति(अर्थात् हरएकसे पांचआहुति)घीकी होमकरे ३ सुरापीहो तो तीनदिन उपवास करे और(कूष्माण्डी नाम) ऋचासे चालिसआहुति आगमें दे तो शुद्धहोताहै और ब्राह्मणका सोना चुरावे तो तीनदिन उपवासकरके जलमें खड़ाहो रुद्रीपाठकरनेसे शुद्धहोताहै ४ गुरुपत्नीमें गमनकरनेवाला तीनउपवासकेअनन्तर (सहस्रशीर्षा)मंत्रोंको जपनेसेशुद्धहोताहै और इन सबोंको अपने अपने व्रतकरनेके बाद एक वृषदेनेवाली गौ देनी चाहिये ॥ इति महापातकरहस्यप्रायश्चित्तप्रकरणम् ५ ॥ तच उपपातक और जिनका प्रायश्चित्त नहीं कहाहै ऐसे पापोंकी शुद्धि सौप्राणायामकरनेसे होतीहै ६ यदि ब्राह्मण भूलसे रेत (वीर्य)विष्टा और मूत्र मुंहमें डालले तो गलेभर जलमें खड़ाहोकर महाव्याहृति पढ़केसो मलताका जलपीवे तो शुद्धहोताहै ७ रात व दिनमें जो उपपातकपाप अज्ञानसे होताहै वह तीनों कालकी सन्ध्याकरने से दूर होजाता है ८ ॥

शुक्रियारण्यकजपोगायत्र्याश्चविशेषतः ॥ सर्वपापह
राह्येतेरुद्रैकादशिनीयथा ९ यत्रयत्रचसंकीर्णमात्मानम्म
न्यतेद्विजः ॥ तत्रतत्रतिलैर्होमोगायत्र्याश्चविशेषतः १०
वेदाभ्यासरतंक्षान्तम्पंचयज्ञक्रियापरम् ॥ नस्पृशन्तीहपा
पानिमहापातकजान्यपि ११ वायुभक्षोदिवातिष्ठन्रात्रिं
नीत्वाप्सुसूर्यदृक् ॥ जप्त्वासहस्रंगायत्र्याःशुद्धेद्ब्रह्मवधादृ
ते १२ ब्रह्मचर्यंदयाक्षान्तिर्दानंसत्यमकल्पता ॥ अहिंसा
स्तेयमाधुर्य्यन्दमश्चेतियमाःस्मृताः १३ स्नानम्मौनोपवा
सेज्यास्वाध्यायोपस्थनिग्रहाः ॥ नियमागुरुशुश्रूषाशौचा
क्रोधोप्रमादतः १४ ॥

शुक्रिय, आरण्यक और विशेषसे गायत्री तथा ग्यारहोंप्रकार के रुद्र अनुवाक इन सब मंत्रों का जप सब पापों के प्रायश्चित्त में करना चाहिये ६ जहां जहां (जब जब) द्विज अपनेको पापी समझे तहां तहां तिल और गायत्री से होमकरे और तिलदान करे फिर शुद्ध होजाता है १० वेद के अभ्यास में रत, क्षमायुक्त और बड़ी यज्ञ क्रिया करनेवाले द्विजको महापातक के पाप भी नहीं लगते ११ दिनभर उपवासकर रहे और रातजल में खड़ा होकर बितावे जब सूर्य्य देख पड़े तो हज़ार गायत्री का जप करे इससे ब्रह्महत्या को छोड़ और सब पाप दूरहोजाते हैं १२ इतिरहस्यप्रायश्चित्तप्रकरणम् ॥ ब्रह्मचर्य (सकल इन्द्रियों का संयम) दयाक्षांति (सहना) दानदेना, सच बोलना, कुटिलता न रखनी, हिंसा और चोरी न करनी, मधुरवाणी बोलना और ज्ञानेन्द्रियोंका दमनकरना ये यम कहलाते हैं १३ स्नानकरना, मौनरहना, उपवासकरना, देवपूजन, वेदपढ़ना, लिंगका निग्रह रखना, गुरुकीसेवा, शुद्धरहना, और क्रोध तथा प्रमाद न करना ये सब नियम कहेजाते हैं १४ ॥

गोमूत्रंगोमयंक्षीरन्दधिसर्पिःकुशोदकम् ॥ जग्ध्वापरे
ह्युरुपवसेत्कृच्छ्रंसान्तपनम्परम् १५ पृथक्सान्तपनद्रव्यैः
षडहःसोपवासकः ॥ सप्ताहेनतुकृच्छ्रोयम्महासान्तपनं
स्मृतः १६ पर्णोदुम्बरराजीवबिल्वपत्रकुशोदकैः ॥ प्रत्ये
कम्प्रत्यहंपीतैःपर्णकृच्छ्रउदाहृतः १७ तप्तक्षीरघृताम्बूना
मेकैकम्प्रत्यहम्पिबेत्॥एकरात्रोपवासश्चतप्तकृच्छ्रउदाहृतः
१८ एकभुक्तेननक्तेनतथैवायाचितेनच ॥ उपवासेनचैवायं
पादकृच्छ्रःप्रकीर्त्तितः १९ यथाकथंचित्त्रिगुणःप्राजापत्यो
यमुच्यते॥ अयमेवातिकृच्छ्रःस्यात्पाणिपूरान्नभोजनः२०॥

एकदिन गौकामूत्र,गोबर,दूध,दही,घी और कुशका जलपीकेरहे और दूसरे दिनशुद्धउपवासकरे तो वहसांतपनकृच्छ्रनामव्रतकहाताहै १५ जो सांतपनमें गोमूत्रआदि छः वस्तुकहे हैं उनहरएकसे एकएक दिनकाटे और सातवें दिन शुद्ध उपवासकरे तो यहसात दिनमें महासान्तपननाम कृच्छ्रहोता है १६ पलाश, उदुम्बर (गूलर)कमल और बिल्वपत्र इनप्रत्येकके पत्तों को एकएकदिन पानी में काढ़के*उसजलकोपीवे और पांचवें दिन कुशका जल पीकर रहे तो पर्णकृच्छ्रनाम व्रतहोता है १७ दूध, घी और पानी इन हर एकको तपाकर एकएक दिनपीवे और चौथे दिन शुद्धउपवासकरे तो वह तप्तकृच्छ्रव्रत कहलाताहै १८ एक दिन एकहीबार मध्याह्नमें भोजनकरे दूसरे दिन रातको तीसरे दिन विना मांगे मिले तो भोजनकरे और चौथे दिन शुद्ध उपवासकरे तो यहपादकृच्छ्र कहलाताहै १९ यहीपादकृच्छ्र(पूर्वोक्तएकभक्तनक्त और अयाचित इनतीनप्रकारोंमेंसे) चाहे जिस किसी तौर तिगुना (बारह दिन तक)करे तो प्राजापत्य कहलाताहै और यहीव्रत पहिलेतीन दिनों को एकमूठी अन्नखाकर बितावे तो अतिकृच्छ्रकहलाता है २० ॥

* अवटकर ॥

कृच्छ्रातिकृच्छ्रःपयसादिवसानेकविंशतिम् ॥ द्वादशा
हेप्युपवासेनपराकःपरिकीर्त्तितः २१ पिण्याकाचामतक्रांबुस
क्तूनाम्प्रतिवासरम् ॥ एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्रःसौम्योय
मुच्यते २२ एषांत्रिरात्रमभ्यासादेकैकस्ययथाक्रमम् ॥ तु
लापुरुषइत्येषज्ञेयःपंचदशाहिकः २३ तिथिवृद्ध्याचरेत्पि
ण्डान्शुक्लेशिख्यण्डसम्मितान् ॥ एकैकंह्रासयेत्कृष्णेपिं
डंचान्द्रायणंचरन् २४ यथाकथंचित्पिण्डानांचत्वारिंशच्छ
तद्वयम् ॥ मासेनैवोपभुंजीतचान्द्रायणमथापरम् २५ कु
र्यात्त्रिषवणस्नायीकृच्छ्रंचान्द्रायणन्तथा ॥ पवित्राणिजपे
त्पिण्डान्गायत्र्याचाभिमन्त्रयेत् २६ ॥

खालीदूधपीकर इक्कीसदिनवितावे तो कृच्छ्रातिकृच्छ्र व्रतकह-
लाताहै और बारहदिन उपवासकरने से पराकव्रत होताहै २१
पीना(तिलकीखली)आचाम(मांड़—भातकापसेव)तक्र(माठा—छां-
छ—लस्सी)जल और सत्तू इन हरएकको एकएकदिनपीके पांचदि-
न और छठांदिन उपवाससे वितावे तो सौम्यकृच्छ्रव्रतहोताहै२२
पीना आदि पांचोंचीज़ों में हरएकको क्रमसे तीन तीन दिनखावे
तो यह पन्द्रहदिनका तुलापुरुष नामव्रतहोताहै २३ चान्द्रायणव्र-
तका यह विधान है कि शुक्लपक्षमें जैसे जैसे तिथिबढ़तीजावें उ-
तनाहीं अन्नकाग्रास बढ़ाते जाना और कृष्णपक्षमें एकएकघटाते
जाना और ग्रासका प्रमाण मयूर के अण्डाके समान रखना २४
अथवा चाहे जिसप्रकार महीना भरमें दोसौ चालीस ग्रास भोज-
नकरे तो भी चांद्रायण व्रतहोजाता है २५ चांद्रायण वा कृच्छ्रव्र-
तकरे तो तीनोंकाल स्नानकरे पवित्र मंत्रोंका जप करे और जो
ग्रास भोजन करनेहों उन्हें गायत्रीसे अभिमंत्रित करलेना २६ ॥

अनादिष्टेषुपापेषुशुद्धिश्चान्द्रायणेनतु ॥ धर्म्मार्थंयश्च
रेदेतच्चन्द्रस्यैतिसलोकताम् २७ कृच्छ्रकृद्धर्म्मकामस्तु
हतींश्रियमाप्नुयात् ॥ तथागुरुक्रतुफलम्प्राप्नोतिसुसमा
तः २८ श्रुत्वैतान्पयोधर्म्मान्याज्ञवल्केनभाषितान् ॥ इ
मूचुर्म्महात्मानंयोगीन्द्रममितौजसम् २९ यइदन्धार
ष्यन्तिधर्मशास्त्रमतन्द्रिताः॥इहलोकेयशःप्राप्यतेयास्यन्ति
त्रिविष्टम्३० विद्यार्थीप्राप्नुयाद्विद्यान्धनकामोधनन्तथा॥
आयुःकामस्तथाचायुःश्रीकामोमहतींश्रियम्३१श्लोकत्रयं
मपिह्यस्माद्यःश्राद्धेश्रावयिष्यति॥पितॄणान्तस्यतृप्तिःस्या
दक्षय्यानात्रसंशयः ३२ ब्राह्मणःपात्रतांयातिक्षत्रियोविज
यीभवेत् ॥ वैश्यश्चधान्यधनवानस्यशास्त्रस्यधारणात्३३

जो पापनहीं गिनायेहैं उनमें चांद्रायणकरनेसे शुद्धताहोती है और जो धर्म्मके अर्थ इसव्रतको करताहै वह चंद्रलोकमें प्राप्तहोता है २७ जो धर्म्मकी कामना से बड़ासावधानहोकर कृच्छ्रव्रतकरता है उसके बड़ी लक्ष्मी आदि विभूति होतीहैं जिसप्रकार राजसूय आदि बड़ीबड़ी यज्ञोंकाफल अवश्यहोताहै तैसा इनकाभी समझना २८ याज्ञवल्क्य मुनि के मुखसे इन धर्म्मोंको सुन ऋषिलोग उस महात्मा बड़ेतजस्वी और योगियोंमें श्रेष्ठसे फिर बोले२९कि जो लोग आलस छोड़ इस धर्मशास्त्रको धारणकरेंगे वे इसलोक में यश और अन्त में स्वर्गपावेंगे ३० विद्यार्थी विद्यापाता, धनकी इच्छा करनेवाला धनपाता है,आयुके चाहने वालोंकी आयु बढ़ती है और जो श्री(शोभाआदि)चाहे तो उसकी श्री बढ़ती है३१जो श्राद्ध समय इसमेंसे तीनश्लोक भी सुनावेगा तो उसके पितरों कोअक्षय तृप्तिप्राप्तहोतीहै इसमें सन्देहनहीं३२ब्राह्मणइसशास्त्र को पढ़े तो पात्र होजाता है क्षत्री विजयी होता और वैश्य भी धनधान्य से युक्त होता है ३३ ॥

इदंश्रावयेद्विद्वान्द्विजान्पर्वसुपर्वसु ॥ अश्वमेधफलंतस्यतद्भावाननुमन्यताम् ३४ श्रुत्वैतद्याज्ञवल्क्योपि प्रीतात्मामुनिभाषितम् ॥ एवमस्त्वितिहोवाचनमस्कृत्वा स्वयम्भुवे ३५ ॥

इतिश्रीयाज्ञवल्क्यीयेधर्म्मशास्त्रेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

जो पंडित इस धर्मशास्त्र को हर एक पर्व में द्विजों को सुनावे उसको अश्वमेध यज्ञका फल होता है इन सब बातोंकी भी अनुमति आपकरें ३४ ऐसा मुनियोंका कहना सुनकर याज्ञवल्क्यजी ने भी प्रसन्न हो और परमात्मा को नमस्कार करके कहा कि ऐसाही होवे ३५ ॥

इतिश्रीयज्ञावल्क्यस्मृतिटीकायांपंचनदमहाविद्यालयीयप्राच्यविद्यापाठशालायाम्मुख्यसंस्कृताध्यापकेनपण्डितगुरुप्रसादशर्मणाहिन्दीभाषयाविरचितायाम्मिताक्षरानुयायिन्यांप्रायश्चित्ताध्यायस्तृतीयस्संपूर्णतामगात् ३ ॥ शुभम् ॥

फलस्तुतिः ॥

यस्यनामसमुच्चार्य्यमहापापपराभवम् ॥ कुरुतेपापसक्तोपिशंकरन्तन्नमाम्यहम् १ पापानांविविधानान्तुप्रायश्चित्तान्यनेकशः ॥ अध्यायेऽस्मिंस्तृतीयेऽसौब्रवीति श्रीमुनीश्वरः २ ॥

समाप्ताचेयंयाज्ञवल्क्यसंहिता ॥

मुंशी नवलकिशोर प्रेस लखनऊ में छपी
अक्टूबर सन् १८८८ ई० ॥

अष्टादशस्मृतियोंका इश्तहार ॥

आहा यह वही भारतवर्षहै जिसमें कि लोग धर्म्मही को अपना सर्वस्व समझते थे सबकामों को धर्मार्थ ही करते थे और अपने संपूर्ण कालको इसीमें व्यतीत करते थे परन्तु आज उसी भारतवर्षमें कराल काल की कुटिल गतिसे प्रायः सम्पूर्ण सनातन धर्म्मावलंबी अपने अपने वर्णाश्रम धर्मोंको धीरे धीरे छोड़ते चले जातेहैं और इस नवीन शिक्षाके प्रबल प्रतापसे अपने को सर्वज्ञमानकर विनाजाने समझे अनेकअनेक प्रकार की कुतर्कणा करते हैं जो विचार पूर्व्वक देखा जाय तो इसमें उन विचारों का कोई दोष नहीं है क्योंकि हमारे संपूर्ण धर्म्म ग्रन्थ संस्कृत भाषाही में हैं और संस्कृत के पढ़ने पढ़ाने वाले बहुतही कम हैं इस लिये उन विचारों को संस्कृतज्ञ लोगों का बहुधा साथभी नहीं मिलता जिस्से कि वह अपने धर्म्मकी बातोंको सुनभी सकें और यह स्वाभाविक बातहै कि विना देखे सुने किसी पदार्थ के गुणदोष को नहीं जानसक्ता बस इसी से हमारे देश के नौ जवान लोग प्रायः अपने पुरखों के संचित किये हुए अमूल्य धर्मरूपी रत्नको काच के समान तुच्छ समझकर गंवाय रहे हैं अब ऐसे महाशयों के लिये धर्म्म शिक्षाका सीधे से सीधा उपाय विचारने से बहुधा यही मालूम पड़ा कि जो हमारे धर्म शास्त्र के ग्रन्थोंका अनुवाद सकल गुणआगरी नागरी भाषा में कियाजाय तो यह लोग बहुत सरलता पूर्व्वक

देवनागरी अक्षरों के जाननेहीमात्र से धर्म्म ग्रंथों को अच्छे प्रकार से पढ़कर अपने वर्णाश्रम धर्म्म को भलीभांति जान जायँगे इत्यादि अनेक कारणों को शोचकर और अपने धर्म को अत्यन्त शोचनेके योग्य दशामें देखकर परमकारुणिक धर्मधुरीण भार्गव वंशावतंस मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) ने सकल लोकोपकारार्थ अपनेही व्ययसे धर्मशास्त्रज्ञ पण्डितवर मिहिरचन्द्र मेनेजर भारतबंधु प्रेस अलीगढ़ के द्वारा अष्टादश स्मृतियोंका अत्यन्त सरल हिन्दी भाषामें प्रति श्लोकका यथार्थ अनुवाद कराकर सुंदर कागज़ तथा श्रेष्ठशीशे के अक्षरों में मूलसहित मुद्रित कराया है इन स्मृतियोंके कर्ता अत्रि- विष्णु-हारीत-उशना-अंगिरा यम- आपस्तंब- संवर्त--कात्यायन-बृहस्पति- पाराशर- व्यास- शंख- लिखित- दक्ष-गौतम--शातातप और वशिष्ठ यह १८ महर्षि हैं इन स्मृतियोंमें ब्राह्मणादि चारों वर्णोंकेधर्म- ब्रह्मचर्य्यादि चारोंआश्रमोंके धर्म- नित्य नैमित्तिक धर्म कृच्छ्र चान्द्रायणादि व्रत-श्राद्धादि कर्मोंके योग्य ब्राह्मण- प्राणायामादि विधि- गुरुसेवा की विधि- पुंसवन से लेकर अन्त्येष्टि पर्य्यंत सम्पूर्ण संस्कार- आठो प्रकार के विवाह- सतयुग को आदि लेकर चारों युगोंके अलग अलग धर्म- चारों वर्णोंका आचार-स्वधर्मनिष्ठ ब्राह्मणादिकी स्तुति और स्वधर्म रहितोंकी निंदातथा सम्पूर्णपातकों केजुदेजुदे प्रायश्चित्त इत्यादि अनेक धर्म वर्णितहैं यहधर्म पुस्तक सम्पूर्ण सनातनधर्म्मावलंबियोंको अपनेअपने घरमें अवश्यही

को अपने अपने घरमें अवश्यही रखनी चाहिये जिस्से कि वह संपूर्ण सन्देहों से निवृत्त होकर अपने अपने धर्मोंको सरलतासे जानसकैं इसकी नौछावर सबको सुगमताके लिये केवल २॥) इतनीही नियतकीहै॥

सफह ६४२ अर्थात् ५८ जुज़ ७ वर्क की २॥)

अलावा महसूल डाक

इसके सिवाय सम्पूर्ण सनातन धर्म्मावलंबियों को यहभी विदित कराया जाता है कि उक्त मुंशीजीने लोकके उपकारार्थ और हिन्दी भाषा की उन्नतिके लिये अनेक शास्त्रज्ञ विद्वानों के द्वारा मनुस्मृति ५४ जुज़ ६ वर्क की ०५) याज्ञवल्क्यस्मृति १० जुज़७ वर्ककी० ।≈) मिताक्षरा तीनोंकाण्ड१२७जुज़१ वर्ककी ०१०) और भिन्न भिन्न काण्ड भी मिलते हैं अर्थात् आचार काण्ड२० जुज़ १ वर्ककी०३) व्योहारकाण्ड५५जुज़४ वर्क की०५।) प्रायश्चित्त काण्ड५१ जुज़४वर्क की०५) और निर्णयसिन्धुमयटीकाभाषाकी५) आदि धर्मशास्त्र ग्रंथों का भी बहुतसे व्ययसे अनुवादकराकर पुष्टकागज़ तथा सुन्दर शीशाकाक्षरोंमें मूलसहित मुद्रित कराया है यह सबग्रंथ मतबअ अवध अखबार लखनऊमें मिलते हैं जिनमहाशयों को इनके मूल्यादि का निश्चय करना हो वह केवल ≈) का टिकट भेजकर इसमतबे की फेहरिस्त मँगाकर देखलें॥

मुंशी नवलकिशोर अवध समाचार सम्पादक
हजरतगंज लखनऊ

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकट हो कि यह पुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति शास्त्रादि सारभूत परम रहस्य गीता शास्त्र का सर्व विद्यानिधान सौशील्य विनयोदार्य सत्यसगर शौर्यादि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अ न को परमें अधिकारी जानके हृदय जनित मोहनाशार्थ सब प्रकार अपार रुसर निस्तारक भगवद्भक्ति मार्ग दृष्टिगोचर कराया है वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत् वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत र अपनी बुद्धि से पार नहीं पासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठन पाठन करने की सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्राय को जान सक्ते हैं—और यह प्रत्यक्षही है कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छे प्रकार बुद्धि मे न भासित हो तबतक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्त पादाब्ज रसिकजनो के चित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्वविद्याविलासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुंशीनवलकिशोर जी सी, आई, ई ने बहुतसा धन व्ययकर फर्रुखाबाद निवासि पण्डित उमादत्त जीसे इस मनोरञ्जन वेदवेदान्त शास्त्रोपरिपुस्तक को श्रीशंकराचार्य निर्मित भाष्यानुसार संस्कृत से सरल देशभाषा में तिलक रचा नवलभाष्य आख्य मे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसको भाषामात्र के जाननेवाले पुरुषभी जानसक्तेहैं॥

जब छपने का समय आया तो बहुत से विद्वज्जन महात्माओं की सम्मति से यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतर उत्तमता उस समयपर होगी कि इस शंकराचार्य्यकृत भाष्य भाषा के साथ और इस ग्रंथ के टीकाकारों की टीका भी जितनी मिले शामिल कराजावें जिस से उन टीकाकारों के अभिप्राय का भी बोध होवे इस कारण से श्रीस्वामी शंकराचार्यजीको शंकरभाष्य का तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोक सहित इस पुस्तक में उपस्थित है॥

VIDYA BHAVAN
S N 191